।। जय श्री राम ।।

# दिव्य प्रवचन

## पार्ट-2

संकलन

राकेश अग्रवाल

ऑस्ट्रेलिया


## स्वामी पथिक जी महाराज

# — सावधान —

ऐसा संयोग बार–बार नहीं आयेगा।
इसे जो खोयेगा वह अन्त में पछतायेगा।।

देखते–देखते जायेगी जवानी सबकी।
बुढ़ापा आयेगा वह सभी को सतायेगा।।

बुराई छोड़ के हरदम भलाई करना है।
यहाँ जैसा करेगा वैसा वहाँ पायेगा।।

उन भरे हाथों का क्या मूल्य है इस दुनिया में।
या तो छिन जायेगा या छोड़ के ही जायेगा।।

जो कि तुम लेते हो वह दूसरों को देते रहो।
लेके जो देगा नहीं बोझ ही बढ़ायेगा।।

सारा धन लेगा, कोई राजी या बेराजी से।
लोभ की बेड़ी से, कोई नहीं छुड़ायेगा।।

छूट जायेंगे सभी, अपने सगे सम्बन्धी।
मोह रह जायेगा, वह बाद में रुलायेगा।।

किसी भोगी को कहीं, शान्ति नहीं मिल सकती।
जो कि शीतल है, वही तपन को मिटायेगा।।

त्याग पायेगा जो सुख कामना, आशा, ममता।
पथिक आनन्द से नित प्रेम गीत गायेगा।।

*****

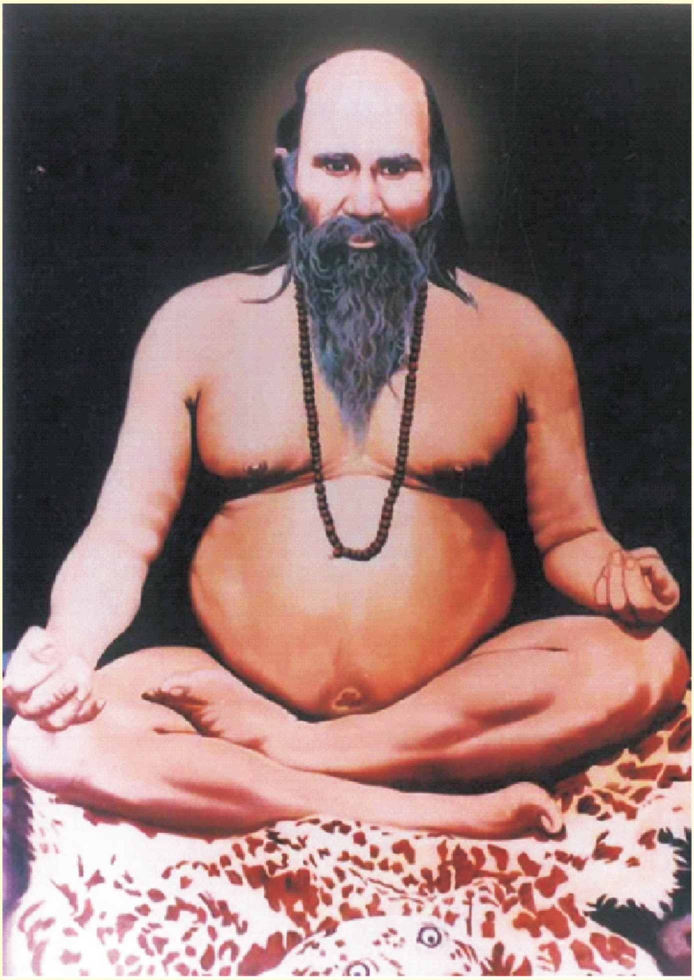

(संत पथिक जी के गुरूदेव)

(योगिराज श्री नागा निरंकारी जी महाराज)

आविर्भाव–गुरू नानकदेव के समकालीन सन्त

(विक्रम सम्वत–1526 से 1993)

ॐ

# साधु वेश में पथिक का संक्षिप्त परिचय

आपके शरीर का जन्म कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में हुआ था। बाल्यावस्था ननिहाल में व्यतीत हुई। वहीं पर कुछ शिक्षा प्राप्त की। आरम्भ से ही आपके हृदय में ग्रामीण देवी–देवताओं के प्रति श्रद्धा जागृति थी। विश्वास था कि मंदिर में अथवा देवी–देवताओं के दर्शन से विद्या प्राप्त होती है।

बाल्याकाल से ही किसीसे उपदेश सुने बिना भगवान के नाम जप स्मरण में विश्वास था। आरम्भ से ही एक परमहंस अवधूत सन्त में श्रद्धा हो गई जो नग्न ही घूमते थे। कोई वस्त्र न रखते थे। स्नान के पश्चात् खाक लगा के जल सुखाते थे उसे विभूति कहते थे।

पूर्व जन्मों में संस्कारों से प्रेरित होकर भूमि, भवन, धन से वैराग्य हो गया और सब कुछ छोड़कर साधुवेष में विचरण करते हुए अनेक कवितायें लिखीं। एकान्त सेवी होने के कारण पद्य के साथ–साथ गद्य लिखना आरम्भ हुआ। लगभग पचास पुस्तकें छपीं। व्याख्यान के प्रति गीत गान के प्रति श्रोताओं का आकर्षण बढ़ता ही गया। मान–प्रतिष्ठा, पूजा भेंट से सदा विरक्त रहकर विचरण करते हुए आध्यात्मिक विचारों का समाजव्यापी प्रचार बढ़ता गया लेकिन विचारों की प्रधानता से विचारक समुदाय की वृद्धि होती गई। परमहंस संत सद्गुरूदेव की आप पर बहुत कृपा थी। आरम्भ में ब्रह्मचारी नाम से प्रसिद्ध थे फिर ''साधुवेश में एक पथिक'' नाम से कल्याण में लेख छपते रहे। पथिकोद्गार के तीनो भाग एक ही में संकलित पुस्तक में 285 गीत तथा उसी गीत का सार संत वचन के रूप में प्रकाशित है। दो बार छप चुकी है।

**संकलन**

## पथिक परिवार

जो श्रद्धालु जन वेबसाइट पर इस पुस्तक तथा अन्य साहित्य को देखना पढ़ना चाहते हैं तो कृपया

**Website : www.pathikji.net**

का उपयोग कर सकते हैं।

# दिव्य प्रवचन

## भाग-२

संकलन

**पथिक परिवार**

जो श्रद्धालु जन वेबसाइट पर इस पुस्तक तथा अन्य साहित्य को देखना पढ़ना चाहते हैं तो कृपया

**Website : www.pathikji.net**

का उपयोग कर सकते हैं।

# प्रार्थना

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो,
जीवन निरर्थक जाने न पाये।
यह मन न जाने क्या क्या दिखाये,
कुछ बन न पाया मेरे बनाये।।
संसार में ही आसक्त रह कर,
दिनरात अपने मतलब की कह कर।
सुख के लिये लाखों दुःख सहकर,
ये दिन अभी तक यों ही बताये।।
ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ,
अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।
मैं आपको चाहूँ और पाऊँ,
संसार का कुछ भय रह न जाये।।
वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ,
अपने हृदय में सद्भाव भर लूँ।
नरतन है साधन भवसिन्धु तर लूँ,
ऐसा समय फिर आये न आये।।
हे प्रभु हमें निरभिमानी बना दो,
दारिद्र हर लो दानी बना दो।
आनन्दमय विज्ञानी बना दो,
मैं हूँ 'पथिक' यह आशा लगाये।।

# दिव्य प्रवचन

## भाग-२

।। श्री सद्गुरुवे नमः ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाजंन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

*अज्ञान रूपी तिमिर (काले) को अंधी आंखों में ज्ञान रूपी अंजन लगाकर जो अंधत्व को दूर करते हैं ऐसे गुरुदेव को नमस्कार है।*

*प्रभु ! ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से आपकी शरण आयी हूँ। भगवन! परमार्थ को प्रकाशित करने वाली अपनी वाणी द्वारा मेरे हृदय की ग्रंथि काट डालिये और अपने स्वरूप को प्रकाशित कीजिये।*

आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानरूपं निजबोध रूपम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि।।

# विषय-सूची


| क्र. सं. | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | संकट मोचन..... | 1 - 14 |
| 2. | संकट मोचनः<br>जिसका तुम्हे अभिमान है | 15 - 29 |
| 3. | संकट मोचनः<br>नित्य प्राप्त परम प्रेमास्पद परमेश्वर<br>की प्रिय आत्माओं | 30 - 41 |
| 4. | सोचो!<br>जिससे सब कुछ मिलता है<br>गुरु पूर्णिमा बाराबंकी | 42 - 65 |
| 5. | ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम (घर) | 66 - 88 |
| 6. | मुश्किलें होती हैं आसान<br>बड़ी मुश्किल से- | 89 - 93 |
| 7. | श्रृद्धा से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। | 94 - 96 |
| 8. | कुटी बांदा - 1984 | 97 - 100 |
| 9. | जो खोज से कहीं भी पाये नहीं जाते हैं<br>बहराइच | 101 - 104 |
| 10. | गुरु सन्देश | 105 - 106 |
| 11. | भजन | 107 - 108 |

।। ॐ ।।

# संकट मोचन

**चैतन्यं शाश्वतं शांतं व्योमातीतं निरंजनं।**
**नाद बिन्दु कलातीतं तस्मैं श्री गुरुवै नमः।।**

*** *** *** *** *** ***

**सर्वरुपमयी देवी, सर्वंदेवीमयं जगत।**
**अतोऽम विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरी।।**

अनेक रूपों में विद्यमान आत्मदेव को नमस्कार करते हुये सिर्फ कुछ शब्दों में आपको सावधान करना है - जैसे कि हमें सावधान किया गया- पहली सावधानी तो यह रखो, कि यह जो आपको अवसर मिला है ये मनोरंजन का स्थान नहीं है अगर आप सावधान न रहे तो मनोरंजन का ही स्थान ये बन जाता है। आप किस पर सम्मोहित होते हैं ? सर्कस में जाते हैं तो जानवरों को देखते हैं, किस प्रकार से बड़ा मन लग जाता है। सिनेमा में जाते हैं, वहाँ जो कुछ दृश्य देखते हैं, जो है ही नहीं, दिखाई देता है। आश्चर्य तो देखो और टिकट लगाके, यहाँ टिकट लग जाये तो इतनी भीड़ नहीं होगी लेकिन सिनेमा की भीड़ बढ़ती ही जाती है, कम होने वाली है नहीं। क्यों ? अच्छा लगता है। आपको आँखों से अच्छा लगा तो धोखा खा गये। आपको कानों से अच्छा लगा तो आप धोखा खा गये। आपको जो अच्छा लगा उसमें मन लग गया तब भी आप धोखा खा गये। आपकी बुद्धि जब तक अपनी ओर लौटी तो आप सावधान हो गये। आप जो कुछ चर्चा यहाँ सुनते हो सैकड़ों सभाओं में हमने देखा है- चर्चा करने वाले विद्वान जब ऐसे ढंग से चर्चा करते हैं। हमारे शास्त्रों में इसे कहीं कहीं दंभ कहा गया है  कि आप सम्मोहित हो जाते हैं, लेकिन यहाँ - जहाँ आपकी हित की भावना है। यहाँ आपको सुखी करने की चेष्टा नहीं है हित की चेष्टा है।

हित किसे कहते हैं और सुख किसे कहते हैं ? सुख तो उसे कहते हैं- जिसमें आपका मन लग जाये-शब्द में, रूप में, गंध में, स्वाद में। हित उसे कहते हैं- " जिससे तुम्हारे दोषों का नाश हो, गुणों का विकास हो, तुम्हारे भीतर ज्ञान का प्रकाश हो"। ये हित की परिभाषा याद रखना। यहाँ हित की भावना से ये सम्मेलन किया जा रहा है और हित कब होगा जब अपनी ओर लौटोगे। प्रवचन सुन करके मुग्ध होने वाले बालक भी होते हैं, युवक भी होते हैं, लेकिन, प्रवचन सुन करके अपनी ओर लौट करके अपना निरीक्षण करने वाले बिरले ही विद्वान होते हैं और सभी आप विद्वान और विदुषी देवियाँ हैं, अपनी ओर लौटो और देखो। बोलने वाले की ओर न देखो- बड़ा अच्छा बोले। पथिक जी बड़ा अच्छा बोले, परमानंदजी बड़ा अच्छा बोले, देवीजी बड़ा अच्छा बोलीं। अरे अच्छा बोली- तुम तो वैसे ही के वैसे ही रह गये। जो बोला गया तुम्हारे लिये बोला गया। तुम कहाँ हो? जहाँ हो वहाँ से देखो! देखना शुरू करो। कहाँ से देखो? आँखों से तो देखते ही हो सब लोग। आँखों से जो देखोगे आँखों से, याद रखना तुम कहते हो-महात्माओं के दर्शन करने गये थे, कुंभ में हजारों महात्माओं के दर्शन हुये। खूब याद रखना, आँखों से दर्शन हो ही नहीं सकते। जब हमारे परमगुरु भगवान कृष्ण संकेत करते हैं अर्जुन सरीखे महारथी विद्वान धर्मात्मा, पुण्यवान कौन ऐसा भाग्यवान होगा अर्जुन की भांति जिसकी सखा बन करके भगवान सहायता करें और उन अर्जुन से भगवान को कहना पड़ता है- **" विमूढ़ानानु पश्यन्ति, पश्यन्ति ज्ञान चक्षुषा"** इन आँखों से तुम महात्माओं के दर्शन न करोगे। महात्मा के वेष को देखोगे, शक्लों को देखोगे, आज जितनी अच्छी शक्ल होगी जितनी सजी हुई होगी उतना ही आप सम्मोहित हो जाओगे। क्या किया अपने साथ? यही हमने सैकड़ों सभाओं में देखा। सजावट, बनावट पर आप मुग्ध होते हो, कला में मुग्ध होते हो, प्रवचन की शैली में मुग्ध होते हो। यह सारे प्रवचन तुम्हारे हित के लिये हैं तुम्हें अपनी ओर देखना है। भगवान कहते हैं- **"मम दर्शन फल परम अनूपा।"** कई विशेषण लगा दिये, परम अनुपम ये फल

बताया है। मेरे दर्शन का फल नहीं है कि तुम्हारा रोग दूर हो जाये, तुम्हारा विवाह हो जाये, तुम्हारे पुत्र हो जाय, तुम्हारा व्यापार चमक जाये। दर्शन का फल ये नहीं है। दर्शन शब्द है। भगवान को गाली देने वालों के पास बहुत संपति/भगवान को न मानने वालों के पास बहुत संपति है। आप सुनते होंगे अमेरिका में तुम्हारे कौन पूजा करता है, तुम्हारे राम की और कृष्ण की, और अमेरिका में जितनी संपत्ति है पता नहीं कौन सा वहाँ उनका देवता है कि हमारा भारतवर्ष पूजा करते-करते, घंटी बजाते-बजाते मंदिरों में बूढ़ा हो जाता है और पेट की रोटी भी पूरी नहीं हो पाती। वहाँ न जाने कौन देवता है इतना देता चला जाता हैं। अरबों करोड़ों की सम्पत्ति और वहाँ के लोग भारतवर्ष दौड़े आते हैं। सुना है- ''शांति मिलेगी तो भारतवर्ष के महापुरुषों के संदेश, निर्देश आदेश के मानने से मिलेगी'' और यहाँ के लोग दरिद्र भारतवर्ष से जाते हैं। संपत्ति मिलेगी तो अमेरिका में, क्या उल्टा हो गया।

आप इस बात पर ध्यान दें भगवान एक चौपाई में संत तुलसीदास जी सावधान करते हैं **''मम दर्शन फल परम अनूपा, जीव पाव क्या, निज सहेज स्वरूपा।।''** खूब ध्यान देना स्वरूप शब्द है। अगर हमारी विदुषी देवियाँ और बालिकायें यदि पढ़ी-लिखी हैं तो ज्यादा श्लोक वेदमंत्र याद करने की जरूरत नहीं है। एक ही बात पकड़ लो। अभी तक हम देह को ही देखते हैं, देह का दर्शन-दर्शन नहीं है। देह के प्रति दर्शन शब्द का कहीं प्रयोग ही नहीं किया गया। देह देखी जाती है, देह सजायी जाती है। लेकिन दर्शन शब्द किसके प्रति होता है? जिसका संबंध सत्य से है, शांति से है, आनंद से है। दर्शन शब्द का प्रयोग महात्मा के दर्शन इन आँखो से? ये शक्ल दिखायी पड़ेगी। आपकी बुद्धि है तो अब महात्मा का दर्शन कर सकते हो, महात्मा का महान आत्मा का। महान् आत्मा कौन ? जो परमात्मा से मिल चुकी है। जीवात्मा कौन? जो जड़ देहादिक सांसारिक पदार्थों से मिला हुआ है। क्या खयाल है आपका ? आप देह से मिले हुये हैं कि आत्मा से? बिरले ही सत्संगी लोगों को तो मैं नहीं कहता हूँ। लेकिन

विरले ही लोग होंगे जो इस देह में रहते हुये अपने चेतन स्वरूप में, ज्ञान स्वरूप में अपनी बुद्धि को स्थिर कर पाते हों। ध्यान किया जाता है, तमाम लोग हमारे पास आते हैं - महाराज! भगवान का दर्शन कैसे हो? , भगवान का ध्यान करते हैं- भगवान कृष्ण का ध्यान करते हैं, भगवान राम का ध्यान करते हैं- मन चंचल हो जाता है? रुपया गिनने में नहीं होता, नोट सम्हालने में नहीं होता, परस्पर प्रेमी से प्रेमालाप करने में मन चंचल नहीं होता। दुकान का सौदा बेचने में मन चंचल नहीं होता?, और ऐसे गये बीते भगवान, जहाँ ध्यान करने बैठते हैं तो मन चंचल हो जाता है। ये ध्यान? कभी पत्नी नहीं कहती- पति के ध्यान में मन नहीं लगता। किसी ने कहा- **''आज तक पति का ध्यान में मन नहीं लगता''**। हम बार-बार आँख बंद करते हैं पति ध्यान में आ जावे किसी ने न कहा होगा? और भगवान के ध्यान में इतनी शिकायत- कि मन नहीं लगता। ऐसी पकड़ ली है हमने ऐसी-ऐसी चीजें सुन करके। सुनाने वालों ने भी आपको खूब फुसलाया है, सुनाने वालों ने आपको खूब रिझाया है। मैं अक्सर कह देता हूँ - कभी-कभी कहीं-कहीं तो लोग चिढ़ पाते हैं।

आप फुसलाये जाते हैं. आप रिझाये जाते हैं लेकिन क्या आप समझाये भी जाते हैं? एक ही संतोष की बात हुई। हमारे ये जो बैठे हैं हमारे पास इनके पास इनके प्रवचन मैंने सुने - यहाँ रिझाने फुसलाने की बात नहीं है, कोशिश ये है- **''जीवन को जानो, जीवन के सत्य को जानो''।** आज यहाँ आये हो तो (समय) व्यर्थ नहीं खोना, फिर सावधान हो जाना ''**<u>मम दर्शन फल परम अनूपा।</u> <u>जीव पाव निज सहज-कठिन नहीं''।</u>** कठिनता से धन प्राप्त होगा, कठिनता से पद प्राप्त होगा, कठिनता से संयोग प्राप्त होगा, कठिनता से पति पत्नी प्राप्त होगा, लेकिन स्वरूप सहज स्वरूप जो मिला ही है वह पा जाओगे। प्राप्त भी न होगा, पा जाओगे कब, जब लौट जाओगे। जब देह से लौटोगे तो स्वरूप की ओर लौट पाओगे । स्वरूप से विमुख हो गये तो देह में आ गये। जरा बड़े कड़े शब्द - जो देह को कहता है- **''मैं बैठा हूँ''** जो देह को कहता है- **''मैं काला-**

**गोरा, मोटा-दुबला हूँ''** जो देह को कहता है- **''मेरी देह है''** ये अधर्म है- अधर्म की परिभाषा आज तक शायद कुछ लोगों ये न सुनी होगी। सबसे पहला अधर्म यहाँ से शुरू होता है। देह को अपनी मान लेना, और देह को मैं मान लेना और ये रोग सबके पीछे लगा है, अधर्म है। आप लोग जो यह कहते हो-''मंदिरों में जाते हैं बड़े धर्मात्मा, गंगा रोज नहाते हैं, बड़े धर्मात्मा 12 साल से तीर्थों में रहते हैं, बड़े धर्मात्मा। तीर्थों से, मंदिरों से धर्म का संबंध ही नहीं जुड़ा। आप जरा समझ लेना, समझ न आये तो हमसे मिल करके पूछ लेना। धर्म का संबंध मंदिरों से नहीं है लेकिन धर्म की बदौलत मंदिर चल रहे हैं, धर्म की बदौलत पुजारी जी रहे हैं। धर्म की बदौलत गंगा स्नान कुंभ मेलों में लोग पहुँच जाते हैं लेकिन वहाँ धर्म का पता तक नहीं चलता, किनको? जो धर्म ज्ञान के प्यासे नहीं हैं। उन्हीं को पता चलता है जो धर्म के प्यासे हैं। आप लोग जब यहाँ आओ तो घर से संकल्प करके चलो- क्यों जा रहे हैं? महात्मा आये हैं बड़ा अच्छा सम्मेलन हो रहा है, सत्संग हो रहा है चलो दर्शन करि आवें और जब लौटोगे- ''बड़ा अच्छा बोले, जो जच जायेगा, रूप पसंद आ जायेगा, व्याख्यान पसंद आ जायेगा बहुत अच्छे यही फिर बोले- ये क्या हुआ? मन तुम्हारा सम्मोहित हो गया।, मन सम्मोहित हो गया। वह जो बोले- वही-वही कथायें होती हैं, रामचरितमानस की बड़ी व्याख्यायें होती हैं। उस रामचरितमानस की व्याख्यायें रामसंबंधी, धर्म संबंधी, त्याग संबंधी, धर्म संबंधी तो भूल जाती हैं- वही कथावाचक फिर आवें- चाहे फीस 1000 रुपये देनी पड़े।

एक कथावाचक अब नये निकले हैं नाम न लूँगा अभी मैं कहाँ था।- हमीरपुर में (अस्तरा) अस्तरा में, तो वहाँ सुना मरौंध में कि महोबा में एक व्याख्यान देने आये मुसलमान हैं लेकिन कथा बड़ी अच्छी कहते हैं तो एक कहाँ के? जालौन के। एक ब्रह्मचारी बड़े पुराने हो गये उनको 300 रुपये फीस दी गई और वो जो थे मुसलमान, बड़ी अच्छी कथा कहते थे। मैं तारीफ करूँगा, विवेचन बड़ा अच्छा करते थे, अर्थ अनेक करते थे उनको 1200 फीस दी गयी. क्या अंधेर है? सम्मोहित कर लिया उन्होंने

और सम्मोहित करने वालों को इतनी लंबी फीस और जो यथार्थ वचन कहता है वह नहीं देखते?आप लोग हमें पास फेल न करो जरा अपनी ओर लौटो, तुम यहां आ करके पास हुये ? उमर बीत गयी नया व्याख्यान सुनने कोई आया हो तो छोड़ो। अनेकों सम्मेलन हो गये और तुम वहीं के वहीं एक शब्द हम कहेंगे-कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो कहे- मैं कहाँ आया हूँ? मैं सिनेमा में नहीं आया हूँ, नुमाइश में नहीं आया हूँ, मैं आया हूँ सत्संग में। अच्छा सत्संग का क्या फल बताया गया है? एक शब्द याद रखना रखना- **'बिनु सत्संग विवेक न होई'** जानते हुये, सुनते हुये, सुनाते हुये- **'बिनु सत्संग विवेक न होई'**- मैं पूछूँगा सत्संग करते हुये कितने दिन बीत गये, 12-12 बरस बीत गये, 16-16 साल बीत गये और अब भी विवेक का पता नहीं और अभी तुम्हें होश नहीं- मैंने सत्संग किया भी। सत्संग हो विवेक न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। अच्छा कोई कहोगे- हमें तो विवेक बहुत कुछ है हमसे चाहे कितनी व्याख्या सुन लो ब्रह्म की, जीव की, माया की। हम पूछेंगे ये व्याख्या नहीं कि कितने तुम श्लोक जानते हो, कितनी तुम रामायण की चौपाइयाँ जानते हो, कितना अच्छा तुम समझाना जानते हो- ये विवेक नही है। विवेक तो यही है दो ही चीजें, चार नहीं, दो चीजें निवृत्त हो जायें (मोह और भ्रम) बुद्धि में मोह और मन में भ्रम दो चीजे दूर हो जायें, और मोह भ्रम दूर हो जाये बस महाराज फिर मुक्ति, मुक्ति शांति का प्रश्न न रह जायेगा। ये बात सबको याद रखनी चाहिये। अब कभी घर से चलो- मैं उन सबको नहीं कहता हूँ जो कि विवेकी हैं, मैं उन सबको नहीं कहता हूँ जो गृहस्थी में रहते हुये गरीबी, अमीरी में रहते हुये जिनको मोह नहीं है भ्रम नहीं है उनको तो नमस्कार है लेकिन आप लोग अगर घर में रहते हुये या सत्संग करते हुये तुम्हारा मोह दूर नहीं हो रहा है। तुम कहोगे मोह, जहाँ तुमने मेरा कहा मेरा, मेरा धन मेरा परिवार, मेरी सुन्दरता, मेरी साड़ी, मेरा पैंट, मेरा कोट, मेरी जमीन, मेरी जायदाद। जहां तुमने भीतर से प्रीति में जो तुमने भर लिया है। ये सब मोह है, सब मोह है। अब तुम दुख से नहीं बच सकते। चाहे जितना कीर्तन करें, चाहे जप

करें और चाहे मंदिर में पूजा करो। ईमानदारी से बताना- बरसों जिनके बीत गये- अब भी वियोग का दुःख होता है कि नहीं, हानि का दुःख होता है कि नहीं, अपमान का दुःख होता है कि नहीं, अभाव की वेदना होती है कि नहीं और पूजा-पाठ, जप-कीर्तन, अखंड-पाठ, रात भर जग करके माईक लगा करके पड़ोसियों को सोने नहीं देते और लोग कहते हैं, बड़ा परोपकार कर रहे हैं। जहाँ तक रामायण की चौपाइयों की ध्वनि जायेगी, लोगों का कल्याण हो जाएगा और घर में कल्याण का पता नहीं, अपने भीतर मोह की निवृत्ति हुई नहीं और कहते हैं अखंड पाठ, मेरे कहने का मतलब ये न लगा लेना कि मैं अखंड पाठ को मैं मना कर रहा हूँ। होश में आ करके अखंड पाठ करो। जिनके पास कम वख्त है, कम वख्त लोग नहीं, कमवख्त हैं। वख्त कम है वो 24 घंटे में रामायण समाप्त कर लेंगे। शायद कुछ पल्ले पड़ जाये। लेकिन माईक लगा कर चिल्लाते हैं, अहंकार को पुष्ट करते हैं और कल्पना करते हैं, समाज का, परिवार का कल्याण हो जायेगा, पड़ोसियों का कल्याण हो जायेगा। हुआ आज तक किसी का ? नहीं। पाठ करने वाले यहाँ बैठे हो तो बता दें, इस तरह अविवेक पूर्वक अज्ञान में शांति की कल्पना करोगे, अज्ञान में शांति को खोजने के लिये कहीं जाओगे, नहीं मिलेगी, अज्ञान में भगवान को खोजोगे, नहीं मिलेंगे अज्ञान में आनंद को चाहोगे नहीं मिलेगा। अज्ञान में तुम चाहो - **''हमारे जीवन के दुख मिट जायें नहीं मिटेंगे''**। इसलिये **'होय विवेक मोह भ्रम भागा** दो चीजें किसी तरह हट जायें, मोह की निवृत्ति हो जाये, भ्रम की निवृत्ति हो जाये, फिर तुम्हारे पास धन है या नहीं, जमीन जायदाद है या नही, परिवार के संबंधी हैं कि नहीं है। तुम्हें कोई दुःख नहीं दे सकता। विद्वान लोग देखो एक चौपाई याद रखना एक शब्द याद रखो।- **''कि यदि तुम संसार की चाहों का अंत कर दो तो याद रखना- तुम्हारी स्वतंत्रता अनंत हो जायेगी''**। हमारी पढ़ी लिखी देवियाँ भी याद रखें- अनंत उसका अंत न होगा। क्या कहा- तुम्हारी स्वतंत्रता का अंत न होगा। कब ? जब तुम्हारी चाह का अंत हो जायेगा तब। कितना सरल नुस्खा है। चाहें बनी

रहीं जो भगवान के दर्शन करो, कृष्ण तुम्हें दर्शन देने लग गये, राम तुम्हें दर्शन देने लग जायें- यदि तुम्हारी चाहें हैं, ख्वाहिशें हैं, कामनायें हैं, वासनायें हैं तो आज सुख तो मिला आगे मिलेगा, संयोग मिला है। आगे वो शायद मिलेगा, पदाधिकार मिला है। आगे भी मिलेगा, जवानी मिली-आगे नहीं रहेगी। याद रखना- कुछ अभी मिला है और कुछ आगे भी मिलेगा। कुछ आगे मिलेंगे हैं और आगे कुछ छूट जायेंगे। जब ये छूटेगा तो तुम हाय-हाय करोगे कि वाह-वाह करोगे? तब रामायण की चौपाई याद आयेगी? गुरुजनों के वाक्य याद आयेंगे?

धन्य हैं वे लोग, सत्संगी वही देवी है, सत्संग में आने वाली वही माता है जो यहाँ आ करके चुनौती दे- कि हम सत्संग में गये थे। हमने गुरुजनों के प्रवचन सुने हैं। अब गृहस्थी में रहते हुये अब हाय-हाय न करेंगें वाह-वाह करेंगे। किस बल पर? इस बल पर नहीं कि मिल गया, इस बल पर करेंगे कि हम जान गये कि संसार में जो मिला है सब छूटेगा। है हिम्मत किसी की बचा पाओगे कुछ, रह पाओगे जहाँ हो, रख पाओगे जो तुम्हारे पास है? मन में उत्तर दे देना। न रह पाओगे, न रख पाओगे तो क्या करो? छोड़ो!, छोड़ो भी नहीं!, भागो, कहाँ जाओगे भागकर, जहाँ जाओगे वहीं दुनिया होगी। न भागो, न छोड़ो, बस देखो!- क्या देखो- **"जो मिला है छूटने के लिये"** गुरुमंत्र है ये- जपो! - **"ॐ नमः शिवाय"** **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय"** जप ऊपर-ऊपर चलेगा, भीतर से मेरा-मेरा। कौन जप बढ़िया जो मोही बनावे, मेरा धन लोभी बनावे, मेरा परिवार मोही बनावे, मेरा अधिकार अभिमानी बनावे। ये मंत्र भीतर चल रहे हैं और ऊपर **"ॐ नमः शिवाय", "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय", "हरे राम हरे राम"** रटा करो जीवन भर। अगर तुम्हारा मोह न मिटा, तुम्ही बेईमानी न छूटी नाराज न होना कि हमें बेईमान बता रहे हैं। तुम सब बड़े ईमानदार हो, लेकिन हमें बताओ जो तुम्हें मिला है- मेरा मालूम होता है कि नहीं। बचपन में खिलौना मेरा और कुछ नहीं और जैसे बढ़े डिग्री मेरी, विद्या मेरी, बहन मेरी, माता फिर मेरी पत्नी मेरी, पुत्र मेरा,

पति मेरे, बहू मेरी, सास मेरी, सब मेरे होते चले गये। परमात्मा के विधान से जो तुम्हें मिला है उसे अपना मानते हो कि नहीं। अपना मानते हो- कि नहीं मन से पूछो। अगर अपना मानते हो तुमने बनाया भी है कुछ। इतने लोग बैठे हो सैकड़ों लोग कोई बता दो तुमने जन्म के बाद से से तुमने क्या बनाया जल्दी से बता दो, जबकि मैं कहता हूँ कि तुमने कुछ नहीं बनाया। काले बाल सफेद न होने देना हो बालिकाओं, काले बाल सफेद न होने देना है हिम्मत? जो संयोग मिला है वियोग न होने देना, जवानी में बुढ़ापा तुम लोग न आने देना, है हिम्मत, अरे! इतना तो समझ लो अधिकार नहीं है फिर भी मेरा, फिर भी मैं- **''ये सत्संग है'', ''ये गीता है'', ''ये तुम्हारी रामायण का उपदेश है''?** ये तुम्हारा शिष्यत्व है? अरे महाराज जाग जाओ! - आज ही तुम्हारी मुक्ति की दिशा मिल जायेगी, आज! मुक्ति के लिये तीर्थों में न जाना पड़ेगा। तीर्थों में जाने से तो हम देखते हैं कोई मुक्त होता दिखाई नहीं देता। सबसे बड़ा तीर्थ आत्मतीर्थ - नित्य प्राप्त, परम पवित्र । उस तीर्थ को भूल करके हम बाहर भागते हैं जरूर जाना चाहिये क्यों? सत्संग मिलता है। तीर्थों में इसलिए जाना चाहिये कि संत मिल जायें, उनका थोड़ा संग मिल जाये और उससे हमें सत्-असत्, ये जड़- ये चेतन, - इतना ही पता चल गया।- तो विवेक हो गया। अब तुम्हें कुछ नहीं छोड़ना है। शरीर जहाँ रहता है वहाँ रहे, प्रारब्ध से जो आता है आये और जो जाता है, जाये मैं उसका हूँ जो मुझसे कभी नहीं छूट सकता। अगर द्वैतवाद मानते हो तो **''ईश्वरीय अंश जीव अविनाशी''** याद आता है? हाय मेरा बेटा न रहा, मेरी पत्नी न रही, मेरे पति न रहे, मेरा धन छिन गया, मेरी जमीन छिन गयी, लेकिन यह जो याद आता है- मैं किसी की बहू हूँ, मैं किसी का पति हूँ, कोई मेरी सास है, और कोई मेरी बहू है, मैं किसी का बेटा हूँ, कोई मेरा पिता है। ये तो याद आता है। **मैं परमात्मा का हूँ याद आता है?** थोड़ा सा 2-4 आदमी तो हाथ उठादो **'मैं परमात्मा का हूँ'** जबरजस्ती न उठाना, सोच लेना। मैं भगवान का, परमात्मा का हूँ, याद आता है? ये माताजी आगे बैठी हैं इनको याद आता है पुरानी सत्संगी

मालूम होती है। मैं परमात्मा का हूँ। जब मैं परमात्मा का हूँ, तो परमात्मा अविनाशी तो मैं अविनाशी, परमात्मा सो मैं। कि संसार, शरीर संसार का है मैं परमात्मा का हूँ, शरीर जड़ है, मैं चेतन हूँ, शरीर विनाशी है, मैं अविनाशी हूँ, शरीर विनाशी।

शरीर एक दीपक की भांति मैं इसमें चेतना दीपक में जलती हुयी ज्योति की भांति। बड़ा सुन्दर दृष्टांत है- इसको जरा ध्यान से सुन लेना। मुझे पता नहीं कितना बोलना है (अभी टाइम है)। बड़ा, सोचें। - क्या मैं कह गया- बड़ा सुन्दर दृष्टांत **''इस देह को दीपक की भांति देखो- ये दीपक जो होते हैं, दिया (दिया मिट्टी का बना होता है कि नहीं), आइए उसमें तेल और बाती होती है तो जलता है कि नहीं? अच्छा ज्योति जब जल उठेगी ऐसे ही उठेगे ऐसे ही ऊपर को ही उठेगी और दीपक जब उठाओ और जब छोड़ोगे तो ऊपर जायेगा कि नीचे। दीपक मिट्टी का है मिट्टी में मिलेगा लेकिन ज्योति मिट्टी की है नहीं, वह जिसकी है उसी में मिलेगी''।** तुम परमात्मा की चेतन ज्योति हो, तुम्हारा परमात्मा से साकार-निराकार दोनों प्रकार से संबंध है। जिस समय ज्योति प्रकाशित है उस समय तो साकार है और ज्योति बुझ गयी तो सदा के लिये मिट गयी? जिसकी थी उसी में मिल गयी। फिर प्रगट होती रहेगी। लाखों करोड़ों बार ज्योति जलेगी और जिसकी है उसी में मिल जायेगी। जैसे तुम लाखों करोड़ों बार देह में चेतन स्वरूप तुम आओगे लेकिन परमात्मा के तुम परमात्मा में ही रहोगे। क्या ख्याल है? अगर इतना ही याद आ जाये आज से।

एक बार देह को देखो दीपक मिट्टी के दिये की भांति, एक बार अपने को देखो मैं चेतन स्वरूप ज्योति में प्रकाशित हूँ। मैं परमात्मा का हूँ, देह संसार की है। याद रहेगा! भाई याद रहेगा? कल भूल जाओगे- हाँ! जरा संभल करके सोचना समझना। घर जाते-जाते घर आ गया-मेरे बेटे हैं, मेरे पिता हैं, मेरी पत्नी है, यही याद रहेगा- बहुत **''अभ्यास योग युक्तेनचेतसा नान्यगामिना''** जरा बहुत संभल कर अभ्यास करो। अभ्यास अभ्यास से मिटेगा, विचार-विचार से कटेंगे, कुसंग-सुसंग से

हटेगा। इस तरह से ये युक्तियाँ संतों की पकड़ो और जल्दी करो, देर न करो वरना जैसे-जैसे तुम्हारी शक्ति घटती जायेगी भोग में, जैसे तुम्हारी प्रीति ढकती जायेगी संबंध से फिर बुढ़ापा में कुछ न कर पाओगे। **'जो पहले कीजै जतन, तौ पीछे सुख होय, आग लगै और खोदे कुँआ'** कैसी बेवकूफी है, आग लगी तब कुआं खोद रहे हैं बुझाने के लिए बुढ़ापा आ गया, अब शांति का प्रयत्न। वह भी बहुत सरल लेकिन बुद्धि ऐसी सठिया जायेगी इसलिये यहाँ जो युवक वर्ग बैठा है। आप देखते हैं- एक बालिका क्या बोल रही है? क्या चर्चा कर रही है? किससे संबंध जुड़ चुका है? और यहाँ बुढ़ापा तक कहाँ क्या बोल रहे हैं। वही तन की चर्चा, वहीं धन की चर्चा, वहीं मान की चर्चा, वहीं भोग की चर्चा। महाराज मेरे कहने का मतलब ये नहीं है कि किसी की भांति घर छोड़कर सन्यासी बन जाओ, सन्यासी बना नहीं जाता, हुआ जाता है। बनने में और होने में फर्क है। बनना ऊपर से होता है, होना भीतर से होता है और रहना तो और पीछे है। उसकी तो चर्चा अभी नहीं करना।

लेकिन तुम बनावट के पीछे हटो, छोड़ो कुछ नहीं, जो बने हो हम लोग भी, हम भी सन्यासी बने हैं। ये बनावट, सन्यास की बनावट बड़ा धोखा है अगर भीतर से हम सन्यासी नहीं हैं। गीता के सिद्धान्तानुसार अगर कामनाओं का त्याग हो चुका है, वासनाओं को छोड़ चुके हो, अब हमारे भीतर संकल्प नहीं उठते हैं तो तुम इन पोशाकों में सन्यासी हो सकते हो। कोई नया आरंभ न करो, नया संकल्प न करो, ये देखना सीख लो, देखना आ जाये, तुम दृष्टा बन जाओ-सन्यासी हो अगर ऐसा न कर सको तो हमारी तरह कपड़े रंग लो यहां भी धन की मांग, सुख की मांग, भोग की मांग- मांग ही मांग रहेगी। ऊपर से हमारी तरह तुम्हारी भी पूजा होने लग जायेगी लेकिन आनंद और शांति का द्वार बंद ही रहेगा, कब तक? जब तक संकल्प उठेंगे। संकल्प का त्याग- सन्यास है, वासना का त्याग- सन्यास है, आसक्ति, ममता का त्याग- संन्यास है। बाहर से ये त्याग नहीं दिखाई पड़ता है। ये त्याग तो भीतर से होता है। भीतर से कैसे

होता है- जैसे **"भीतर से राग हुआ"**। बड़ा छोटा सा वाक्य है श्लोक नहीं है तुम्हारा राग मोह कैसे हुआ? जहाँ तुमने मेरा कहा, राग हो गया, ममता हो गई, लोभ हो गया। धन मेरा! तो लोभ हो गया, ये संबंधी मेरे! तो मोह हो गया, ये सुख मेरा! तो **"आसक्ति हो गयी हो गई"** है कि नहीं? मेरा कहने ही से तो हुई है- और जिससे आपकी आसक्ति है इतने लोग बैठे हो, कोई सिद्ध कर दो- **"जिसको तुम मेरा कहते हो-तुम्हारा है"?** आप कहेंगे- ये बाबा कैसा बोल रहा है? मेरी पत्नी, मेरा पुत्र, मेरे पिता, मेरे नहीं हैं, तो क्या तुम्हारे हैं? जरा सोच के देखो! - ये तुम्हारे हैं, तुम्हारा अधिकार है?, तुम रख सकोगे? रह सकोगे? जो मिला है, वो तुम्हारा कदापि नहीं हो सकता। तो क्या छोड़ देना है? छोड़ना नहीं है, देखना है, जो मिला है (मेरा नहीं है) तब क्या हो? कैसे रहो ? ये व्याख्या लंबी है।

**"रहना सीखो, जीना सीखो",** यहाँ न मरना, न जीना, न रहना, हाँ रखने की बड़ी कोशिश है। जितने मंदिर ये भरे रहते हैं पुजारियों से, आप लोगों से जितने मंदिर। इन मंदिरों में जानते हो कोई देने वाला जाता है कि सब भिखारी जाते हैं मन में उत्तर सोचो! मंदिर में जितने जाते हैं सब भिखारी जाते हैं कि दाता भी जाते हैं। अरे! कहो ना- कि हम रुपये 10/- का प्रसाद कल चढ़ाया था हम देने गये थे। एक बार हम कहीं थे तो वहाँ सुना रुपये 1500/- भगवती के श्रृंगार में लगे एक 8 दिन बाद एक दूसरे सेठ का सुना रुपये 3000/- का श्रृंगार हुआ, बड़ा आकर्षण तमाम रोशनी मंदिरों देवी का, भगवती का, मंदिरों का श्रृंगार हो रहा है? जीवन का श्रृंगार हो रहा है और जीवन का श्रृंगार किसके द्वारा हो रहा आप शरीर को सजाते हैं दूसरों को रिझाने के लिये लेकिन तुम्हारे जीवन का सौन्दर्य कहाँ से आ रहा है। उसको भूले हुये हैं, हो चुका विवेक। **"ये कैसा विवेक है", "कैसा अज्ञान"। "कैसा अंधेर है"?** इस तरह से जरा **आप सोचो!** छोड़ना कुछ नहीं है, रहना सीखना है। परिवार में कैसे रहें? गरीबी में कैसे रहें? अमीरी में कैसे रहें? वियोग में कैसे रहें? संयोग में कैसे रहें? शिकायत की कोई गुंजायश नहीं है। हाय वियोग हो गया। कैसे की गुंजाइश

ही नहीं। सत्संगी हो विवेकी हो कैसे का प्रश्न उठावें- कैसे रहेंगे ? कैसे जियेंगे? कैसे निर्वाह होगा? कैसे देह चलेगी? फलाना कमाने वाला न रहा। अरे ये सब मूर्खों की बात है। मानो परमात्मा है ही नहीं। तुम्हारा परमात्मा से संबंध है ही नहीं। देह ही सब कुछ है। जितकी चिन्ता देह की है तो मैं एक प्रश्न कर रहा था- कि **''मंदिर में कोई देने वाला भी जाता है कि सब भिखारी जाते हैं?''**। आप लोग कोई कह दो- हम भिखारी नहीं हैं हम मंदिर में देने जाते हैं-हाथ उठा दो कोई।

**(सच्चिदानंद भगवानकी जै-राधे-राधे, गोविन्द-गोविन्द, राधे-राधे)**

**(सजाया है उसको हम भूले हुए हैं और हम भगवान का श्रृंगार करते हैं)**

भीतर की बात है।नारायण घर में रहना सीखो, घर को भीतर जब तक भरे हो तब तक रहना न आयेगा, सुन लेना अंतिम बात-परिवार में रहना सीखो जब तक भीतर लिये हुये हैं तब तक परिवार में रहना नहीं आयेगा, शरीर में रहना सीखो, शरीर को अपने भीतर लिये हुए हो तब तक देह में रहना नहीं आया। **''संसार में रहना सीखो''**-ये संसार तुम्हारे भीतर भरा है।तो संसार में रहना नहीं आया।अंतिम बात नाव में रहना सीखो अगर कहीं नदी नाव में भर गयी तो पार होंगे कि डूबोगे। नाव में नदी भर जाये-पार होंगे? तैसे ही संसार भर जाये, परिवार भर जाये, धन भर जाये, जो कुछ भर जाये-मेरा।मेरा कहा नहीं कि भीतर भर गया।प्रभु सब तेरा कि निकल गया।अभिमंत्र है क्या कहोगे-मेरा कि तेरा? क्या मत है आपका? कह दो महाराज तुम तो हो गये हो बाबा ! न आगे न पीछे। मेरा तेरा कहना शुरू कर दें, तो कोई ये लेके भागेगा कोई वो लेके भागेगा।अरे ये हम नहीं कह रहे हैं- मिले हुये की रक्षा करो, शक्ति मिली है, लेकिन भीतर से मेरा कुछ नहीं है। जब तक है, जाता है-जाता है, रहता है-रहता है।रहना सीखो, रखना नहीं, रख न पाओगे।

जितने मंदिर में लोग जाते हैं-दो ही प्रश्न हैं-नहीं मिला है- मिल जाये और जो मिला है-बच जाये। क्या मत है आपका? ये तुम्हारी जितनी प्रार्थनायें हैं, जितनी स्तुतियाँ हैं केवल हे प्रभु (ये नहीं मिला)३, मिल जाये,

जो मिला है भगवान रक्षा करो। नहीं मिला है तो दुःख, मिल जाये तो बचाने का दुख। हर दशा में दुःख ही है कि और कुछ। जब तक न मिले तब तक दुख, मिल जाये पति तो बने रहें। धन मिल जाये तो बना रहे, अधिक मिल जाये तो क्या होगा? कोई रक्षक चाहिये, कोई पुत्र चाहिये, नहीं तो क्या होगा? हर हालत में उपद्रव परेशानी तो मैंने कहा-गुरुजनों के वाक्यों से रखने की कोशिश न करो रहना सीखो।

**अब आगे की चर्चा फिर सुनेंगे......**

।। ॐ ।।

# संकट मोचनः

# जिसका तुम्हें अभिमान है

**“ चैतन्यं शाश्वतं शातं व्योमातीतं निरंजनं**

**नाद बिन्दु कलातीतं तस्मै श्री गुरवै नमः ”**

सावधान हो जायें, पशु को सावधान किया जाता है दंड के द्वारा, मानव सावधान होता है शब्द के द्वारा और देवता सावधान होते हैं प्रार्थना के द्वारा। यदि शब्दों के द्वारा आप सावधान नहीं होते तो आपके जीवन में पशु बाधा डाल रहा है। इसलिये सावधान रहना-पशु बाधा न डाले, शब्द से आप जाग्रत हो जायें। अभी-अभी आप सुन रहे थे अपने जीवन के उत्थान की, निर्माण की देन जिसका तुम्हें अभिमान है। धन का अभिमान, बल का अभिमान, कुल का अभिमान, विद्या का अभिमान, ज्ञान का अभिमान, त्याग का अभिमान, अनेक अभिमान ?

(जिसका तुम्हें अभिमान है यह भी न रहेगा।।) 2

(जिस बल पै तुम्हें शान है यह भी न रहेगा।।) २

(तुम गा रहे हो गर्व से) 2 अपना विभव प्रताप।

(झूठा सभी समान है) 2 यह भी न रहेगा।।

जिस बल पर तुम्हें शान है (यह भी न रहेगा।।) 2

(सोचो तो कैसे-कैसे 2) 2 (जमाने गुजर गये।) 2

(जिनसे तू हैरान है) 2 यह भी न रहेगा।। 2

जिस बल पै तुम्हें शान है ......

(आये हैं चले जायेंगे)2, कुछ देर के मेहमान।
आये हैं चले जायेंगे, कुछ देर के मेहमान।
क्या देखता नादान है, यह भी न रहेगा।।
जिसका तुम्हें अभिमान है------------

(ऐ पथिक परमभक्त और) 2, भगवान के सिवा।
(जो कुछ है नाशवान है) 2, यह भी न रहेगा।।
जिसका तुम्हें अभिमान है (यह भी न रहेगा।)2

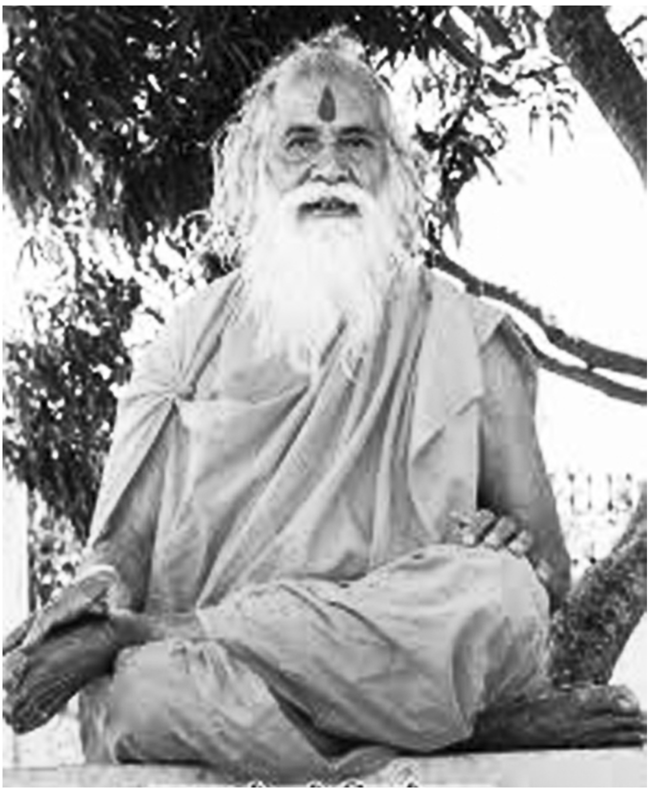

# ।। ॐ ।।

अनेक नाम रूपों में विद्यमान परम प्रभु को प्रणाम करते हुये आपके जीवन निर्माण के कुछ गुरु वाक्य कहे जा रहे हैं। एक बड़े ज्ञानवान महात्मा थे तो एक साधक उनकी महिमा सुन करके उनके पास गया, बहुत विद्वान था वह भी कहा-महाराज सुना है आप प्रभु के इतने प्रेमी हैं आपको बोध हो चुका है, शास्त्रों का ज्ञान है, ऐसी कुछ कृपा करो, समर्थ हो-हमें भी तत्व बोध हो जाय, संसार से वैराग्य हो जाय लेकिन जल्दी बता दो, समय कम है। उसने कहा-अच्छा, रुको! कोई बात नहीं थके आये हो, थोड़ा ये कुआँ में बाल्टी है- एक बाल्टी पानी भर लाओ। वह गया कुआँ में। बुन्देलखण्ड के कुआँ थे बहुत गहरे थे। जितनी बाल्टी गरू न थी उससे उसकी रस्सी गरू थी। बाल्टी डाली कुआँ में-भरी-बाल्टी ऊपर तक चली आयी, वजन न मालूम हुआ कि बाल्टी के (क्या)2 रूप हैं। बाल्टी ऊपर तो देखा-उसमें तो एक जरा सा भी पानी नहीं है-बड़ा आश्चर्य हुआ सोचा-शायद डुबाने में कुछ गलती रही हो। फिर पानी में डाला, अच्छी तरह हिलोरा, समझ गये कि भर गई, झांक कर देखा-समझ में आया-भर गयी। फिर खींचा, खींचते-खींचते जब ऊपर बाल्टी आयी जो फिर खाली वह तो परेशान हुआ बात क्या है तो देखा-उसमें तो कई छेद हैं बाल्टी भरी मालूम होती है। ऊपर आते ही खाली हो जाती है। गुरु महाराज के पास आके कहता है-महाराज आपने पानी मंगाया था मैंने दो बार पानी भरा लेकिन बाल्टी में पानी रूकता ही नहीं सब बह जाता है। गुरू ने कहा-देखो अब भी तुम समझ नहीं पाये? इसी प्रकार तुम यहाँ आये हो ज्ञान को भरने, प्रेम को भरने, मुझसे कुछ लेने आये हो लेकिन जिस पात्र में तुम भरना चाहते हो उसमें छेद ही छेद है। तुम्हें लगेगा भर गया लेकिन जाओगे

जाते-जाते फिर खाली। आप लोगों की बाल्टी में छेद तो नहीं है? क्या ख्याल है? **(बहुत छेद हैं)** बहुत हैं समझ में आ गया। कितना ...ये संत लोग जानते हैं ज्ञानामृत एकदम भर लो, ज्ञानामृत भर लो, **(प्रेमामृत) २** भर लो-लगता है भर गये लगता।

**'तुलसी धट नव छिद्र को'**- कितनी सुन्दर बात संतों ने कही है-

**तुलसी घट नव छिद्र को सत्संगति जल बोरि।** इसको सत्संग में (डुबोये रहो)२ सत्संग में डुबोये रहो।

**बाहर रहे न बिन्दु जल कीजै जतन करोरि।।**

ये एक साधन है जो गुरुजनों से मिला है। अगर आप चाहते हो हम भरे रहें तो उपाय क्या है? सत्संग में इसको डुबोये रहो। आप कहोगे-महाराज आप तो कभी-कभी आते हो साल में एक-दो बार, सत्संग बड़ी मुश्किल में मिलता है। सावधान हो जाना- अगर संसार में सबसे अधिक नित्य सुलभता से मिलता है तो सत का संग सुलभ है। भूल तो न जाओगे-सत का संग सुलभ है। धन का संग दुर्लभ है, बल का संग दुर्लभ है। धन का संग दुर्लभ, बल का संग दुर्लभ, ये पत्नी-पति, माता-पिता-पुत्र संयोग दुर्लभ, पदाधिकार दुर्लभ, सत्संग नित्य सुलभ, एक पुस्तक अभी-अभी छपी है-सत्संग नित्य सुलभ। मातायें तो बड़ी शिकायत करती हैं-बड़ी मुश्किल कहाँ सत्संग? घर में लड़ के कभी जाना चाहती हैं, अयोध्या वृन्दावन, तीरथ, फिर भाग्य को कोसती हैं। बहुत भूल। कम से कम सत्संग की जब आपकी अभिलाषा हो तो आज के वाक्य याद रखना, नहीं तो बता दूँ, तुम्हारे भगवान ने गीता में क्या कहा है? भगवान अपना पता बताते हैं। तुम भगवान को खोजने वृंदावन जाते हो, भगवान के दर्शन करने अयोध्या जाते हो, (जरूर जाना) क्योंकि यहाँ तो भगवान हैं नहीं शायद वहाँ मिल जाये, कहीं मिल जायें, हरिद्वार में मिल जायें और अब भगवान पता अपना बताते हैं- अहमात्मा गुडाकेश क्या विचित्र...क्यों भाई मनुष्य की भांति सुन रहे हो कि जानवर की भांति। 50 बैल यहाँ बाँध दो,

50 माइक लगा दो-चाहे जितना हम चिल्लायें, बैल हमारी बात समझेंगे लेकिन आप विद्यावन पुरुष हो कहीं ऐसा धोखा न खाना, अपने पशु का परिचय मत देना। चुनौती मत देना-बाबा चाहे जितना चिल्लाओ- हमारे ऊपर तुम्हारा असर होने वाला नहीं है, नहीं है- ऐसा न करना कितने-कितने श्रम से, जाने कहाँ-कहाँ, कितना-कितना ये सब हो रहा है। **"रामकृपा बिनु सुलभ न सोई, बिनु सत्संग विवेक न होई"** तो यह न कहना कृपा होगी-कृपा हो गई, हो रही है। एक बात बीच में याद रखना-परमात्मा की ओर से जो होना है प्रार्थना करने की भी जरूरत नहीं है। थोड़ा यह शब्द आपको, ऐसे किसी को उल्टे लगेंगे। परमात्मा की ओर से जो होना है माँगने की जरूरत नहीं है। संसार में जो होना है बड़ी मेहनत करनी पड़ेगी, बड़ी प्रार्थना करनी पड़ेगी, बड़ी विनती करनी पड़ेगी। परमात्मा से माँगना, वह तुम्हारी तरह कंजूस नहीं है। वायु से तुम प्रार्थना करो-हे वायु देवता, हमारे भीतर हमारे फेफड़ों में थोड़ी जीवन देते रहो। प्रार्थना करने की जरूरत है कि तुम्हें श्वांस लेने की जरूरत है। नदी के किनारे, कुँआ के पास खड़े हो करके प्रार्थना करो कि -हे कूप देवता, हमें जल दे दो। अरे तुम्हें भरने की जरूरत है कि प्रार्थना करने की जरूरत है? चाहे जितना भरो कुआँ का स्रोत कभी पानी देना छोड़ेगा? चाहे जितना वायु लो।

देखो बड़ी सुन्दर बात है आप लोग- अभी-अभी सीमित और अभी-अभी असीमित, जरा विद्वानों के लिए इशारा है-जो अभी सीमित है तुम्हारे भीतर जाते-जाते जिसकी सीमा हो जाती है, जिसकी नाप तौल हो जाती है, जो कम हो जाता है। तुम्हारे भीतर जाते हवा सीमित है कि नहीं और बाहर निकल करके असीम से मिल गयी। जो भीतर सीमित वही बाहर कोई सीमा नहीं। जो भीतर भोजन जल सीमित और बाहर जल कोई सीमा नहीं। जो चेतना तुम्हारे शरीर की नाड़ियों में, इंद्रियों में, मन में, बुद्धि में सीमित है वही बाहर असीमित। अभी असीम और यहीं पर सीमित। यह मिट्टी पृथ्वी तल तत्व में सीमित उसका वजन हो जायेगा। ये

मिट्टी, पृथ्वी तत्व, जल, जला दिया जाये तो कहाँ मिल जायेगा-असीम में कि सीमित में? जो यहाँ सीमित है वहीं बाहर असीमित है। असीम को खोजने कहीं जाना नहीं है। होश जा आये, ज्ञान चक्षु खुल जायें तो अभी देखो सीमित-अभी देखो असीमित, अभी देखो-जड़-अभी देखो चैतन्य।

अभी देखो विनाशी-अभी देखा अविनाशी। कहाँ से देखोगे-(आँखों से नहीं) 2। आँखे आकार से आगे नहीं जा सकतीं, आँखें देह के आगे नहीं जा सकतीं, आँखें दृश्य के आगे नहीं जा सकती, लेकिन यदि गुरुजनों के संग से तुम्हारी ज्ञान दृष्टि खुल जाये तो फिर सुन लेना-मेहनत करो संसार के लिये, भागदौड़ करो संसार में कुछ पाने के लिए। आनंद पाने के लिए, परमात्मा को पाने के लिए, भगवान को पाने के लिए जो दौड़ भाग करता है महामूढ़ है, महामूर्ख है। जो नित्य प्राप्त है उसको पाने का श्रम? कितनी दूर है तुम्हारा भगवान, कितनी दूर है तुम्हारा परमात्मा और कितना मिला है तुम्हारा ये संसार। अभी-अभी ये शरीर तुम जो हो तुमसे ये शरीर दूर है लेकिन परमात्मा तुमसे भी अधिक तुम्हारे निकट है-उसकी खोज हो रही हैं संसार से कुछ चाहते हो तो बिना कर्म के न मिलेगा। परमात्मा को चाहते हो तो याद रखना (करने सो न मिलेगा) 2। तुम जप करो परमात्मा नहीं मिलेगा, लेकिन दूसरे से मत कह देना कि एक बाबा आते थे, कह रहे थे- जप बेकार है-ऐसा न करना। बात समझ लेना। जप करने से परमात्मा न मिलेगा, कीर्तन करने से परमात्मा न मिलेगा, आँख बंद करने से परमात्मा न मिलेगा तो कैसे मिलेगा? जो मिला है वह मिलेगा? जिसको तुम मिला हुआ मानते हो जिसको तुम कहते हो (ये मुझे मिला) 3 **जिस दिन तुम्हे पता चल जायेगा- (जो मिला है मिथ्या है) 2 और जो मिलने के पहले ही मिला था वह सत्य है-** ऐसा बोध जहाँ हो जायेगा तब मैं कह रहा हूँ- कीर्तन से परमात्मा न मिलेगा, जप से परमात्मा न मिलेगा, पाठ-पूजा से परमात्मा न मिलेगा लेकिन आधी बात और पकड़ लेना, इससे क्या ये बेकार है? बिल्कुल बेकार नहीं। जप तुम्हें करना ही पड़ेगा, कीर्तन तुम्हें करना ही पड़ेगा, पाठ तुम्हें करना ही पड़ेगा, क्यों करना

पड़ेगा? परमात्मा न मिलेगा, तब ये क्यों करना पड़ेगा? तुम्हें जो साधन सुलभ है **<u>''साधन धाम मोक्ष कर द्वारा'</u>** ये इंद्रियाँ साधन है, ये मन साधन है, ये बुद्धि साधन है ये (अहं) 2 साधन है। ये साधन किसी प्रकार शुद्ध हो जाये, अब ये बात आधी छोड़ न देना। **जप, कीर्तन, पूजा-पाठ ये परमात्मा की प्राप्ति के लिये नहीं हैं- साधन की शुद्धि के लिये हैं ,** सूर्य का प्रकाश फैला हुआ है और आँख में माड़ा मोतियाबिन्द हो तो लाख कोशिश करे कोई तुम्हें दिखा पायेगा? प्रकाश मौजूद है लेकिन **आँख नहीं खुली है** तो प्रकाश में आप **(नहीं देख पाओगे) 2।**

एक अंधा था एक गाँव में। लोग बड़ी कोशिश करते थे उसको समझाने की कि देखो ये सूर्योदय हुआ। अंधा कहै-कैसा सूर्योदय? लोग बहुत परेशान, समझाते थे, बहुत दिन बीत गये। एक दिन एक महात्मा आये कोई कहा-महाराज हमारे गाँव में एक अंधा है आप उस पर कृपा कर दो, हम बहुत समझाते हैं, शायद तुम महात्मा हो तुम्हारी बात मान ले। तो अंधे को उसके पास ले गये और जब ले गये तो कहा-महाराज ये बात नहीं मानता-सूर्य का प्रकाश है और था अंधा। कहे तुम गलत जगह में आ गये हो। अरे इसको मेरे पास लाने की जरूरत ही न थी। जब इसके आँख नहीं है तो ये सूर्य के प्रकाश में देखेगा कैसे? तुम किसी डाक्टर के पास ले जाओ इसकी आँख का आपरेशन हो जाये मोतियाबिन्द का, अभी देखने लग जायेगा। प्रमाण देने की जरूरत नहीं है। संत कितनी सुन्दर बात कहते हैं- **<u>''हैं नेरे दीखे नहीं धिक धिक ऐसी जिन्द''</u>** तुलसी या संसार को एक-दो को नहीं **<u>''तुलसी या संसार को हुआ मोतियाबिन्द''</u>** तुम्हें तो नहीं है मोतियाबिंद भाई, क्यों ? हैं बड़े हँसकर कह रहे हो। इस मोतियाबिन्द की कोई फिकर नहीं, आँखों में हो जाये तो जाने कहाँ दौड़ेंगे। कितनी ये देह की आसक्ति प्रबल है और संसार के विनाशी को देखने के लिए आंखों की बड़ी चिंता है। अविनाशी को देखने के लिए अभी तक कोई फिकर नहीं हुई इतनी उम्र बीत गयी। आज से क्या फिकर होगी? बुद्धि की? बुद्धि में, जो भीतर की दृष्टि में, जो जाला माड़ा पड़ा हुआ है कैसे दूर होगा?

**'पश्यन्ति ज्ञान चक्षुसा'** ऐसे ही भगवान ने कहा है- **विमूढ़ानानु पश्यन्ति**-जिनका नाम तुम जपते हो, जिनका तुम कीर्तन करते हो, जिनके तुम पाठ करते हो-वह भगवान कहते हैं याद रखना विमूढ़ा-विमूढ़ को नहीं देख मिलेगा। विमूढ़ किसे कहते हैं? **जिसका मन अटक गया है,** जिसका मन अटक गया है तन में, जिसका मन अटक गया है धन में, जिसका मन अटक गया है परिवार के झूठे शरीरों में, कहीं भी संसार में मन अटका है इसको कहते हैं **(मूढ़)** 2 और विद्वान होकर के पढ़ा-लिखा शिक्षित हो करके जिसका मन अटका है उसको कहते विशेष मूढ़। वह विमूढ़ है। उनको दर्शन नहीं हो सकता, वो नहीं देख पायेंगे। किसी प्रकार हमारी संतों के संग से मूढ़ता का **अंत हो जाय 'सुनि मनमूढ़ सिखावनि मेरो',** संत परेशान हो करके विनती करते हैं- ऐ मन तू थोड़ा सावधान हो जा, इस मूढ़ता को दूर कर। बात समझ लेना आपकी है। आपका मन जब तक विनाशी में अटका है, अविनाशी के लिये तुम कुछ भी प्रयत्न करो, कर चुके हो, कर रहे हो। वे धन्य हैं जिनकी मूढ़ता का अंत हो चुका है वे धन्य हैं। अभी तो मूढ़ता कहा है-अभी मूर्खता तो बाकी ही है। आप लोग इतने पढ़े-लिखे विद्वान बैठे हो, शायद ही कुछ लोग हों, जो संतो से सुन चुके हैं उन्हें तो मालूम होगा - मूर्ख और मूढ़ का प्रयोग सब करते हैं-महामूढ़, महामूर्ख हैं लेकिन पता नहीं-मूढ़ कहते किसे हैं? लेकिन आपसे न पूछेंगे कि तुम जानते हो कि नहीं जानते हो। जो नहीं जानते वे जान लें-बुद्धि का किसी नशे में, किसी मद में, धन के मद में, रूप के मद में, कुल के मद में, विद्या के मद में, ज्ञान के मद में, त्याग और तप के मद में मूर्छित हो जाने का नाम मूर्खता है। ये मूर्खता की परिभाषा याद रखना। नशे की दृष्टि में बुद्धि दृष्टि जब ढक जाती है, होश नहीं रहता है उसको मूर्ख कहते हैं और जब मन कुछ पकड़ लेता है इसको मूढ़ कहते हैं। मूढ़ता और मूर्खता का अंत हो जाये बस यही आपको यहाँ आने का और संत वचन सुनने का परम लाभ है। अगर मूढ़ता का अंत न होगा तो मन से जो पकड़े हो, पकड़ रहे हो, हमारी प्रीति उसी में फंसी रहेगी। परमात्मा की अनुभूति नहीं होगी

और यही हो भी रहा है। कीर्तन पूजा पाठ सब चल रहे हैं लोगों को ये होश नहीं है, प्रीति तो मन के द्वारा पदार्थों में फंसी है। बड़ा छोटा सा वाक्य है। आप लोग जरा भीतर झाँक के देखो। आपकी प्रीति में क्या भरा है? भगवान, आपकी प्रीति में क्या है ? आत्मा, आपकी प्रीति में क्या है? परमात्मा। क्या ख्याल है-उत्तर दे देना अपने भीतर। जब तक आपकी प्रीति में विनाशी भरा है तब तक महाराज, दर्शन का द्वार बंद रहेगा और बंद है।

तीर्थों में जाओ, मंदिरों में जाओ, जाना व्यर्थ नहीं है, जाते-जाते वहाँ भी अगर संत मिल गये, जाते-जाते वहाँ भी गुरुजन मिल गये और गुरु वाक्य समझने की बुद्धि तुममें जाग्रत हो गयी तो परमात्मा का बोध नहीं होगा। सोच लेना और यहाँ पर कुछ लोग ऐसे हैं जाने कब से पूजा पाठ कीर्तन जप सब कर रहे हैं और ये मुख्य बात जो इशारा किया जा रहा है-मन की मूढ़ता को नहीं समझ पा रहे हैं- मन कहाँ अटका हुआ है प्रीति कहाँ फंसी हुयी हैं? परमात्मा से मिला हुआ प्रेम हमने विनाशी में फंसा दिया है। एक ही बात काफी है-मेरा कहा नहीं, मेरा कहा नहीं कि बस प्रेम फंस गया। मेरा कहा नहीं कि आपका प्रेम रुक गया, मन ने पकड़ लिया।

अहंकार की सरल परिभाषा, अहंकार सब जगह, आपको गीता में **मद्भक्तिं लभते परां।** भगवान कहते हैं-मेरी भक्ति प्राप्त करता है और शुरू कहां से किया-**'बुद्धया विशुद्धया युक्तो'** जिनकी बुद्धि विशेष शुद्ध हो जाती है। आप आज से कोशिश करो-जप करते हो करते रहना, कीर्तन करते रहना, पाठ पूजा करते रहना, जो कुछ करते हो करते रहना-एक प्रश्न कर देना-ये प्रश्न न करना भगवान नहीं मिलते, बहुत धोखा होगा जो कहता है भगवान नहीं मिलते और जाग्रत क्या होगा? हमारी भगवान के देखने की दृष्टि नहीं खुलती, ये कोशिश करना दृष्टि कैसे खुले और दृष्टि कौन है? **'पश्यन्ति ज्ञान चक्षुषा'** ज्ञान चक्षु खुल जाने यही गुरोपासना का नगद लाभ है। गुरोपासना कह रहा हूँ, पति की उपासना, पुत्र की उपासना। मन जिसके निकट रहता है उसको उपासना कहते हैं। अब

आपका मन धन के निकट है? तन के निकट है परिवार कें सम्बंधियों के निकट है, पदाधिकार के निकट है। महाराज तुम मंदिर में घंटों बैठे रहो- उपासक नहीं हो सकते। पहले तो गुरोपासना करो। गुरू की उपासना देह के निकट रहना नहीं है गुरू उपासना का सरल अर्थ है-ज्ञान के निकट अपनी बुद्धि को रखो। यहाँ जैसे आँखें आकार को देख रही हैं और अगर बुद्धि ज्ञान के निकट न पहुँच सके तो बहुत दिन आना पड़ेगा जो आज ही हो सकता है। शायद 12 साल लग जाये, 12 महीने लग जाये, 12 दिन लग जायें, अगर बुद्धि ठीक है तो अभी-अभी।

मैंने पहले ही इशारा किया था एक ही वस्तु है जो तुम्हें निरंतर प्राप्त है उसका नाम है सत्, उसका नाम है परमात्मा, परमात्मा निरंतर प्राप्त है। प्रमाण क्या दिया, गीता का- **'अहमात्मा गुडाकेश'** जब तुम्हारे भगवान कहते हैं मैं आत्मा के रूप में सब भूत प्राणियों में मौजूद हूँ, अब आज से जब कभी भगवान का प्रश्न आवे तो देखना-आत्मा यहाँ शरीर में कहीं है कि नहीं, एक प्रश्न कर देना, तुम कह दो सुना तो है लेकिन आत्मा दिखाई नहीं पड़ती। आत्मा देखने की वस्तु नहीं है उसी के द्वारा देखा जाता है, उसी के द्वारा सुना जाता है। उसी के द्वारा सारा व्यापार, सारी क्रिया इंद्रिंयो में, मन में, शरीर में, उसी को द्वारा सब कुछ हो रहा है। थोड़ी देर बैठकर शांत और मौन होकर के यहां ध्यान कराया जाता है। ध्यान कराया नहीं जाता सच पूछो तो ध्यान से देखने की प्रेरणा दी जाती है। आँख बंद कर लो, कानों को बाहर के शब्दों से हटा लो, भीतर कुछ न करो, परमात्मा के लिये कुछ न करो। ये साधन है थोड़ा सा जल्दी में बता रहा हूँ। परमात्मा के लिये कुछ न करो और संसार में कुछ चाहते हो तो करे बिना चैन न लो-धन के लिये भागो, तन के लिये भागो, परिवार के लिये भागो, पत्नी पुत्र पति के लिये भागो, परमात्मा के लिये भागना बंद कर दो। क्या करो ? शांत हो जाओ, शरीर बैठा है बैठा दो, भीतर अपने आप तुम्हारे क्या हो रहा है? अच्छा बताओ इतने लोग बैठे हो, धड़कन तुम चलाते हो कि चलती है। भूख तुम लगाते हो कि लगती है। प्यास तुम लगाते हो कि लगती

है। खाना तो तुम खाते हो ना, अच्छा भूख न लगे तब और खाना तुम खाते हो और दांतों से न पिसे तब, भीतर जाय और न पचे तौ क्या दशा होगी? क्या तुम करते हो? **'अहंकार विमूढ़ात्या कर्ताअहयिति मन्यते'** ये भगवान के वाक्य हैं। विशेष मूढ़ हैं वे जो अपने को कर्ता मानते हैं। मानने दो उन्हें, तुम आज यहाँ आ गये हो अब पीछे लौट करके भगवान के वाक्यों पर ध्यान दो-तीन गुणों से ये सारा संसार कार्य कर रहा है। सारा संसार लेकिन अहंकार से जो विशेष मूढ़ हैं, अहंकार से जो ढका हुआ है ज्ञान स्वरूप वह अपने को कर्ता मान रहा है। पूजन भजन पाठ पूजा सब एक तरफ मैं कर रहा हूँ, मैं करूँगा, मैं यह करूँगा और होश नहीं है तुम कुछ नहीं कर सकते अहंकार मूढ़ है, को कर्ता मानता है। इसके किये बिना जो हो रहा है उसे जरा ध्यान (से देखो)।

एक बार मैं बैठा था तो सोचा-आज हम भजन, आज हम अपना साधन का समय नहीं पूरा कर पाये। बहुत दिन बहुत पहले की बात है जब करना था वह नहीं कर पाये, पाठ करना था नहीं कर पाये और तुम्हारे किये बिना क्या हो रहा है वह भी तुम करोगे? मानो हमने पाठ पूरा कर दिया, हमने 1000 जप पूरा कर लिया, हमने ध्यान का समय एक घंटा करके पूरा कर लिया और ये धड़कन कहीं न चलती तो और उसी समय सांस बंद हो जाती तो, भीतर जो क्रिया हो रही है, समाप्त हो जाती तो, तुम **(किया करो सब कुछ)** 2 चलेगा कुछ ? एक बार ध्यान से देखो-हमारे किये बिना इस शरीर में? मन में, बुद्धि में क्या हो रहा है। शायद ही कुछ लोग पकड़ पायें-तुम जो करते हो सो करते रहो, तुम्हारे किये बिना क्या हो रहा है। ध्यान से देखो। इसका पता लगाओ, ध्यान करो नहीं, ध्यान से देखो, **'पश्यन्ति ज्ञान चक्षुषा'** जब भीतर की दृष्टि खुलेगी तो तुम्हे साफ दिखाई पड़ेगा, तब तुम्हें भगवान के ध्यान करने की कोशिश न करनी पड़ेगी। तब तुम देखोगे कि परमात्मा यहीं मौजूद है। उसकी सत्ता से ही सब कुछ हो रहा है, उसकी सत्ता से, उसकी शक्ति से सब कुछ हो रहा है-ये जो ध्यान से देख लेता है वह उपासना के निकट पहुँच जाता है। और

नहीं तो बरसों से हम सब कुछ कर रहे हैं। अहंकार तृप्त होता है। मैंने इतना जप किया, इतना कीर्तन किया, बीच में फिर से दुहरा दूँ, किसी से यह न कहना कि पथिक जी कह रहे थे- जप करना, कीर्तन करना बेकार है। बहुत जरूरी है जप? बहुत जरूरी है कीर्तन, बहुत जरूरी है पाठ लेकिन मूढ़ता में नहीं, विवेकपूर्वक सब कुछ जरूरी है और विवेक गुरुकृपा से प्राप्त होगा। तो मैंने एक इशारा किया-आप लोग सावधान हो जायें-साधना के विषय में मनमानी मत करें, बरसों तीरथ जाते हो गये- मैं तो समझता हूँ-तमाम शिष्य ऐसे हैं जो अपने को शिष्य मानते हैं और कहते हैं हमारे ये गुरू जी हैं। और उनका गुरू उन सबका मन है। जब तक कोई मन की बात मानता है वह गुरू का विरोधी है, क्या सुनते हो? शायद ही यहाँ कोई ऐसा हो जो मन की न मानता हो। भोजन कराओगे तो अपना मन, दर्शन करने आओगे तो अपना मन, और फिर सत्संग के लिये तो बहुत ही मूढ़ता है। सत्संग की बात बीच में ही इशारा किया था- यह सत्य तुम्हें निरंतर प्राप्त है। आत्मा सत् है चेतन सत् है, सत् तुम्हें निरंतर प्राप्त है और अगर ये सत् तुम्हें निरंतर प्राप्त है तो बताओ सत्संग करने आप कहाँ जाओगे? क्या उत्तर है आपके लोगों के पास? नित्य सुलभ सत्संग, नित्य सुलभ आत्मा, नित्य सुलभ सत्संग जिसके बिना कुछ हो ही नहीं सकता तो उस सत् का संग जहाँ हो वहीं करोगे कि कहीं जाके करोगे? ये है मूढ़ता, मूर्खता। अभी भी बहुत लोगों की समझ में आना कठिन है। समझ में आना बहुत आसान है लेकिन आप लोग कठिन बना लेते हो। ये कठिनता आपकी कैसे सुलभ हो। थोड़ा सोचकर के देखो। बहुत कठिन क्या है, संसार की प्राप्ति और बहुत आसान क्या है-परमात्मा की प्राप्ति। मुश्किल जो दिखाई देता है एक गीत हमने एक लाइन सुनी थी थोड़ा आप सोच लें।

भगवान की प्राप्ति आपको मुश्किल लगती कि सरल मुश्किल लगती है ना, बहुत ठीक। यह ज्ञान की प्राप्ति आपको सरल लगती है कि कठिन। मुश्किल लगती है बदल जाओ आज से। संसार में कुछ प्राप्त

करना है, तो मुश्किल है। परमात्मा की प्राप्ति मुश्किल नहीं है, परमात्मा का प्रेम मुश्किल नहीं है, परमात्मा का ज्ञान मुश्किल नहीं है लेकिन संसार में कुछ चाहोगे तो बहुत मुश्किल होगी लेकिन ये, अब मुश्किल

**मुश्किलें होती हैं *** यहाँ आ करके
**(मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से)** 2
**समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से"**

***** है मुश्किल कि नहीं, कह तो गये लेकिन इधर से मुश्किल है कि तुम्हारी ओर से? तुम्हारी बात कही अब ये समझना आसान है कि कठिन? कठिन है लेकिन निराश न होना।

**समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।।**
**(दुनियावी ज्ञान के) 2 गरूर में सब भूले हैं।**
**दुनियावी ज्ञान के गरूर में सब भूले हैं।**

**कवि होता है (कोई होता है निरभिमान बड़ी मुकिश्ल से।।)**
**मुश्किलें** होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से
**(जहाँ इंसान में) 2 हैवानियत छिपी रहती।**
जहाँ इंसान में हैवानियत छिपी रहती।
देख पाते कोई विद्वान बड़ी मुश्किल से ।।
**देख पाते कोई विद्वान.......।।** बड़ी मुश्किल से ।।
**(कभी)२ ईश्वरीय विधान गलत करता नहीं।**

घबरा जाते हैं वियोग हुआ तो घबरा गये, हानि हुयी तो घबरा गये, शरीर में कोई बीमारी आयी तो घबरा गये। क्यों घबरा गये? हमारे किये तो नहीं है? ईश्वरीय विधानसे आया है। आस्तिक के सामने जो कुछ आ जाये सब स्वीकार कर लो। कर्म का फल है, विधान है, बड़ा मंगलमय है। बहुत कम ऐसे आस्तिक होंगे जो स्वीकार करते हो। घबरा जाते हैं परेशान होते हैं, भाग दौड़ करते हैं भोगना पड़ता है, बच नहीं पाते।

**कभी ईश्वरीय विधान गलत करता नहीं।**

**मगर होता है इत्मीनान बड़ी मुश्किल से।।**
**जो कि बलवान रूपवान झूठावान बना।**
**जो कि बलवान रूपवान.......।।**

जरा और समझ लेना-कोचवान, गाड़ीवान, मोटरवान, गुणवान, रूपवान, कुलवान, धनवान, तमामवान भरे पड़े हो। जरा १ शब्द याद रखना, तमामवान झूठे, आत्मवान है कोई? देहवान, रूपवान सब, आत्मवान, आज से प्रश्न पूरा कर देना।

**जो कि बलवान रूपवान झूठावान बना।**
उसे होना है आत्मवान बड़ी मुश्किल से।।
**उसे होना है आत्मवान बड़ी मुश्किल से**
**मुश्किलें होती हैं आसान**
**किसी की आत्मा परमात्मा से भिन्न नहीं।** ...ध्यान से सुन लेना
(किसी की आत्मा) 2 परमात्मा से भिन्न नहीं।
(ज्ञानी कर पाते हैं पहचान बड़ी मुश्किल से)।2.....
(किसी भी साधना से चित्त **शुद्ध होने पर।**) 2
सुलभ हो जाते हैं भगवान बड़ी मुश्किल **से**।।
सुलभ हो जाते **हैं भगवान**------
मुश्किलें--------
सारे बंधन जितने संसार के हैं।
सारे बंधन अशांति **दुख अहंकार में है**- *जरा शब्दों में ध्यान दो।
सारे बंधन अशांति दुख अहंकार में हैं।
(मुक्त होता कोई महान बड़ी मुश्किल **से**।।)
मुक्त होता **कोई महान्**-------
गलत कर्मों से ही **हम**
गलत कर्मों **ही से** हम मुश्किलों में **पड़ते हैं।**
*परमात्मा हमें मुश्किल में नहीं डालता।
(गलत कर्मों **से ही**)२ हम मुश्किलों में पड़ते हैं।
(सही कर्मों का होता ज्ञान बड़ी मुश्किल **से**।।)२......

**सत्य सर्वत्र** * अंतिम बात ध्यान से
(सत्य सर्वत्र **सर्वमय उसी में हैं संसार**।) 2
(पथिक में रहता यही ध्यान **बड़ी मुश्किल से**।।) 2
मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल **से**।
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल **से**।।

* यही पर ये मुश्किलें आसान हो सकती हैं आप निराश न हों और सब जगह, सब ओर, सब दिशाओं में मुश्किलें बढ़ती जायेंगी। धन के पीछे दौड़ो- मान के पीछे दौड़ो, पद के पीछे दौड़ो, कुछ बचाने दौड़ो, कुछ पाने दौड़ो-मुश्किलों से मुक्त नहीं हो सकते ।अगर मुक्त हो सकते हो तो केवल ज्ञान में अपने को देखो, मुक्त हो जाओगे। संभवतः समय हो गया होगा। अब आगे की बात सुनेंगे आप लोग

**सत् चित आनंद भगवान की जै**

।।ॐ।।

## नमो परमात्मने

# नित्य प्राप्त परम प्रेमास्पद परमेश्वर की प्रिय आत्माओं

जो कुछ आप सुनते हो, ये शब्द तो पशुओं के कान में पहुँच सकते हैं। इन शब्दों का अर्थ एक बालक भी लगा सकता है लेकिन इसके पीछे भाव और रहस्य क्या है- ये आप जैसे विद्वान ही जान सकते हैं। यही कारण है कि कहीं हम शब्द में अटके हैं, कहीं हम रूप में अटके हैं कहीं हम स्वाद में अटके हैं। अगर ये 5 ज्ञानेन्द्रियां आपके पास न होतीं तो संसार का कुछ पता न होता। इतनी देर में ये शब्द बहुत विचारणीय हैं। आपका संसार क्या है? 5 ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध पकड़ा जाता है। इसी में सारा संसार सम्मोहित हैं। इसमें जो सुख की प्रतीति होती है वह मन भोगता है और हम सब लोग अभी इसी में अटके हैं- हमें सुख चाहिये दुख न चाहिये। आप जितने लोग बैठे हो- आप सबको सुख चाहिये और जितना आप संसार में जब तक प्रयत्न किये खिलौने से शुरू किया था। माँ की गोद से उतर करके। माँ की गोद से उतर कर के खिलौने में सुख माना था और मरघट में पहुँचे गये ओर सुख तब भी न मिला। ये शब्द थोड़ा विचार करने योग्य है। मैंने क्या कहा- सुख नहीं मिला। आप जो समझदार लोग हैं याद रखें-अभी तक इतनी उम्र बीत गयी सबकी और सुख के पीछे-पीछे भागते-भागते याद रखना आज तक आपको सुख प्राप्त नहीं हुआ प्रतीति हुई हैं। थोड़ा ध्यान देना इस शब्द पर प्रातः काल जो आपको भोजन का, नाश्ते का या किसी के मिलन का सुख मिला है वह मिला नहीं, वह नहीं रह गया प्रतीति हुयी है। जैसे सिनेमा में आप जो कुछ सुनते हों, देखते हों उसमें सुख प्राप्त नहीं होता, सिनेमा में दृश्य की प्रतीति होती है। ‘‘**प्रतीति**’’ उसको कहते

हैं - दिखता तो है लेकिन मिलता नहीं। तैसे संसार का सुख उसे कहते हैं- जो प्रतीत होता है प्राप्त नहीं होता। यह बात आप जैसी बुद्धिमती देवियों के लिये, विचारवान मनुष्यों के लिये बहुत समझने योग्य हैं और न समझोगे तो जाओगे कहाँ?

सुख के पीछे-भागते हुये शरीर वृद्ध हो जायेगा, आँख देखने लायक न रहेंगी लेकिन देखने की तृष्णा बनी रहेगी। कान सुनने लायक न रहेंगे लेकिन सुनने की तृष्णा न मिटेगी। दांत गिर जायेंगे लेकिन स्वाद की तृष्णा न मिटेगी। आपके घर में कोई बूढ़ा हो तो उससे पूछा लेना और आप सावधान हैं- तो अभी से तैयारी करना। **काहे की तैयारी?** कुछ छोड़ने की नहीं, कुछ और पकड़ने की नहीं, कहीं भागने की नहीं, ये जान लेने की, इतना ही जान लेना है जिस सुख के पीछे हमने इतनी उमर बिताई है-आज तक सुख प्राप्त नहीं हुआ और प्राप्त होता तो उसकी कामना न रह जाती। जैसे आप किसी व्यक्ति से मिलने जाते हैं। अगर वह मिल गया तो उसकी कामना न रह जायेगी। कोई वस्तु आप लेने जाते हैं यदि मिल गयी हैं तो उसकी कामना न रह जायेगी। तैसे सुख अगर आपको मिल गया होता सबेरे तो फिर उसकी कामना न रह जाती। इतनी उमर बीत गयी सुख की कामना का अंत नहीं हो रहा और आपके शरीर की शक्ति का, उम्र का, आयु का अंत होता चला जा रहा है।

तो इतनी देर बाद आप लोग यह बात याद रखें प्रतीति और प्राप्ति। सुख प्राप्त नहीं होता **प्रतीत** होती है। अगर इतनी बात भी समझ में नहीं आयी तो यहाँ जो वेदान्त की और ब्रह्म की चर्चा चलती है। वह भला कहाँ समझ में आयेगी? सुनोगे ! लगेगा अच्छा ! लेकिन तुम जहाँ के तहाँ रहोगे। आज ही प्रवचन बांदा में नहीं हो रहा है कई बार हो चुका होगा। अनेकों महात्माओं के दर्शन किये होंगे। महात्माओं के वचन अच्छे लगे होंगे और वचनों से ज्यादा महात्मा अच्छे लगे हों किसी को। लेकिन आप जहाँ के तहाँ ही रह गये। न मोह छूटा और याद रखना इन विद्वानों महापुरुषों के और गीता के और वेदान्त के वाक्यों से आपका घर नहीं छूटना है, भूमि नहीं

छोड़नी, परिवार नहीं छोड़ना है- **ममता छोड़नी है- लोभ छोड़ना है।** अधिकार नहीं छोड़ना है, **अभिमान छोड़ना है।** कितना सरल नुस्खा है, कितनी सरल मुक्ति का उपाय और यदि अगर ये बात सरल समझ में न आयी तो जाओ तीर्थों में, बदरीनाथ से, हिमालय से लेकर के कन्या कुमारी तक रामेश्वरम् तक घूम जाओ दुख न मिटेंगे सुख मिलेगा। सुख मिलेगा। बोल गये, गलत सुख प्रतीत होगा प्राप्त न होगा और दुख नहीं मिटेगा। अपनी ओर देखो आज तक इतनी उमर बीत गयी। **बालकों से नहीं** कहा जा रहा है, आप जैसे वयोवृद्धों से भी कहा जा रहा है- इतनी उमर बीत गयी-कोई ईमानदारी से बता दो कि आज तक आपको सुख प्राप्त हुआ कि प्रतीत हुआ? प्रतीत नहीं हुआ है प्राप्त हुआ, **देखने का सुख, भोगने का सुख, स्वाद का सुख।** ये प्रतीति और प्राप्ति।

प्राप्त उसे कहते हैं जिसकी कामना न रह जाये। कामना बताती है कि अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। यह बात इतनी देर में आप समझ ले। तो क्या करो? अभी तो कही दुख की बात अब आयी सुख की बात। सुख पाना चाहते हो और दुख से बचना चाहते हो अभी तक तुम दुख से भी नहीं बच पाये चाहे भजन किया हो, चाहे कीर्तन किया हो, चाहे जप किया हो, चाहे गीता के पाठ किये हों, चाहे रामायण के पाठ किये हों-दुख से नहीं मुक्त हो पाये। दुख सुख के पीछे चल रहा है। जैसे सिक्के के पीछे दूसरा पहलू होता है तैसे सुख के पीछे दुख चल रहा है, तुम्हारे अनजाने। अगर सुख तुम्हारे सामने है तो दुख उसी सामने के पीछे है पता नहीं कब दुख आ जाये और आ चुका है जाने कितनी बार। आप दुख से न बच पाओगे। कोई उपाय नहीं है। न पत्नी के सहारे, न पति के सहारे, न माता-पिता के सहारे, न धन के सहारे, न मंदिर के सहारे, न मूर्ति के सहारे। मैं तो यहाँ तक कहने की हिम्मत करता हूँ अगर तुम्हें भगवान राम और कृष्ण भी मिल जायें तब भी तुम दुख से न बच पाओगे लेकिन इसका मतलब यह न लगाना कि उनका मिलना बेकार होगा। भगवान मिल जायेंगे लेकिन भगवान की बात आप न मानोगे। बड़ी कड़ी बात। भगवान को लोग लाखों लोग मानते हैं लेकिन भगवान की बात नहीं मानते।

गीता को लाखों लोग पढ़ते-मानते हैं। गीता की बात नहीं मानते। रामायण के पाठ अखंड लाखों लोग कर रहे हैं हमारे भारत वर्ष में रामायण की एक बात मानने वाले हमें मुश्किल से मिलते हैं। एक बात। कहोगे-कौन सी एक बात? हम कहेंगे- आज हमें एक बात याद आ गयी अगर तुम्हें भी याद रह जाय। रामायण में लिखा है-**''काहू न कोऊ सुख दुख कर दाता''।** लिखा है कि नहीं लिखा है। अगर आज से तुम रामायण के इतने कांडों में एक बात याद रखो कि रामायण कहती है न कोई सुख देने वाला है न कोई दुख देने वाला है-अगर इतनी ही याद रहे तब क्या? आज ही से तुम्हारी आसक्तियां ममता बंधन सब समाप्त हो जायेंगे। हो जायेंगे कि नहीं? कोई सुख देने-----जहाँ आपकी आसक्ति है इसलिए सुखदाता। पति सुखदाता, पत्नी सुखदाता, धनसुखदाता, भोजन सुखदाता, ये प्रवचन सुखदाता, यह महात्मा सुखदाता। क्यों दौड़ते भागते हो? सुख देने वाले के पीछे। क्यों नफरत करते हो? दुःख देने वाले के पीछे। ईर्ष्या, क्रोध, कलह क्यों होता है?- ये दुख देता है। सास, बहू, पति, पत्नी जिसको तुम दुःखदाता मान लोगे, उससे आपका द्वेष हो जायेगा, ईर्ष्या होगी, कलह होगी, क्रोध आयेगा, निन्दा होगी, बच पाये आज तक? बहुत मुश्किल से कोई हिम्मत करेगा जो हमारे सामने कह जाय अब हमें न किसी से ईर्ष्या है, न द्वेष है, न कलह है, न क्रोध है, **क्योंकि हमें दुखदाता कोई संसार में दिखता नहीं है।**

जब तक सुखदाता दिखेगा तब तक दुःखदाता से दुख देने वाले से तुम बच ही नहीं सकते। अगर ये समझ में आ जाये। ३ शब्द हम कहेंगे- सुख कोई देता नहीं है तुमने मान लिया है इतनी बड़ी आबादी है बांदा में है तुम क्यों यहाँ इतनी ठंड में आये हो क्योंकि यहाँ तुमने सुनने में सुख माना है। अच्छा लोग क्यों घर में बैठे हैं? उन्होंने घर में बैठने में सुख माना है- शतरंज ताश खेलाने में सुख माना है। कीमत दे करके, टिकट ले करके सिनेमा क्यों जाते हैं, देखते हैं? सुख माना है। जहाँ तुम सुख मान लोगे तुम्हें जाना पड़ेगा। तुम्हें उसकी कीमत देनी पड़ेगी। यहाँ सुख माना है इसलिये आ गये हो। यह माना हुआ सुख है, रहेगा नहीं। चाहे सुनने का हो, चाहे देखने का हो, चाहे

स्वाद का हो, चाहे स्पर्श का हो। एक शब्द याद रखना- **''संसार में जितनी सुख की प्रतीति होती है-मानने से होती है और एक जगह पर जहाँ हम सुख मानते हैं वहीं कुछ देर बाद हमें दुःख की प्रतीति होने लग जाती है''।** पत्नी से सुख, उसी पत्नी से दुख, पति से सुख, उसी पति से दुःख? लड़ाई झगड़े क्यों होते हैं? बहू से बड़ा सुख, उसी बहू से झगड़े, आप ही लोग कहते हो- हम तुम्हारी शक्ल नहीं देखना चाहते। अभी तो बड़ा सुखदायी था वह। क्यों? यानि जिस भोजन में सुख अब थाली हटा देते हो। क्यों हटा देते हो। माना हुआ सुख है। जितनी देर मानो, उतनी देर है, न मानो तो खतम। कितनी बढ़िया बात है जीवन दर्शन में। अगर ऐसी बातें आप याद रखो तो तुम्हारे तमाम पाप समाप्त हो जायें क्योंकि जितने पाप बनते हैं सुख के पीछे बनते हैं और जितने पाप बनते हैं दुख के पीछे बनते हैं। दुःखदाता से ईर्ष्या, द्वेष, कलह, क्रोध होता है और सुखदाता से ममता, आसक्ति, लोभ, अभिमान तमाम दोष बन जाते हैं। समस्त दोषों की जड़ है सुख और दुःख। दूसरे शब्दों में, शास्त्र के शब्दों में-राग और द्वेष। एकमात्र सुख और दुःख।

अगर रामायण की गीता की बातें याद आ जायें। गीता में बताया है- गृहस्थी में **'राग द्वेष वियुक्तैस्तु विशयानिन्द्रियैश्चरन्'** (2/64) तुम देखो, सुनो, खाओ, स्वाद लो लेकिन एक शर्त है रागद्वेष वियुक्त राग द्वेष न हो। जब राग न करोगे तो द्वेष भी न होगा और राग करोगे, ममता करोगे, आसक्ति करोगे तो द्वेष से बच ही नहीं सकते, पाप से बच ही नहीं सकते। चाहे जितनी पूजा करो, चाहे जितने रामायण के पाठ करो, चाहे जितने मंदिर बनाओ, चाहे जितने तीर्थों में जाओ। जाके देख लो और तुम नहीं जा सके हो तो जाने वालों को देख लो। किसी के दुख मिटे? घर में अपने झाँक लेना तुम्हारे घर में दादी दादा, काका चाचा हैं। उनके जीवन में झाँक के देख लेना-वो भी दुखी होते हैं कि नहीं। एकमात्र राग और द्वेष। कहीं मत भटको आज की चर्चा अगर तुम्हारी समझ में आ जाये तो यह भगवत प्रसाद समझो- **'प्रसादः सर्व दुःखानां।।** यहाँ अगर लड्डू बँटे तो आफत आ जाये। प्रसाद शायद बटेगा आज कुछ देखो क्या दशा होती है। यहाँ भगवान कहते हैं-

**प्रसादः सर्व दुःखानां प्रसाद** से, जिससे सर्व दुखों का अंत हो जाये वह प्रसाद। कौन से दुखों का? वियोग का दुख न हो- है हिम्मत किसी की? सास बहुत डाँटती है तो कह दो-हमें वियोग का दुःख न होगा। बहू बड़ी कर्कशा लड़ाका मिली है तो कहो-हमें वियोग का दुख न होगा। ऐसा कहीं न कह देना। जिससे तुम्हारा राग नहीं है कह दो। जल्दी मरे, छुट्टी मिले। बूढ़ा पिता मर जाये कह दो रकम दबाये बैठा है- हमें वियोग का दुःख बिल्कुल न होगा? कहीं इसको तुम त्याग न मान लेना। वियोग का दुख अगर होता है तो तुम्हारे भीतर मोह है। अपमान का दुख होता है तो तुम्हारे भीतर अभिमान है। कामना की पूर्ति न होने का दुख है, किसी सुख प्राप्त न होने का दुख होता है तो तुम्हारे भीतर कामना है-कामना है। यानि जितने दुख हैं तुम्हारे किसी दोष के कारण हैं। तुम पूजा पाठ जप कीर्तन जो कुछ भी करते हो, एक काम कर डालो। एक बात याद आ जाये-हम जब कभी दुखी हैं परिवार के बीच में, पति पत्नी के बीच में, सास बहू के बीच में-इतना ही याद आ जाये कि वहां हमने सुना था वहाँ सत्संग में-क्या सुना था? **ऐसा कोई दुख तुम बता दो कि तुम्हारा दोष न हो।** जितने दुख होते हैं वह दोष के कारण होते हैं। दोष कहाँ से बने हैं? अपना मानने से बने हैं, सत्य नहीं है। मान लिया तो सुख और मान लिया तो दुःख। कितना छोटा सा वाक्य है श्लोक नहीं याद करना-सुख मान लिया है तुमने इसलिये प्रतीति होती है। दुख मान लिया है तुमने इसलिये दुख की प्रतीति होती है। दो चीजें तो ये हो गयीं। और तीसरी चीज और बड़े विज्ञान की-तमाम शास्त्रों का निष्कर्ष निचोड़ है। वह क्या? संबंध तुमने मान लिया है-मेरे पति, मेरे पिता, हमारी माता झूठे, यह सब झूठे संबंध हैं रहेंगे नहीं। सबका वियोग हो जायेगा। जब आये थे, तो कोई संबंध न था। जाओगे तो संबंधी तो यहाँ रह जायगा-संबंध तुम्हारे साथ जायेगा। फिर अगले जन्म में वहीं से शुरु होगा। ये तुम्हारी लीला है-नर्क और स्वर्ग ये मन ही बनाता है। मन मान लेता है सुख, मान लेता है दुख। भोगता है फिर आसक्त हो जाता है, ममता करता है। ये लोभ मोह किसने बनाये हैं-भगवान ने नहीं बनाये हैं। तुम्हारे भीतर, अपना मानने से। धन को अपना मान लिया तो लोभ हो गया,

परिवार को अपना मान लिया तो मोह हो गया, पद को अपना मान लिया तो अभिमान हो गया। बताइये ये सब तुम्हारी रचना है, तुम्हारे मन की लीला है कि और किसी की? कोई न समझा पायेगा अगर तुम्हारी समझ में नहीं आता, तो आ तो गये हो वहीं लौटके जाओगे। तुम्हारे दुखों का अंत न महात्मा कर पायेंगे, न गुरू कर पायेंगे। यहाँ तक कि भगवान कृष्ण और राम भी किसी के मन की पूर्ति के अनुसार सुख नहीं दे पायेंगे। उन्हीं के रहते लोगों को दुखी होना पड़ा। कृष्ण के रहते दुखी होना पड़ा, राम के रहते दुखी होना पड़ा। यहां तक कि भगवान ने बड़े दुःख की निवृत्ति के बड़े-बड़े उपाय किये। अंत में पांडव लोग इतना राज्य वैभव पाकर के भी हिमालय गलने के लिये चले गये। सुख से कि दुख से? और आप लोग क्या इतना रामायण, गीता सब पढ़ते हो उसी सुख के पीछे भागते हो।

यहाँ हम आप से कुछ लेने नहीं आये हैं-न भेंट, न विदाई, न भोजन, न कुछ। लेकिन आप पुण्यवान हैं जो यहां आ गये हो। आपको केवल जाग्रति संदेश दिया जा रहा है। मानव हो, पशु को नहीं जगाया जा सकता। तुम मानव हो, जाग जाओ अपने जीवन के प्रति। गीता में कहा है **''तस्यां जाग्रति संयमी'** अपने जीवन के प्रति जाग जाओ। पशु भी जागता है। भोजन के प्रति सब जागते हैं। पैसा के लिये सब जागते हैं सब भागते हैं। मान पदाधिकार के पीछे दुनिया परेशान। मूर्ख नहीं बड़े विद्वान, चपरासी नहीं बड़े-बड़े प्रधान, सबसे चोटी के पदाधिकारी लोग। ये क्या है? वही सुख की आशा। मैं क्या कहता हूँ छोड़ दो। सुख छोड़ो नहीं, संबंधी छोड़ो नहीं, धन छोड़ो नहीं- छोड़ो उसे जो तुम्हें दुःख देता है। धन दुःख नहीं देता, लोभ दुःख देता है, याद रहेगा? पदाधिकार का छूटना दुख नहीं देता, अभिमान दुःख देता है- हाय मैं इतने बड़े पद में था चला गया? इसी प्रकार वियोग दुःख नहीं देता-मोह दुख देता है। हमारे पति हमारी पत्नी, हमारा पुत्र रह गया। कौन दुःख देता है भगवान? कौन दुःख देता है संसार? कौन दुःख देता है वियोग? नहीं मोह। कितने छोटे-छोटे वाक्य हैं। अगर आप विचारवान हैं तो आज का आना जीवन भर के लिये आपको मुक्ति का संदेश है। वरना कहीं तीरथ में

तुम्हें मुक्ति न मिलेगी। यह तो पंडित लोग तो तुम्हारी मूर्खता को देख करके कहते हैं- अरे बाबा घर से निकलो-गंगा नहाओ। शायद कोई महात्मा गंगा किनारे मिल जाये, सत्संग करो। कहीं-कहीं कहा गया है गुरू न करोगे तो तुम्हारे कीर्तन पूजा पाठ कुछ न फल देंगे। सब निष्फल हो जायेगा। इसका मतलब क्या? निष्फल जायेगा, इसका मतलब-जब तक तुम्हें विवेक न होगा, जब तक तुम्हें यथार्थ आत्म-ज्ञान न होगा तब तक तुम्हारी पूजा-पाठ जप कीर्तन सब निष्फल जायेंगे- क्यों? अहंकार सब खा जायेगा। अहंकार फल का लालची है भोग का लालची है। सुन रहे हो ना।

बड़ा गुरू का मतलब नहीं-कान में मंत्र सुन लिया - नमः शिवाय हम गुरू हो गये हम शिष्य हो गये। अरे! इतने से काम न चलेगा। गुरू का मतलब है ज्ञान में जागो-ज्ञान में जागो, ज्ञान में देखो और ज्ञान में जागने से मोह न रह जाये-परिवार बना रहे। लोभ न रह जाये-धन, भूमि, भवन बना रहे। अभिमान न रह जाये-पदाधिकार बना रहे, डाक्टर, इंजीनियर, कलाकार, कमिश्नर कोई भी बना रहे अभिमान न रह जाये। अब आप पूछेंगे कैसे न रहेगा-इसका क्या उपाय है?आप जाने कैसे न रहेगा तो हम कहेंगे-आया कैसे है? कोई जानते हो आपके अन्दर मोह कैसे बढ़ा है, लोभ कैसे बढ़ा है, अभिमान कैसे बढ़ा है, कोई पढ़े-लिखे आदमी बताओ-ये कैसे बढ़ा? कोई एक उत्तर दे दो। कैसे बढ़ा मोह? कैसे बढ़ा लोभ? भगवान ने लगा दिया? एक ही उत्तर तुम्हें देना है न तुम दे सको तो अब याद रखो। जानते हो तो जानते हो, न जानते हो तो अब जान लो मोह कैसे बढ़ा?लोभ कैसे बढ़ा? अभिमान कैसे बढ़ा? एक शब्द-एक मंत्र, एक मंत्र के स्मरण से बढ़ा है। कौन सा मंत्र, मेरा है-मेरा है, मेरा है-याद रहेगा मेरा-मेरा परिवार, मेरे पति, मेरी पत्नी, मेरा पुत्र, मेरा धन, मेरी भूमि, मेरा भवन, मेरा पदाधिकार, मैं इतना ऊँचा, मैं ऊंचा विद्वान, मैं इतना बड़ा सन्यासी, मैं इतना बड़ा गुरू - अरे गुरू होने का अभिमान भी दुख देगा। कोई बचा नहीं सकता। अहंकार जब तक कुछ बनेगा-गुरू बनेगा तो, चेला बनेगा तो, पति पत्नी, पुत्र बनेगा तो, कोई बताओ-क्या उपाय है दुख से मुक्त होने का? इतने लोग बैठे हो कोई

बताओ? क्योंकि वियोग होगा ही, पद छूटेगा ही, अधिकार छूटेगा ही। क्या उपाय है-तुम दुख से कैसे बच सको। बड़ा सरल उपाय है-ये बात हम अपने मनसे गढ़ के नहीं कह रहे हैं। भगवान परम गुरू भगवान कृष्ण से अर्जुन ने प्रश्न किया और उन्होंने बड़े संक्षेप में उत्तर दिया-दो अक्षरों का यह मंत्र यह जीव जप रहा है दो अक्षर। कौन दो अक्षर? ममेति यानि ये द्वयक्षर भवेन मृत्यु-दो अक्षर मृत्यु की ओर ले जाते हैं मृत्यु की ओर, दो अक्षर में मुक्ति मिल जाती है।

इतने जो लोग बात कर रहे हैं इनकी मुक्ति युक्ति की कोई जरूरत नहीं। हाँ! हमें लगा दिया बोलो। ये तो मुक्त हैं सब, इनको कोई जरूरत नहीं है। सब मुक्त खड़े हैं कि नहीं। यह सब लीला चल रही है और रहने दो। उनको करने दो हम तुमसे कह रहे हैं। अरे, उनको क्यों मना कर रहे हो तुम्हें क्या अधिकार है? उनको जो जरूरत है वो अपना कर रहे हैं, हम तुम्हें बता रहे हैं, तुम्हें बता रहे हैं- कि यहाँ आ करके भी सैकड़ों लोग ऐसे हैं-नमूना ले रहे हैं-बाबा कैसे बोलते हैं नमूना। हमको अभी पास कर देंगे किसी को फेल कर देंगे। हम चिल्ला-चिल्ला करके मरे, तुम जरा देर में पास कर दो और फेल कर दो और अपना पता नहीं है? ऐसा है ना। और इसकी क्या लीला है? कितना घोर अहंकार अज्ञान में है? तो तमाम चीजें, और एक बात अंत में कह दें-जब तक हमारे तुम्हारे जीवन में धन की मांग है, जब तक हमारे तुम्हारे जीवन में मान की मांग है, जब तक हमारे जीवन में अधिकार की मांग है जब तक हम संसार से कुछ चाहते हैं, तो कोई ज्ञानी, कोई गुरू, कोई भगवान, हमें मुक्ति नहीं दे सकता। याद रहेगा कोई भगवान कोई मुक्ति दे ही नहीं सकता। भक्ति दे ही नहीं सकता, शांति दे ही नहीं सकता। तीन चीजें नहीं मिल सकतीं। संसार से जब तक हम कुछ चाहते हैं तब तक और संसार से कुछ नहीं चाहते हैं तो हमें कहीं भागने की, कहीं जाने की, कहीं गिड़गिड़ाने की जरूरत नहीं है क्योंकि संसार की चाह ने ही हमें बांध लिया है। चाह का अंत होते ही हमारी स्वतंत्रता अनंत हो जाती है। उस स्वतंत्रता का अंत नहीं होता। कई बातों का इशारा हम कर गये। एक बात बीच में कह गये हमें तुम्हें

लोभी मोही अभिमानी किसने बनाया? एक मंत्र के जप ने। कौन एक मंत्र का जप? मेरा-मेरा-मेरा। बोलो समझ में आया कि नहीं। इतनी बड़ी आबादी है बांदा में लेकिन मेरे नहीं हैं तो हैजा में तमाम मर जायें-मंदिर जाओगे-हे हनुमान जी बड़ी दया की, हमारा परिवार बच गया। बाल बांका नहीं हुआ और सब मर गये। ......चलो इतना सुन चुके बहुत है।

नारायण- तो एक बात तो आप समझ गये- आपको लोभी, मोही, अभिमानी किसी ईश्वर ने नहीं बनाया, किसी शैतान ने नहीं बनाया। आपके अपना मेरा मानने से हम लोग बने हैं मेरा। अब मुक्ति कैसे मिलेगी? एक ही मंत्र-एक ही मंत्र है यानि ममेति मेरा-द्वयक्षर भवेन मृत्यु-दो अक्षर का जीव सुमिरन कर रहा है। मेरा-मेरा-मेरा बंध गया। तीन अक्षर का मंत्र जपने लग जाये न मेरा, न मेरा, न मेरा अब मुक्त हो गया। कितना छोटा सा मंत्र है न मेरा। ये जो देखो मेरा नहीं है। आज से ईमानदार बन जाओ। आप हमें डांटें नहीं कि हम क्या बेईमान हैं? जो तुमने बनाया नहीं जो तुम्हें मिला है उसको अपना मानते हो। सरकार के आफिस में लाखों लोग काम करते हैं? आफिस के टेबुल को, कुर्सी को, चपरासी को मेरा-मेरा ऊपर से कहते हैं-भीतर से सब सरकार का। ऊपर से मेरा भीतर सरकार का। तो जब कहीं तबादला होता है आफिस के टेबुल कुर्सी कमरा कबाड़ा बेचते हैं? सरकार है कहाँ जायेंगे फिर मिल जायेगा। इतने भी ईमानदार हम लोग नहीं हैं जितना सरकारी कर्मचारी ईमानदार है। बड़ी जल्दी बस तबादला होता है, चले जाते हैं। हम लोग इतना कब्जा जमा चुके हैं। मिला है और मिलते ही मेरा मेरा मेरा बताओ ईमानदार हो कि बेईमान हो। बताइये और ये बेईमान आदमी मंदिरों में जाये और भगवान को फुसलावे लड्डू पेड़ा चढ़ा करके, हे भगवान दया करो-मेरा पुत्र बचाओ, मेरी जमीन बचाओ-मेरी बचाओ तो भगवान हो नहीं तो तुम्हें फेल कर देंगे। ये पूजा? ये स्तुति? ये प्रार्थना? ऐसा धोखा चल रहा है इसी धोखे के कारण जीवन बीत गया। हमारी प्रार्थनायें झूठी हैं, हमें विवेक नहीं है और **गुरू के संग में विवेक न हो तो गुरू का भी अनादर है।**

**गुरू सत्संग हो और विवेक न हो, श्रद्धा हो सत्संग न हो, सत्संग**

**हो तो विवेक न हो और विवेक न हो मोह भ्रम बना रहे, हो ही नहीं सकता।**

**'होय विवेक मोह भ्रम भागा'** संत कह रहे हैं कितने बरस सत्संग करके बीत गये और न मोह दूर होता है और न भ्रम दूर होता है- खिलवाड़ है। अहंकार तृप्त हो रहा है। कहीं धन पा करके, कहीं मान पा करके, कहीं सुख पा करके। महाराज आते रहो गनीमत है कभी ता विवेक होगा। जो आज समझ सकते हो शायद बारह वर्ष बाद समझो लेकिन समझना पड़ेगा। क्यों समझना पड़ेगा? लाख कोशिश करो संसार में कुछ भी मोह के रहते हुए वियोग का दुःख नहीं मिटेगा, अभिमान रहते हुये अपमान का दुःख नहीं मिटेगा, लोभ रहते हुए हानि का दुःख नहीं मिटेगा। कोई भगवान संसार में ऐसा नहीं है जो तुम्हारा दुख मिटा दे मोह के रहते, लोभ के रहते, अभिमान के रहते, कामना के रहते। अब आप कहोगे- ये कैसे छूटेगा? एक ही मंत्र है मेरा-मेरा न कह करके-मेरा अधिकार, मेरा परिवार, मेरा धन, मेरी भूमि, मेरा मकान, मेरे नाती पोते-अब आप बच नहीं सकते चाहे कितने पूजा पाठ कीर्तन करें दुःख आपको भोगना पड़ेगा और अगर दुख से बचना चाहते हो-मेरा नहीं है सब भगवान का है, सब भगवान का है, सब भगवान का है। दिया है पता नहीं कब छूट जाये, मिला है पता नहीं कब चला जाये। इतना छोटा सा मंत्र 'न मम' मेरा नहीं है मेरा नहीं है। ये ईमानदार आदमी का काम है। ये धर्मात्मा आदमी का काम है। मेरा ऊपर से न कह देना पति से कि तुम मेरे नहीं हो, तुम पत्नी से न कह देना अब समझ में आ गया तुम मेरी नहीं हो चाय मिलना मुश्किल हो जायेगा। ऊपर से किसी से न कहो तुम मेरे नहीं हो भीतर से तय कर लो-यह सब परमात्मा का क्या है? उत्सव है। उत्सव है, परमात्मा का, सब परमात्मा ही की जीवात्मा है मेरे नही हैं।

ईमानदारी से बताओ माताओं बड़ी अकड़ के साथ कहती हो- इतना पाला पोसा दूध पिलाया। बताओ तुमने दूध बनाया है, भोजन खा करके इतवार के दिन हाथ बनाया कि सोमवार के दिन पैर बनाया है, क्या तुमने किया है? और मेरा-मेरा इतनी अकड़? व्यर्थ का अभिमान है अज्ञान में। कितनी ममता कितना मोह-महाराज कुछ नहीं करना है कहीं मत

भागो-एक बार होश में आ करके गुरू ज्ञान में जाग्रत हो जाओ। गुरू ज्ञान कह रहा हूँ अच्छा ऐसा कोई ईमानदार धर्मात्मा यहाँ पिता है जरा हमारे बड़े कड़े शब्द हैं- ऐसा कोई पिता माता है जो अपने पुत्र को अपनी पुत्री को बंधन में न जकड़ा हो, है कोई पिता। बंधन में कैसे? पैदा होने के बाद आँखें खुली तो रूप देखा और रूप देखने में कहना शुरू कर दिया-ये तुम्हारी माता है मम्मी है, ये तुम्हारे पिता हैं पापा हैं और बालक सुन रहा है अभी बोल नहीं पाता। थोड़े दिन में वही बोलेगा जो तुमने सुनाया है मेरा-मेरा-मेरा। बोलो तुमने अपने परिवार के नाती पोतों, पुत्रों को तुमने मोही बनाया है कि नहीं अभिमानी बनाया है कि नहीं। तुम्हारे पिता ने---------

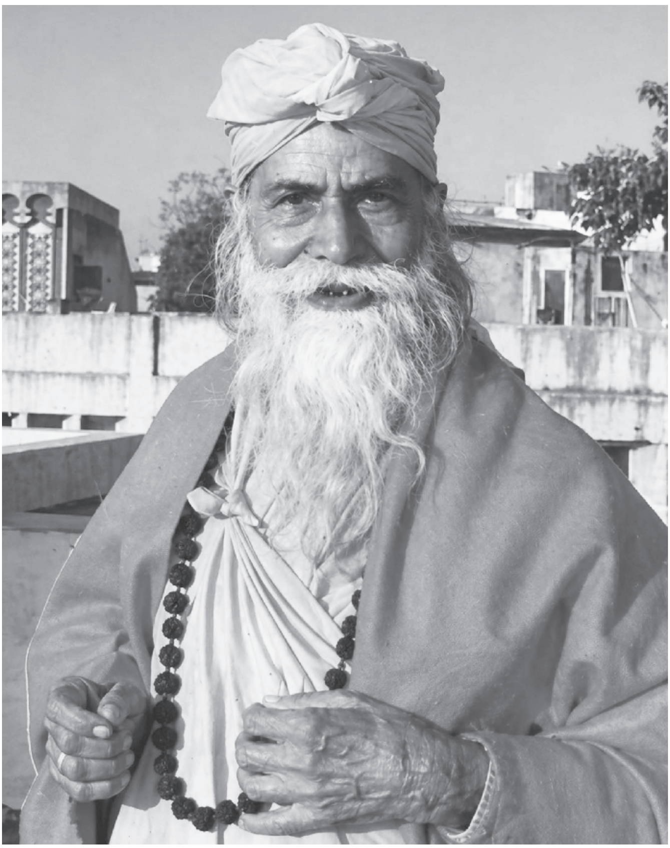

# गुरूपूर्णिमा बाराबंकी

।।ॐ।।

# सोचो! जिससे सब कुछ मिलता है

कितना-कितना जीवन के साथ हो चुका उसकी याद नहीं आती और जरा सी बात में हम क्रोधित हो जाते हैं अमुक ने (ऐसा कह दिया)३। होश ही नहीं है किसी को होश नहीं है। **''पश्यन्ति ज्ञान चक्षुषा''**, **''विमूढ़ानानु पश्यन्ति''** भगवान कह रहे हैं जिनकी ज्ञान दृष्टि खुली है वही देख पाते हैं पीछे लौट करके कि पीछे क्या है? हम आगे देखते चले जाते हैं। आगे हैं नश्वर जगत, पीछे है शाश्वत, शांतिमय परमात्मा। अभी-अभी, कभी नहीं अभी जो अभी है उसको समझते नहीं हैं और जो कभी मिलेगा उसकी ओर भाग रहे हैं लेकिन बुद्धिमानी की बात तो **देखो- अभी-अभी है उसका होश नहीं है और जो कभी मिलेगा तो बड़ा प्रयत्न कर रहे हैं जानें क्या-क्या**

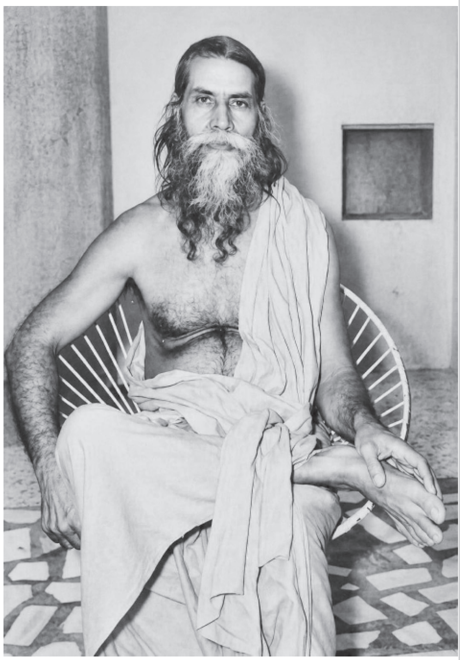

**कहाँ-कहाँ जा रहे हैं। किसके-किसके हाथ जोड़ रहे हैं और जो मिला है उसका ध्यान नहीं आ रहा है।** ये सत्संग न मिलने के कारण और **सत्संग मिलते हुये इसका आदर न करने के कारण हम लोग सदा रहने वाला आनंद तो चाहते हैं** सुन रहे हो? एक समझदार पढ़ी लिखी बालिका भी समझ सकती है। तुम कौन सा सुख चाहते हो सदा रहे कि न रहे? कौन सा संयोग चाहते हो सदा रहे कि न रहे? कौन सा लाभ चाहते हो सदा रहे कि न रहे, कोई ऐसा न होगा जो सदा रहने वाला लाभ न चाहता हो। सदा रहने वाला संबंध न चाहता हो, सदा रहने वाला सुख आनंद न चाहता हो। कोई ऐसा है ही नहीं, बालक से लेकर बूढ़े तक, और मूर्खता क्या है? चाहते हैं सदा रहने वाला आनंद और खोजते कहाँ हैं, रहेगा नहीं जो सदा न रहेगा उसमें आप सुख खोज रहे हो कि नहीं, क्यों भाई? कौन ऐसा व्यक्ति है जो ये न जानता हो? पति रहेंगे कि पत्नी रहेगी कि पुत्र रहेगा कि माता-पिता रहेंगे कि तुम्हारी जवानी रहेगी कि तुम्हारा शरीर रहेगा ? कोई सदा रहनेवाला नहीं है। तुम्हारी बुद्धि कहती है सदा रहेगा। नहीं रहेगा सबको मालूम है। अभी न मालूम हो तो बता दो और चिल्लाकर बतावें। जो सदा न रहेगा वह सबको मालूम है।

जन्म से लेकर के माता और अंत में नाती पोता जो मिले हैं सब छूट जायेंगे, भूमि भवन सब छूट जायेगा, जो मिला है सब छूट जायेगा और तुम उसी में सुख मानते हो और प्रार्थना करते हो भगवान से- हे भगवान हमारा दुख दूर करो। भगवान कहते हैं हम ही अपना दुख दूर नहीं कर पाये तो तुम्हारा क्या करेंगे। राम अपना दुख दूर नहीं कर पाये। लीला है उनकी, हमारी तरह वो नहीं हैं, राम अपना दुख दूर नहीं कर पाये। भगवान ईश्वर न करे राम की तरह तुम्हारे जीवन में दुख आ जाये, चौदह-चौदह बरस बन में रहना पड़े और रही सही सुन्दर पत्नी भी हर ली जाये। ऐसा किसी के जीवन में संकट आया है भाई आप लोगों के? क्या ख्याल है और चिल्लाते हो-हे भगवान हमारा दुख दूर करो। भगवान कहते हैं तुम हमारे समान दुखी हो जाना तब हमसे बात करना। कृष्ण के जीवन में कितना दुःख, जन्म से

लेकरके अंत में महाप्रयाण तक दुःख ही दुःख, लेकिन कौन सी ताकत है जो कृष्ण की मुस्कान में कभी थकान नहीं आयी, कमी नहीं आयी। यह है- **तत्वज्ञान का बल, सत्य ज्ञान का बल जिस ज्ञान के सहारे मनुष्य दुःखों को पार कर सकता है। जिस ज्ञान के प्रकाश में बंधनों का अंत कर सकता है।** जितने देवी देवता भगवान की शक्ति ही तो हैं और कोई थोड़े हैं लेकिन जिस ज्ञान के बल पर अगर उस ज्ञान में देखने लग जाओ-विनाशी को देखने वाले तुम देखो अविनाशी अपने अविनाशी स्वरूप को। **विनाशी पत्नी के शरीर में अविनाशी चेतन को देखो, विनाशी पुत्र के शरीर में अविनाशी चेतन तत्व को देखो।** कौन **तुम्हें भयभीत चिंतित** बना सकेगा क्योंकि- **''जहाँ विनाशी है वहीं अविनाशी है''।** अभी ध्यान से नहीं सुन रहे हैं कुछ लोग।

जहाँ विनाशी दिख रहा है वहीं अविनाशी मौजूद है। अविनाशी न होता तो विनाशी दिखता ही नहीं, इतना सरल दर्शन। जहाँ तुम्हारी देह है क्षण-क्षण बदलने वाली देह, वहीं कभी न बदलने वाला ज्ञान स्वरूप चेतन तत्व है। अभी-अभी किसी मंदिर में जाने की जरूरत नहीं है। इस देह रूपी मंदिर में बदलने वाली इस देह को देखो। चंचल मन को देखो। क्षण-क्षण विचारों में सरकने वाली बुद्धि को देखो, अहं के आकारों को देखो और सबको देखने वाले को देखो, वह चेतन स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, परम सत्य अभी-अभी है। देखने वाला सत्य, जो दिखता है, वह परिवर्तनशील है। सत्य है- जो दिखता है सब नश्वर, जो देखता है अविनश्वर, सदा अविनाशी। जपा करो तुम भगवान का नाम शायद जपते-जपते ही इस बात का बोध हो जाये कि देखने वाला अविनाशी और दिखता है सब विनाशी तो क्या छोड़ा है? क्या पकड़ा है? न छोड़ना है न पकड़ना है। जो छूटना है वह छूट ही जायेगा और सत्य को पकड़ा नहीं है क्योंकि वह है ही। सत्य नित्य उपस्थित है और हम खोज रहे हैं? लाखों लोग खोज रहे हैं। तीर्थों में, मंदिरों में। खोजने वालों को कभी परमात्मा न मिला है न मिलेगा। धोखा न खाना, कहीं प्रमाण न देने लग जाना कि इनको मिला उनको मिला। तुम्हारा भ्रम है। खोजने वालों को परमात्मा नहीं मिला जिन्होंने खोज बंद कर दी। ठहरे- **स्थितधीर्मुनिरूच्यते**

बुद्धि ठहरी नहीं कि प्रकाशक उसी समय मिल गया। जहाँ तुम हो वहीं दीख जायेगा कौन दीख जायेगा। कौन दीख जायेगा? जो है, है का नाम सत्य, है का नाम परमात्मा, लेकिन जो नहीं है उसके पीछे हम भाग रहे हैं, जो है-उसको हम भूले हुये हैं। परमात्मा को प्राप्त नहीं करना है। परमात्मा प्राप्त ही है। लेकिन आज की चर्चा में इतना होश रहे- विनाशी में अविनाशी को देखो।

**गीता का वाक्य** - गीता में भगवान कह रहे हैं-"**अविनाशी को विनाशी में देखो।**" देह विनाशी और चेतना अविनाशी। कहाँ खोजने जाओगे? यहीं विनाशी यहीं अविनाशी। जो देख रहा है वह ज्ञान अविनाशी और जो दिख रहा है सारा दृश्य-विनाशी बदलने वाला। तुम पुत्र को देखो आज देखो- साल भर में बदल जायेगा, पत्नी बदल जायेगी। ये शरीर जो बैठे हैं 5 साल पहले कैसे थे अब कैसे हो गये? आज जैसे हैं, अगले साल कैसे हो जायेंगे। रोक पाओगे कोई? आँख-कान काम न देंगे। **बुद्धि साथ देगी ?** कोई न रोक पाओगे। जो देखता है वह सत्य है वो देखने वाले तुम हो लेकिन तुम अपना नाम मत ले लेना। नाम तुम्हारे शरीर का है। जाति तुम्हारे शरीर की है। माता-पिता तुम्हारे शरीर के हैं, लेकिन **"ईश्वर अंश जीव अविनाशी"** का न कोई पिता है, न कोई माता है, न कोई जाति है, न कोई नाम है। वही तुम्हारा स्वरूप है। उसकी विस्मृति हो रही है तो परिणाम भोगना पड़ेगा। सत्य की विस्मृति और असत् की याद? असत् की याद करने से क्या होगा? वियोग का दुःख, हानि का दुःख, अपमान का दुःख, अभाव का दुख, रोग का दुःख, सारा संसार दुख से ग्रसित है क्योंकि असत् संगी है। बड़ा छोटा सा प्रश्न असत् संग का परिचय क्या है? आप कहते हैं **हम 12 बरस से सत्संग कर रहे हैं।** लेकिन- **सत्संग और भय? सत्संग और चिन्ता? सत्संग और दुःख? सत्संग और अशांति हो ही नहीं सकती। अशांति कहती है तुम असत् संगी हो, अशांति हमसे कहती है, भय हमसे कहता है तुम असत् के संगी हो। चिंता और दुख कहते हैं तुम असत् के संगी हो।** न रहने वाले का संग कर रहे हो तभी तो भय लग रहा है। न रहने वाले को तुम अपना रूप मानते हो- तभी तो चिन्ता हो रही है और तुम्हारे बाराबंकी के बैलों को, गधो

को, कुत्तों को, जानवरों को यदि हाथ जोड़ करके समझाया जाये तो तुम अपनी भैंस को समझा पाओगे भाई? है किसी में ताकत। तो भैंस तो दूर रही, भैंस जैसी बुद्धि वालों को समझाया जाये तो तुम यहाँ कोई ऐसे नहीं हो, सब समझ रहे हो लेकिन अपने घर जो जरा समझाने की कोशिश करना। तुम्हारी ताकत नहीं है तुम पत्नी को समझा दो, पुत्र को समझा दो और सत्संग में न आने वाले माता-पिता को तुम समझा दो, तुम्हारी शक्ति नहीं है। तुम समझो तो समझो लेकिन किसी को तुम समझा दो- तुम्हारी शक्ति नहीं है। तुम समझो तो समझो लेकिन किसी को समझा न पाओगे क्योंकि जो सुन चुके हैं, मान चुके हैं जो मान चुकी हैं, उनको समझाना बड़ा मुश्किल है। तुम मान रहे हो तो जानो ये सत्य है ये झूठ है। इतना अगर तुम कर लो तो यहां मंदिर में आना सार्थक है। **नहीं तो नहीं अनीति नहीं कछु प्रभुताई सुनहु करहु जो तुम्हहिं सोहाई।। लेकिन याद रखना- सो परत्र दुख पावई सिर धुनि धुनि पछिताई। कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्या दोष लगाई।।** अंत में पछताना पड़ेगा क्योंकि जो है वह रहेगा नहीं। तुम जहाँ हो वहाँ रह सकते नहीं। जिसको तुम अपना मानते हो रख सकते नहीं तो क्या छोड़ दो? छोड़ना नहीं है। देख लो बस देखना आ जा आये इसी का नाम है दर्शन, देखना। बड़ी वीरता के साथ, निर्भयता के साथ, चित रहित हो करके देखो जो मिला है बड़ा अच्छा मिला है, परमात्मा से मिला है। परमात्मा की प्रकृति का है बड़ा आनंद मनाओ अच्छा मिला, ऐसा मिला, ऐसा मिला और जब जाये इतने दिन रह गया बहुत है, इतने दिन रह गया। न मिलता तो क्या कर लेते? अभी तुम्हें नहीं मिला तो क्या कर रहे हो? बताओ बहुतों को मिला है तुम्हें नहीं मिला। तुम क्या कर सकते हो? उसको देखो जो मिला है इतना ही कहाँ से कम है कोई नहीं देखता। जिसको देखो हाय-हाय करते हैं। क्या नियत है? हमारे पड़ोसी को देखो कैसा है? जिसको देखो अपने और आगे की अब कोई साड़ी वाला साड़ी को देख रहा है, जेवर वाला जेवर को देख रहा है, मकान वाला ऊँचे मकान को देख रहा है लेकिन भगवान को और भगवान से जो मिला है उसको नहीं देख रहा है और मंदिर में जाकर **बुढ़ाय गये**। क्या अंधेर है? **बड़े**

**धीरे-धीरे वाक्य हैं-रोज तुम ध्यान से देखो।**

थोड़ी देर शाँत हो जाओ आँख बंद कर लो पीठ की रीढ़ सीधा रखो तुम कुछ न करो और फिर देखो तुम्हारे किये बिना श्वांस चल रही है कि नहीं- उसी को देखो-कैसा परमात्मा का विधान है। कैसी अद्भुद शक्ति है कि हमारे चलाये बिना सांस चल रही है। धड़कन चल रही है। भोजन पच रहा है। भूख लग रही है। प्यास लग रही है। मल मूत्र तुम निकालते हो कि निकलता है? थोड़ा सा बंद हो जाये-डाक्टर बुलाने पड़ेंगे। जीवन भर मलमूत्र निकलता रहा। तुम्हारे किये कि अपने आप? और तुम्हारी बदपरहेजी से, तुम्हारे कुपथ्य से अगर पेशाब बंद हो जाये तो फिर देखो क्या दशा होती है। **अमुक डाक्टर** बड़ी लंबी फीस लो। अगर पेशाब हो गया-धन्यवाद डाक्टर साहब तुमने हमें जिला दिया और भगवान ने इतने दिन जिलाया पेशाब निकाल करके कोई असर नहीं। क्या नास्तिकता है ये? यह होश की बात है। लोग कहते हैं-हमने बड़ा त्याग किया-धन त्यागा, परिवार त्यागा, घर त्यागा, लड़के बच्चे त्यागे। अरे तुम्हारी गाँठ के हैं, तुमने बनाया है जो तुमने त्यागा? वह तो मिला था और तुम? अहंकार अकड़ रहा है- मैंने त्यागा? क्या त्यागा? तुम्हारा है ही नहीं। **तुमने दान भी किया तो अपनी गाँठ का किया?** जन्म के बाद से महत्व में संपत्ति मिली भूमि मिली, भवन मिला, तुमने दिया तो क्या तुम्हारा है जो दिया? मिला था वही दे दिया। देने वाला कहता है मैंने दिया। पाने वाला कहता है हमने पा ली। जमीन न इधर गयी न उधर गयी और एक कहता है- हमने दे दी और एक कहता है हमने पा ली। क्यों भाई समझते हो कि नहीं बात को। एक इंच इधर न उधर, ज्यों का त्यों। एक देने का अभिमानी बनता है एक पाने का लोभी बनता है। ऐसी भ्रान्ति चल रही है। लोग कहते हैं। हम पढ़ते हैं, गीता पढ़ते हैं, रामायण पढ़ते हैं- छोटी-छोटी बातों का फैसला नहीं हो पाता।

**''तुलसी महिमा मोह की सुनत सराहत संत, सोई सेंवर तेई सुवा सेवत सदा बसंत।''** बार-बार वही करोगे। विचार नहीं करते, विचार करो और आंख बंद कर लो। प्रातः उठते ही क्या याद आया-मुकदमा है, लड़की

की शादी के लिये जाना है, ये लेना है, ये देना है, अमुक आने वाला है जाने वाला है। ये याद आया और परमात्मा से जो मिला था वह याद नहीं आता- थोड़ा याद करो।

सो रहे थे अगर कहीं धड़कन भी सो जाती तो क्या होता? तुम्हारे सो जाने पर सांस भी सो जाती तो, भीतर पाचन शक्ति भी सो जाती। तुम सो गये और भीतर सब कुछ हो रहा है। जागे तो पाया बिल्कुल ठीक धड़कन ठीक, सांस ठीक, नाड़ी ठीक, नस ठीक-क्यों ठीक है क्योंकि कोई चलाने वाला मौजूद है। अहंकार नहीं चलाता। याद करो। आज का सबेरा मिल गया और अब दिन भर जगेंगे रात को फिर कोई सुला देगा। धन्य है तुमको धन्यवाद है- एक-एक दिन जीने के लिए मिल रहा है। पता नहीं किस दिन यह धड़कन नाड़ी सांस समाप्त हो जाये। समाप्त हो जाये तो हाथ न करना। श्वास तो समाप्त हो जायेगी लेकिन चेतना समाप्त न होगी। क्या सुना? बल्ब फ्यूज हो जायेगा लेकिन बिजली रहेगी कि समाप्त हो जायेगी? विद्युत शक्ति समाप्त न होगी। हजारों लाखों बल्ब जलते रहेंगे, तैसे ही लाखों शरीर नष्ट हो जायेंगे चेतना बनी ही रहेगी। एक शरीर से दूसरे शरीर में, तीसरे शरीर में-लाखों शरीरों में होते हुये आज इस आकृति में आये हो। ध्यान से देखो तो ये देखो, घंटा भर वैसे ६ महीने, सांस न रोकनी पड़ेगी। कहीं कोई मंत्र न जपना पड़ेगा। अद्‌भुत चमत्कार घटित होगा। परमात्मा किस प्रकार व्याप्त है, परमात्मा किस प्रकार प्रकाशित है, परमात्मा विश्वमय है, वही सर्वमय है, आत्मा सर्वमय है, ऐसा बोध अपने आप हो जायेगा, कुछ न करना पड़ेगा। खाली॒ ांत और मौन हो करके बैठो- दर्शन का द्वार खुल जायेगा। शांत और मौन होने पर तुम अहँ में पहुँचोगे, आकार छूट जायेंगे।

**'अहंकार विमूढ़ात्या कर्त्ताहमिति मन्यते'** देह के लिये मेरा मैं हूँ,

केवल ज्ञान रहे मैं हूँ जितना अधिक यह मैं हूँ में बुद्धि ठहरेगी। आगे चलकर के मैं भी समाप्त हो जायेगा केवल हूँ, रह जायेगा हूँ, हूँ, हूँ, बीज मंत्र है। ज्यादा कुछ इशारा न करेंगे लेकिन करके देखो थोड़े दिन। 24 घंटे में कुछ

समय निकालो इतने समय हमें कुछ नहीं करना है। परमात्मा की शक्ति से जो हो रहा है उसे ध्यान से देखना है। थोड़े दिन देखो अद्भुत शक्ति तुम्हारे अंदर आयेगी। वह शक्ति नीचे नीम से उठ करके हृदय में भाव बनेगी। भाव से यहाँ पर विचार बनेगी। आगे चल करके ज्ञान के प्रकाश में दर्शन का द्वार खुलेगा। शक्ति ऊपर उठेगी तब वहाँ पहुँचोगे जहाँ अभी चेतना, जहाँ सब कुछ सोया हुआ है। चेतना वहां जाग जाये तो सब कुछ हो जाये। लेकिन हमारी साधना में थोड़ा सा जप कर लिया कल फिर कर लेंगे। पूजा कर ली-कल फिर कर लेंगे। फिर कल कल होता जायेगा। ये थोड़े इशारे किये गये, ऐसी कोशिश करो देह के भीतर मैं कहाँ हूँ पेट में हूँ कि सिर में हूँ कि नाम हूँ कि हाथ में हूँ कि मुँह में हूँ, मैं मैं मैं कहाँ हूँ, कहाँ-कहाँ है ये।- तब थोड़े दिन में आपको उत्तर मिलेगा। **मैं हूँ लेकिन यह नहीं हूँ** तब तो क्या हूँ? जो कुछ हूँ- विलक्षण हूँ, अद्वितीय हूँ, अविनाशी हूँ, सत्य हूँ, चेतन हूँ, नित्य निरंतर हूँ, ये हूँ का बोध होगा। यह बोध न हुआ आकार जब तक बने रहेंगे तो ऐसा कोई आकार नहीं जो मिल जाये और छूटे नहीं, वह रुलायेगा दुःख देगा। प्रीति ही मनुष्य को रुलाती है परमात्मा नहीं। क्या सुना? प्रत्येक मनुष्य को प्रीति रूलाती है। परमात्मा नहीं रूलाता। प्रीति क्यों रूलाती है। प्रीति में जो भर गया है। वह छूट जाता है। प्रीति तो हृदय में बनी ही रहती है। प्रीति कहती है- हाय चला गया, छूट गया, छिन गया ये हुआ वो हुआ। प्रीति रूलायेगी। प्रीति वही हँसा रही है, मिल गया, मिल गया। क्या मिल गया? सदा रहने वाला मिल गया? न रहने वाला मिला और बड़ी खुशियाँ मना रहे हैं। ये रामायण गीता है? ये भगवान का संदेश है?

भाई अनादर मत करो, अपमान मत करो, सत्य का, अपमान मत करो, गुरू वाक्यों का। आदर करो, रोज अनादर हो रहा है रोज। छोड़ना कुछ नहीं है देखना है- परमात्मा सत्य है, चेतन सत्य है, ये जड़ मिथ्या है परिवर्तनशील है। इसका आदर करो और अनादर करते हो तो अपराध बन जायेगा। अपराध का फल हमें भोगना पड़ेगा। इसीलिये सारे प्राणी संसार में दुखी होते हैं केवल अपना मानने के कारण। अपना मानने के कारण दुःखी

होते हैं। **परमात्मा को अपना मानो तुम्हारे दुख समाप्त हो जायें।** तुम्हारा दुख तुम्हीं से समाप्त हो जाता है। अगर अपने दुख समाप्त नहीं करते हो तो अपने मित्र नहीं शत्रु हो। अब समझ में आँखों से तो आयेगा नहीं बुद्धि से आयेगा। इसीलिए बुद्धि को कोशिश करके थोड़ा जाग्रत करो। बुद्धि सूक्ष्म होती जाये बुद्धि मोह से, लोभ रूपी दलदल से सनी है। लोभ रूपी अंधियारी से, लोभ रूपी कीचड़ से सनी है। अज्ञान अंधकार में पड़ी है। इसलिये जो देखना चाहिये वह नहीं देख पाते। ये कोशिश करो कि हमारी बुद्धि शुद्ध हो जाये। बुद्धि के आगे लोभ न रह जाये। बुद्धि के आगे मोह न रह जाये। बुद्धि के आगे अभिमान न रह जाये और अंत में अहं में आकार न रह जाये। यही तुम्हारा मुक्त स्वरूप है। अभी है अभी, कोई देगा नहीं। आकार छोड़ने पर अभी तुम मुक्त हो। मेरा धन नहीं तो अभी तुम मुक्त हो। संसार में मेरा कोई पदार्थ नहीं, अभी मुक्त हो, इतना बहुत है, बहुत है जरूरत नहीं है।

सिनेमा में नहीं ऊबते लेकिन यहाँ अब जायेंगे। जरूरी काम होता है लेकिन बड़ा मुश्किल है आँखों से तो शक्ल देखोगे समझना है बुद्धि से इसलिये बुद्धि-हमारे गीता में भगवान ने कहा है- **इस ज्ञान में जो मनुष्य को जाग्रत करता है बड़ा पुण्यवान है। वह मुझे बड़ा प्यारा है।** तुम माता को, पिता को, पुत्र को, भाई को बहन को, अगर तुम ज्यादा जानते हो तो तुम बड़ा धन दे दो। तुम बड़ा अच्छा विवाह कर दो लड़की का। लाखों की संपत्ति में लड़की को ब्याह दो। तुम कहाँ ढकेल रहे हो कन्या को? जो तुमने बड़ा वर दिया, धन दिया, सब दिया, बड़े अच्छे घर में तुमने विवाह किया। अंत में वह छूटेगा कि रहेगा, क्या ख्याल है आप लोगों का? बड़े अच्छे घर में शादी की बड़ी खुशियाँ। जहाँ तुम आये हो यह रहने के लिए है कि छूटने के लिए क्या मत है। तुम बहुओं बताओ-रहने के लिए कि छूटने के लिए? जब छूटेगा तब हाय-हाय करोगी कि वाह-वाह? हाय-हाय करोगी तो क्या यहां खाक सुनने आयी हो? अरे कोशिश करो! अभी से जाग्रत हो जाओ। यह मंदिर परम तीर्थ हैं। तुम्हारे लिये-कब? जब होश जा आये तो। नहीं तो गधा, गाय, कुत्ता, उल्लू, पक्षी पिंजरे में बंद करके रखो। दस-दस माईक लगा दो-समझा पाओगे उन्हें?

बड़े यह होश की बात है **संसार में घुसने के पहले संसार को जान**

**लो, परिवार में जाने के पहले परिवार को पहचान लो। कोई चोर ऐसा न होगा, किसी घर में घुसा हो और गठरी बांधी हो और गठरी बांधने के पहले दरवाजा ढूँढ लेता है कि मौका पड़ेगा तो भाग निकलेंगे। कोई नहीं सोचता? तैसे ही तुम गृहस्थी में घुसो लेकिन याद रखो दरवाजा, निकलने का पता-जब कोई खतरा होगा झट से निकल करके अपने परमात्मा में हो जायेंगे।**

अगर गठरी बंधी है मेरा-मेरा, जहाँ पड़े-बड़े डंडे तो हाय-हाय ऐसा न होना चाहिये। घुसने के पहले निकलने का द्वार खोज लो कोई बात नहीं। ध्यान की बात आप याद रखो। थोड़ी देर शांत हो करके देखो-तुम्हारे किये बिना परमात्मा की शक्ति से जाने क्या-क्या हो रहा है। उसको देखो! - ये हो रहा है। ये हो रहा है कर्ता मत बनो- भूख लगे तो मुझे भूख नहीं लगी है। प्यास लगी है, पानी दिया जा रहा है, खाना खाया जा रहा है। संकल्प उठा है, चला जा रहा है, बैठा जा रहा है, उठा जा रहा है। प्रत्येक क्रिया को ध्यान से देखो **इसका नाम ध्यान है। इससे वह ज्ञान होगा जो तुम्हें बंधनों से मुक्त कर देगा।** बड़ा मुश्किल है याद रखना और अभी तुम्हें मुक्ति की जरूरत तो नहीं है- यह भी बात है।

**सोचो! सोचो! जिससे**

**सोचो! जिससे सब कुछ मिलता (भगवान उसे ही कहते हैं।)2**

**जिसमें सब, जो सबमें परिपूर्ण (महान उसे ही कहते हैं।। 2)**

**दोष हो जिसे दीखते न हों 2, (वह मानव आकृति में पशु है।) 2**

**जो निज में दोष न रहने दो 2, विद्वान उसे ही कहते हैं। 2**

**निर्बलों के काम आ सके जो....यह त्यागमय जीवन**

**निर्बलों के काम आ सके जो, जग में सच्चा बलवान वहीं**

**जब धन की चाह न रह जाये, धनवान उसे ही कहते हैं।।**

**सोचो------------**

**कहते हैं वीर धीर उसको** मन इंद्रियाँ जिसके वश में हों

जिसका सुन्दर पवित्र जीवन थोड़ा बदल न जाये शब्द जीवन है तन नहीं। **तन तो वेश्याओं का भी बड़ा साफ सुथरा दिखायी पड़ता है लेकिन सुन्दर जीवन आप** लोगों का प्रेम का आधार होता है। प्रेम पति के साथ, माता-पिता के साथ, मित्र के साथ आपका प्रेम निष्काम होता चला जा रहा है।

जिसका सुन्दर पवित्र जीवन श्रीमान उसे ही कहते हैं।

**वह भाग्यवान** * जिनकी बड़ी कोठी बंगले हैं, गाड़ियाँ हैं लोग कहते हैं बड़े-बड़े भाग्यवान लेकिन हमारे संतों की दृष्टि में

**वह भाग्यवान** * कौन?

वह भाग्यवान है, दुखियों को जो यथाशक्ति सुख देता है

दे करके ले न कभी दया निधान उसे ही कहते हैं

**सोचो------**

**कामना पूर्ति का लोभी** * ध्यान देना आपके लिये

कामना पूर्ति का लोभी मानव,

कामना पूर्ति का लोभी प्राणी, कामी क्रोधी बन जाता।

निष्काम बना दे जोकि, प्रेममय ध्यान उसे ही कहते हैं।।

**सोचो! जिससे सब कुछ मिलता............**

जिससे कि जान ले अपने को * बड़ा सुन्दर शब्द है गुरुजनों का

जिससे कि जान ले **अपने को**, इस जग को जगदीश्वर को भी।

जब पथिक मुक्त हो सके , ज्ञान-विज्ञान उसे ही कहते हैं।।

**सोचो! जिससे सब कुछ मिलता,** भगवान उसे ही कहते हैं।।

श्रीराम जै राम जै जै राम, श्री राम जै राम जै जै राम।।

कौन श्रीराम ? अंतिम शब्द याद रखना, वह राम जो तुम्हारे साथ निरंतर तुम्हारे ही रूप में रह रहा है उसको कहते हैं राम। तुम्हारे साथ तुम्हारे

रूप में निरंतर जो रह रहा है अन्तर नहीं पड़ता वह है राम। उस राम को अपने में ही अनुभव करो, अपने में ही भजन करो, अपने में ही पूजन करो। तब तो प्रभु तुम सत्संगी हो और नहीं तो जो मन आवे सो करो। अब आप लोग जा सकते हैं।

चंचल के पीछे अचंचल को देखना, अचंचल चेतन को देखना-यह योग हो गया। खूब ध्यान देना है-कितना सहज योग है। इसी को सहज योग संतों ने कहा है। कबीर ने इसे सहजयोग कहा है, नानक ने सहजयोग कहा है। जितने संत हो चुके हैं इसको सहज योग कहते हैं, इस का मतलब है कोई परिश्रम नहीं, कुछ करना नहीं, कहीं जाना नहीं।

प्रत्येक करने के पीछे होने के पीछे, प्रत्येक क्रिया के पीछे उस स्थिर को देखना, अचंचल को देखना-जड़ के पीछे चेतन को देखना, कान सुन रहे हैं उसके पीछे उस सत्ता को देखना, जिस सत्ता से सुना जा रहा है, जिस सत्ता से बोला जा रहा है, जिस सत्ता से क्रोध किया जा रहा है, क्रोध को देखो, क्रोध के पीछे किसकी शक्ति है उस सत्ता को देखो-इसी का नाम योग है। बहुत सावधान होकर के अंतिम गुरु पूर्णिमा का संदेश सुन लो। गुरू पूर्णिमा का बड़ा गहरा अर्थ है। अमावस्या को गुरू पूर्णिमा नहीं मनायी गयी, चन्द्रमा की जब पूर्ण कला हो जाती है तब उसे गुरू पूर्णिमा कहते हैं। पूर्ण कला कहाँ से होती है? अंधकार से यात्रा शुरू होती है। अंधकार से चन्द्रमा की कला बढ़नीशुरू होती है। 1, 2, 3, 4 करते-करते पूरी कला जब हो जाती है तो उसको पूर्णिमा कहते हैं। सूर्य के ताप को कोई नहीं सह सकता लेकिन पूर्णिमा की शीतलता सभी को पसंद है। इसलिए गुरू पूर्णिमा कहीं गयी है। गुरू का संबंध इस समय ज्यादा व्याख्या न कर सकेंगे - क्योंकि थोड़ा लोगों को जाना है जल्दी है।

मुख्य बात ये पकड़ लेना-पकड़ लो यह ऐसा भी हमारा कहना गलत है बल्कि पकड़ा जा रहा है जिस रास्ता से उसे देखते रहना। अब यह शब्द याद रखने लायक है। जिस सत्ता से प्रत्येक को पकड़ा जा रहा है, शब्द को, स्पर्श को, रूप को, रस को, गंध को, उसको देखना। क्षण-क्षण के पीछे

शाश्वत, कण-कण के पीछे महान की अनुभूति यही योग सिद्धि है। आप लोग ऐसे में जिसकी बुद्धि साथ दे रही हो-इस योग को, इस योग के अभ्यास को शुरू करें-सबसे पहले आत्मवान बनें आत्मवान। **जो देहवान है गुणवान रूपवान है, कुलवान है, विद्वान है, बुद्धिमान है, पहले आत्मवान बनें।**

ये सब प्रकृति की चीजें हैं। इन अनेक वालों को छोड़ करके, शुद्ध चेतन रूप में हम आत्मवान हैं। अहंकार जाने क्या-क्या बन रहा है? उन आकारों को छोड़कर के मेरापना हटा करके शुद्ध चेतना में आ जायें-आत्मवान हो जाओ। **युग्जनेवं सदात्मानं योगी विगत कल्मषः** ये भगवान का संदेश है। **कल्मष यानि कालिमा** से निकल करके कालिमा से ऊपर उठ करके, इस चेतन आत्मा को अखंड अनंत परमात्मा में लगाओ।

हमने कहा था गुरुतत्व नित्य अखंड व्याप्त है। गुरु तत्व परमात्म तत्व है उसको जहाँ कहीं तुम चले अपने अहंकार को झुकाते रहो, नम्रता बढ़ाते रहो लेकिन अभी तक लोगों ने ध्यान नहीं दिया। लालच प्रबल है, लोभ प्रबल है बार-बार दौड़े आते हैं प्रणाम करने कहाँ ध्यान दिया? अनादर कर दिया। यहाँ सैकड़ों रूपये खर्च करके आये और प्रथम संदेश का, गुरू संदेश का अनादर किया। दौड़े आते हैं। बार-बार, बार-बार वही मन की क्रिया दोहराते हैं। भोगी मन योगी नहीं हो सकता। इसलिए बुद्धि योग भगवत् कृपा से सुलभ होता है तभी दर्शन होता है।

कहा इसलिये जा रहा है बार-बार कहा जायेगा, इसलिये कहा जायेगा कि आप निराश नहीं हों। पता नहीं आप कब पकड़ पायेंगे? आज जो पकड़ सकते थे, शायद साल भर बाद पकड़ पायें शायद दस साल बाद पकड़ें। लेकिन यह तो परम पुण्य की बात होती कि आज ही स्वीकार कर लेते। मन होता स्वामीजी के दर्शन करने के लिए चलें, जहाँ बैठे थे वहीं प्रणाम कर लेते क्योंकि बताया गया है कि प्रणाम प्रदर्शन के लिए नहीं है वह तो दिखाने के लिए नहीं है। दिखावट-दिखावट तो अहंकार करता है अपने को प्रसन्न करने के लिए। तो आपकी जितनी पूजायें हैं, आपकी मालायें हैं, आपकी मिठाईयाँ, आपके गोला और नारियल हैं ये गुरू को तृप्त करने के लिए नहीं हैं, अहंकार

को तृप्त करने के लिए हैं। अहंकार तृप्त होता है- मैंने यह दिया, मैंने यह चढ़ाया, मैंने ये पूजा की और इस अहंकार का पता नहीं रहता है। करोड़ों लोगों को अपने जानने का पूरा अहंकार है-मैं जानता हूँ, मैं समझता हूँ, मैं तुम्हारे मन की बात समझ लेता हूँ, मुझसे तुम्हारा कुछ नहीं छिपा है तो ज्ञान का अहंकार करोड़ों लोगों को है लेकिन उसके आकारों का ज्ञान किसी श्रद्धालु विवेकवान सत्संगी को ही हो सकता है। अहंकार को जानो। अहं के आकारों को देखो और उसके पीछे हटते चले जाओ। अंत में मैं ज्ञानस्वरूप हूं। मेरे ज्ञान में ये आकार भर गये हैं। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। ज्ञान में आकार भर गये हैं।आकार क्या है? मेरा जहाँ मेरा शब्द निकला आपके ज्ञान में वह भर गया। चाहे मेरा शत्रु हो, चाहे मेरा मित्र हो, चाहे मेरा प्रियतम हो, प्रेमास्पद हो- तुम्हारे मेरा शब्द कहते ही भर गया। जो मेरा है भिन्न हो गया। भिन्न जो भिन्न है सो सब माया है। यह माया से अहंकार ढका हुआ है। कल किसी ने पूछा था इस माया को कैसे छोड़ें? माया को छोड़ना नहीं है, माया छूटेगी नहीं, माया को तो देखना है बस यह माया, यह को देखने वाला जो है वह उससे अलग है, लेकिन माया का भोगी अलग नहीं हो सकता। युक्तियां हैं तो एक बात आप लोग पकड़ नहीं पा रहे-प्रणाम करने की बात कही थी, नहीं समझ में आयी। आदत की गुलामी आसानी से नहीं छूटती। आदत की गुलामी क्यों होती है? लालच, धन का लालच तो है ही, छूटा नहीं, परिवार का मोह तो है ही छूटा नहीं, छोटे पदों का, बड़े-बड़े पदों का अभिमान है ही छूटा नहीं। यहाँ आ करके और एक संबंध बढ़ा लिया तो किसी को गुरू माना तो उसकी देह से मोह कर लिया और फिर वहाँ भी लोभ, देने का लोभ, लेने का लोभ होता है। देने का भी लोभ होता है। यहाँ तक कि सबसे पहले हमारा स्वामीजी के पास चंदन पहुँच जाय यह भी लोभ है। दूसरे का न पहुँचे। सेवा का भी लोभ होता है। हमारी सेवा स्वीकार कर ली जाये। हमारा भोजन स्वीकार कर लिया जाय। यह भी लोभ है। जहाँ तक लोभ है वहाँ तक मोह है, जहाँ तक कामनायें हैं ये सब अहंकार के आकार की सीमायें हैं।

अहंकार में भीतर रहने वाला मन परमात्मा के योग का अनुभव नहीं

कर सकता। बड़ा छोटा सा वाक्य है-जो पदार्थों को पकड़े हुये है वह परमात्मा के लिये खाली नहीं है, जो पदार्थों को पकड़े हुये है, वह परमात्मा की अनुभूति नहीं कर सकता। एक वाक्य में-मेरा कुछ नहीं है-पदार्थों से संबंध टूट गया न कहीं जाना पड़ा, न कुछ खड़े रहना पड़ा न बैठना पड़ा, जो स्वीकार कर लिया था मेरा, अब ज्ञान में दिखाई देने लग गया-मेरा कुछ नहीं है, लो हो गये मुक्त, हो गये शांत, हो गये स्वस्थ-मेरा कुछ नहीं है कितना सुन्दर मंत्र है।

द्वयक्षर भवेन मृत्यु 2 अक्षरों का मंत्र जपनेवाले मृत्यु को देखते हैं तीन अक्षर के मंत्र का मनन करने वाले मोक्ष में चले जाते हैं। तीन अक्षर का मंत्र है (नहीं है मेरा) 2 नहीं है कुछ मेरा (मेरा कुछ नहीं है) 2 मैं हूँ, लेकिन मेरा कुछ नहीं। जहाँ मेरा गया तहाँ आकार गया तब केवल मैं रह गया और मैं भी चेतन स्वरूप रह गया। मैं परमात्मा में रह गया परमात्मा का रह गया। **''ईश्वर अंश जीव अविनाशी''** रह गया। चेतन अमल सहज सुखराशि रह गया। ये है एक मंत्र का मनन, लेकिन आप अगर अभी तक भूले हैं, फिर याद कर लें शायद साल भर बाद आपको होश जा आये। आना तो पड़ेगा ही। लेकिन अभी तो ज्ञान का अनादर है। गुरू ज्ञान का अनादर है, सद्भाव का अनादर है। सत्कर्म का अनादर है। असत् कर्म, झूठे कर्म, लोभ के लिए कर्म, मोह के लिए कर्म और उसमें दिखाई नहीं दे रहा है। इसको कहते हैं अंधी श्रद्धा, अंधापन। अंधे को दिखाया जाय-

**निष्फल है मतिमंद को किये उपदेश पवित्र।**
**ज्यों अंधे के सामने महा मनोहर चित्र।।**

हिये की हमारी फूटी हैं इसलिए हमें दिखायी नहीं पड़ता। इसलिए हमारे संत कहते हैं- तुम बाहर शरीर का इलाज होने दो लेकिन भीतर मन का, मन के रोगों का उपचार करो। चाहते हैं किसी तरह मन रोग मुक्त हो जाय-

**'निर्मल मन जन सो मोहिं पावा'**

जब भगवान तुम्हारे कह रहे हैं जिनके मन में मल नहीं रह जाता।

मल का मतलब लोभ नहीं है, मोह नहीं है, कामना नहीं है, अभिमान नहीं है-ऐसा मन निर्मल है, प्रकाशित है।

क्योंकि परमात्मा को कहीं से आना नहीं है। परमात्मा कहीं गया नहीं है वह कहीं खोया नहीं है बस मन निर्मल हो जाये तो मन में है वह परमात्मा है, जो बुद्धि में है वह परमात्मा है, जो अहं में है वह परमात्मा है जो सर्व में है वह परमात्मा है जिसमें यह सब है वह परमात्मा है। लेकिन जो परमात्मा को भूला वह फिर संसार के नामरूप में अटक गया, उपाधियों में अटक गया, व्याधियों में अटक गया, उसके लिए दुख के सिवा और कोई उपाय नहीं है। कई बातें आपके सामने रखी गयीं और यह अंतिम संदेश में आप ध्यान को जरूर पकड़े, ध्यान किया नहीं जाता ध्यान से देखा जाता है। क्या? जो भी सामने है जो भी साथ है। सामने का मतलब आंखें खोले बिना जो कुछ है। आंखें खुली तो जो सामने है उसी को देखो, ध्यान से जो सामने है यह किसकी सत्ता से प्रकाशित हो रहा है। सामने जो हो परिवार हो, शरीर हो, हाथ हो, पैर हो, हड्डियाँ हो इनको देखो- ये क्या मेरी है? मिली है और जब मिली है तो ये किसकी सत्ता से सब संचालित हो रहा है। ये तन-मन ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रियां? अभी-अभी यहीं परमात्मा मौजूद है दृष्टा-बनों!, कर्ता न बनो! कर्ता है अहंकार, **'अहंकार विमूढ़ात्मा कर्ताहमिति मन्यते जो अहंकार से विमूढ़,** अहंकार से आच्छादित, अहंकार में अटका हुआ जो चेतन ज्ञान है उसको विमूढ़ात्मा कहते हैं। इस विमूढ़ात्मा का अंत करने के लिये अपना मानना भीतर से छोड़ दो, ऊपर सब रहने दो जो देखो सब परमात्मा का संसार में जो भी तुम्हारे सामने आवे ये सब परमात्मा का। मैं परमात्मा में हूं ये सब परमात्मा में है। ऐसा जो चिन्तन करता है उसका नाम सुमिरन है **"तस्याहं सुलभः पार्थ नित्य युक्तस्य योगिनः"** जो मेरा निरंतर नित्य स्मरण करता है उसको मैं सुलभ हूँ। वह नित्य योगी है। क्या करो! ध्यान करो! वियोगी नहीं, संयोगी नहीं नित्य योगी है कौन? जो मुझ प्राप्त का स्मरण करता है। अप्राप्त का चिन्तन नहीं करता है।, अप्राप्त को प्राप्त करने के लिये नहीं जाता है नहीं मांगता है ऐसा योगी प्राप्त में संतुष्ट रहता है। प्राप्त है

आत्मा, प्राप्त है चेतन, प्राप्त है सत्ता , उस प्राप्त में ही जिसकी बुद्धि स्थिर हो जाये उसी का नाम योगी है। बड़े धीरे-धीरे वाक्य है जिनको आवश्यकता हो वह इनको समझे और जीवन में उद्घाटित करे। न समझे तो दुःख की कृपा से कभी होगा। जो आज हो सकता है शायद बीस बरस बाद हो, जो बीस बरस बाद हो सकता है। शायद बीस जन्म बाद हो। इसमें आप ही की ओर से देर है। क्यों? देर इसलिये है कि आप वर्तमान से हट करके, सत्य से हट करके, झूठ में चले जाते हैं। अनित्य में चले जाते हैं, असत्य में चले जाते हैं। मान भोग में चले जाती है। अब क्या उपाय? बड़ा सरल। बड़ा सरल न कहीं जाना।

**'कहहु भगति पथ कवन प्रयासा'** संत कह रहे हैं- कोई मेहनत है? लेकिन वाह, हम बड़ी मेहनत कर रहे हैं। बड़ी भागदौड़ कर रहे हैं। उत्तर दक्षिण, पूरब पश्चिम जा रहे हैं, दौड़ रहे हैं। सत्संग के लिए दौड़ रहे हैं। यह पुस्तक जो निकली है अभी सत्संग नित्य सुलभ, अगर साल भर इसको पाँच से दस मिनट पढ़ते रहो। ज्यादा नहीं तो शायद आध्यात्मिक क्लास में तुम पास तो हो जाओगे वरना सब फेल, किसी की जड़ता छूटती नहीं है। आदत की गुलामी बदलती नहीं। इतने स्थूल क्षेत्र में अपनी इंद्रियों के अभ्यास में, तन के अभ्यास में, मन के अभ्यास में शक्ति बरबाद कर रहे हैं ओर कहते हैं शांति कैसे मिलेगी? परमात्मा कैसे मिलेगा? अरे बाबा! जो मिला ही हुआ है उसके मिलने का प्रश्न? जो खोया नहीं उसकी खोज? अंधेर तो देखो! ऐसी जड़ बुद्धि? इसलिये किसी प्रकार बुद्धि शुद्ध हो जाये। बुद्धि की शुद्धि क्या है? एक चीज मिट जाये मोह। मोह क्या है? मेरा। कितने धीरे-धीरे शब्दों में श्लोक न याद करना पड़ेगा। मेरा कहा कि मोही हो गये, मेरा गया कि निर्मोही हो गये। निर्मोही हो करके ये न कहना कोई माता पिता पति परिवार बीमार है तो कोई परवाह न करेगा? निर्मोही के, ये लक्षण नहीं है। डाक्टर कितना निर्मोही है नर्स कितनी निर्मोही है। हजारों रोगियों की सेवा करती है। कुछ नहीं चाहती। चाहे कोई मरे चाहे जिये अपनी ड्यूटी करती है। अच्छा हो गया तो वह जाने मर गया तो वह जाने अपना मोह मुक्त। ऐसे ही आप परिवार में

रह सकते हैं, घर में रह सकते हो। धन में रह सकते हैं, खचांजी की तरह, लाखों का हिसाब रखता है, रखवाली लेकिन लोभ नहीं है क्योंकि मेरा नहीं है। एक मंत्र है मेरा नहीं है। जो देखा मेरा नहीं। ऊपर से न कहना मेरे नहीं हो भीतर से मेरा नहीं। पति को देखो, पुत्र का शरीर, पति का शरीर, पत्नी के शरीर, गुरू के शरीर, शिष्य के शरीर-जो भी संसार में आँखों से देखते हो मेरे नहीं है।

जिसके द्वारा आंखें देखती है वह मैं हूँ जिस चेतन के द्वारा जिस सत्ता के द्वारा आँखें देखती हैं। उसी का नाम आत्मा है उसी का नाम चेतन है जिसका आत्मा नाम है वह मैं हूँ, मैं देह नहीं, मैं जड़ नहीं, मैं चेतन हूँ, मैं परमात्मा में हूँ-परमात्मा में हूँ, परमात्मा से मुझे कोई अलग कर सकता ही नहीं तब कैसी भागदौड़? केवल होश में रहना है सावधान रहना है। जाग्रत रहना है। जिनकी बुद्धि में ये बातें नहीं बैठती है वे फिर नीचे उतर करके एक काम करें ये तो हो गया। यह बुद्धिमान बुद्धिप्रधान व्यक्तियों के लिये साधकों के लिये है लेकिन जो मातायें, जो आप लोग की समझ में नहीं आता। इस नासमझी का परिचय हम तीन दिन से देख रहे हैं। हमारे ही साथ कर रहे हैं। चार लालच छूटता है, न मोह छूटता है, न आदत छूटती है, न चाह छूटती है, न विचार आता है। प्रत्येक क्रिया के पीछे हम देखें क्या होगा कोई नहीं देखता।

प्रथम दिन बताया था जो कुछ करते हो इच्छा, कैसे इच्छा पूरी हो, कितनी जल्दी इच्छा पूरी हो। ऐसी जो भावना है तो प्रत्येक इच्छा की पूर्ति के लिए सोच लिया करो क्या होगा? जो इच्छा पूरी हो गयी क्या होगा?वस्तु मिल जायेगी तो क्या होगा? संयोग मिल जायेगा तो क्या होगा? विवाह हो जायेगा तो क्या होगा। पुत्र नहीं हुआ है हो जायेगा तो क्या होगा? जो नहीं मिला है। मिल जायेगा तो क्या होगा? आप कहोगे पहले से हमें क्या पता? उनको देखो! हमें नहीं मिला जिनको मिला है- तो क्या हुआ? अंधे बनकर करके न देखना, विचार करना, उनके जीवन में झाँकना। कल्पना मत करना-ये बड़े सुखी हैं इनके पुत्र है, ये बड़े सुखी हैं इनके धन है, ये बड़े सुखी हैं कार हैं मोटरे हैं, कारखाने हैं। अरे उनके भीतर झाँक करके देखो- जैसे तुम तैसे वे। तुम्हें भी चिंता, वहाँ भी चिंता, तुम्हें भी भय उनको भी भय, तुम्हें भी अशांति, उनको भी अशांति। अंत में मरते मरते जैसे तुम दुःखी तैसे वे दुःखी। क्या फर्क है।

कभी चाहते हो यह इच्छा कैसे पूरी हो, कितनी जल्दी पूरी हो, बाराबंकी कैसे पहुँचे? स्वामी जी कैसे मिलें? प्रश्न और कर देना-मिल जायेंगे तो क्या होगा? ये न कहना कल्याण हो जायेगा, ये न कहना शांति मिल जायेगी। अरे कितनी बार गये, कितनी बार कल्याण हुआ? कितनी बार शांति मिली? सुख हुआ फिर वही इच्छा। फिर मिला, फिर वही इच्छा। इच्छा के पीछे भागते- भागते भागने लायक न रह गये लोग और फिर भी भाग रहे हैं। जितने सेठ लोग बैठे हैं वह सब भागे हैं भाग रहे हैं। और हम कहते हैं-कौन दिन होगा जब तुम्हारा भागना बंद होगा ये कब बंद होगा? जब तुम परमात्मा का आदर करोगे। कौन परमात्मा? जो तुम्हें निरंतर सुलभ है- तो क्या होगा? परमात्मा में ठहरना ही एकमात्र भागने का अंत है। हम परमात्मा में नहीं ठहर पाते, हम आत्मा में नहीं ठहर पाते, अहंकार के पीछे, वस्तु के पीछे, पदार्थ के पीछे, संयोग के पीछे, भोग के पीछे, सुख के पीछे भाग रहे हैं भागते-भागते भागने लायक तुम्हारे गुरू लाखों लोग न रह गये। एक दिन हम तुम भी न रह जायेंगे। इसलिये यदि विचार करें तो बहुत सुन्दर मुहुर्त है। मुक्त होने का मुहुर्त यही है, भक्त होने का मुहुर्त यही है शांत होने का मुहुर्त यही है। अगर यहीं शांति का अनुभव न हुआ तो फिर और कहाँ होगा? होगा। कब होगा? जब तुम सावधान हो जाओगे। अभी हो सकते हो शायद 10 वर्ष बाद हो अभी देख सकते हो। शायद 10 वर्ष बाद देखो। क्या देखो? अपने को देखो। अपने को देखो। अपने को न देखो-दुनियाँ को देखते फिरो, अपने को न जानो। दुनियाँ को जानते फिरो। अपना पता न लगाया भगवान का पता लगाते फिरो। कितने पाठ करते रहो। कितनी बार रामायण पढ़े, गुरू ग्रंथ साहब पढ़ो, गीता पढ़ो कितने सप्ताह सुनो। यही सब हो रहा है। अहंकार भोगी बन रहा है। हमको तुमको होश नहीं है अभी होश आ सकता है। अभी होश क्या है? देखो! होश का अर्थ है देखो! चाहो जो कुछ नहीं मिला है देखो!

जो मिले देखो!- क्या देखो? जाने के लिये मिला है। जो आये देखो-लौटने के लिये आये हैं।

अब बोलना बंद कर दो भीतर बहुत सुन चुके हो। तुम सुनते-सुनते

तृप्त हो जाओ, हम बोलते-बोलते तृप्त हो जायें, तुम भी बेवकूफ, हम भी बेवकूफ, तुम सुनने में लगे हो, हम बोलने में लगे हैं, और होता हवाता कुछ नहीं क्योंकि तुम नहीं चाहते, क्या नहीं चाहते? सुनना बंद हो ये नहीं चाहते, बोलना बंद हो ये हम नहीं चाहते। दोनों एक ही तरह। अब क्या होगा? ऐसे ही सब चलता रहेगा। ये अज्ञान है। लेकिन प्रभु की बड़ी कृपा है- हम अपनी बात कह रहे हैं। अपनी बात सुन रहे हैं। अपनी बात और अपने में पहुँच जायें तो न सुनाना है न बोलना है, सुनना भी नहीं है क्या सुनेंगे? जो सुनेंगे वह माया, जो बोलेंगे वह माया, जो बोले वह सब कथन।

सत्य पूर्ण मौन है, सत्य पूर्ण शांत है, सत्य प्राप्त है और जब पूर्ण प्राप्त है अब चाह कैसी? जहाँ चाह आयी अहंकार में उतर गये। अब भोगी अहंकार के पीछे भावी अहंकार भाग रहा है। भाग रहा है, भागने के साथ-साथ परमात्मा आत्मा अभी स्थिर है। स्थिर को देखते रहे हम चंचलता के पीछे। अविनाशी को देखते रहें। विनाश के पीछे और अदृश्य को समझते रहें, दृश्य के पीछे-इसी को बुद्धियोग कहते हैं। **'ददामि बुद्धियोगं'।** आप लोग चाहें तो ऐसा हो सकता है। इस बार का आना सार्थक कर लो, ये तुम्हारे ऊपर निर्भर है और नहीं तो निरर्थक करते रहो, ये भी तुम्हारे ऊपर है। तुम स्वतंत्र हो- चाहे स्वतंत्र हो जाओ, चाहे अब भी परतंत्र बने रहो। हमारी तुम्हारी मौज है। कोई तुम्हें नहीं बांध सकता अगर तुम मुक्त होना चाहते हो, कोई तुम्हें मुक्त नहीं कर सकता, यदि तुम बंधे रहना चाहते हो।

तुम अपने शत्रु हो अगर अपने को अपने से भिन्न में बांधे हुये हो, भरे हुये हो, रोके हुये हो। अपने मित्र हो कब? अपने से भिन्न का संग छोड़ दिया है।

बस मैं हूँ परमात्मा में, यह है परमात्मा की प्रकृति में। तीन शब्द हैं- कुछ नहीं छोड़ना परमात्मा की प्रकृति में हैं, रहने दो।

तुम कौन होते हो? उसके मालिक हो? हम परमात्मा में हैं यह सब बिल्कुल शांत। परमात्मा की प्रकृति में है। न हर्ष, न शोक, न सुख, न दुःख,

कुछ नहीं तुम शांत और बस शांति सुलभ हो जायेगी और देखते रहना है जो भीतर विकार उठे, उन्हें भी देखो! अब मत कोशिश करना- क्रोध कैसे छूटे, काम कैसे छूटे-छोड़ना है ही नहीं ये सब छुटा-छुटाया है। प्रकृति का विकार है। इस विकार को दूर से देखो! तुम कुछ न करो। जहाँ चाह गयी बहुत सरल है तुम कह दो अब कुछ न चाहेंगे। हो सकता है तुम दाल में नमक न चाहो, कपड़ा न चाहो, घर न चाहो, मकान न चाहो। सबके अंत में लोग क्या कहेंगे? मान तो चाहते ही हो, लोग क्या कहेंगे? ऐसा करेंगे तो लोग क्या कहेंगे? आज अंगौछा पहने बाहर निकलेंगे तो क्या कहेंगे? और जूता पहिने नहीं हैं, जूता खो गया है, हाय देखेंगे! तो लोग क्या कहेंगे? सत्संग और ज्ञान भगवान एक तरफ, लोग क्या कहेंगे?

छोटी-छोटी बातों की परवाह हो जाती है - बड़ी परवाह हो जाती है। खैर बड़ा सरल है, परमात्मा के लिये अकिंचन हो करके रहो। अकिंचन का मतलब संसार में कुछ नहीं मेरा, किंचित भी, मेरा कुछ नहीं है। ऐसे होकर रहो- **'जौ जय बनें गरीब तू, मिलें गरीब निवाज'** अपना कुछ न मानो। अकिंचन हो गये और अगर किंचित भी और हमारा संसार में कुछ नहीं तो हम चाहे किससे, चाह समाप्त हो गयी और जब चाह समाप्त हो गयी तब ध्यान देना तो अब प्रयत्न क्या करे? प्रयत्न अब किसके लिये करें। फिर जो होता है होता रहेगा। धड़कन चलती रहेगी, नाड़ी चलती रहेगी, आवाज निकलती रहेगी। बाकी जो बोलते हैं बोलते रहेंगे, सुनते हैं, सुनते रहेंगे लेकिन अपने को सबसे पीछे हटा लेंगे, अब हमें कुछ नहीं चाहिये, यह मेरा कुछ नहीं है। अब मुझे करना भी कुछ नहीं है बस।

भगवान बुद्ध जा रहे थे। एक डाकू अंगुलीमार जिसका नाम था कितनी हत्यायें कर चुका था एक बाकी रह गयी थी। अंगुलियों का माला बनाया था। लोगों ने मना किया इस रास्ते में मत जाओ।

अपना कुछ नहीं है तब चाहें क्या अब कुछ न चाहेंगे। फिर अब करें क्या? कुछ करना ही नहीं है। तब क्या? देखना है। क्या देखना है? क्या हो

रहा है? कहाँ? शरीर में, मन में, बुद्धि में, अहं में क्या हो रहा है। तुम कुछ न बोलो, तुम कुछ कर्ता न बनना, उस अंगुली मार डाकू की राह में जब भगवान चल रहे थे, लोगों ने मना किया उनको क्या भय, उनका क्या छूटना, क्या मिलना? डाकू बड़ा भयंकर रूप, रोका- ठहरो तुम कौन हो? वह चले ही जा रहे हैं। ठहरो, कौन हो तुम? सुनते नहीं हो? हम सुन रहे हैं हम ठहरे ही हुये हैं। हम चलते ही कहां हैं। क्या सुन्दर, हम ठहरे हुये हैं तुम चलना बंद करो। अगर होश आया हो। कहे-कैसी पागलपन की बातें कर रहा है- समझ तो पाया नहीं। वह और बढ़ गये, उसके पास ही पहुँच गये। बड़ा भारी फरसा उठाया। बड़े-बड़े राजे महाराजे उससे कांपते थे नाम सुन करके। अंत में कहा-ये हमारा तो नियम है-हम तुम्हें काट देंगे। कहें-ठीक है लेकिन एक काम हमारा कर दो। तुम इसके 4-5 पत्ते हमें ला दो। खैर कुछ बात नहीं उसका विरोध था नहीं। फरसा उठाया बड़ी ऊँची डाल में मारा, कटकर गिर गयी। उठा लिया-लो पत्ते। ये क्या किया? हमने 5 पत्ते माँगे थे। तुमने डाली काट दी? कहे-पत्ते तुम पाँच ले लो। कहने लगे-अगर तुम्हारे अंदर ताकत है काटने की तो तुम जोड़ दो। काटने की ताकत रखते हो, जोड़ दो तो हम जानें बड़े वीर हो।

अब वह चौंका-ये क्या एकदम होश आया। भीतर की चेतना विज्ञानमय कोष में पहुँच गयी। बुद्धि जाग्रत हो गयी। अब सोचता है कि क्या करूँ? मैं तो अपने को बड़ा वीर मानता हूँ। काट सकता हूँ, जोड़ नहीं सकता। कहें- आज तक तुमने यही किया है, काटे हैं लेकिन जोड़ा भी है किसी को? होश में आ जाओ-हम चल नहीं रहे हैं, तुम चलना बंद कर दो और तुम ये जोड़ नहीं सकते तो तुम काटना बंद कर दो। एकदम पर्दा उसका खुल गया। संत का संग चरणों में गिरा, कहा-तो क्या करें? कहा- तो कुछ न करो, उत्तर था कुछ न करो। बस आज से करना बंद कर दो-होना देखते रहो। बिना कुछ किये तुम्हें भूख लगेगी ठीक, प्यास लगेगी ठीक, तुम कुछ न करो, कर्तापना छोड़ दो दृष्टा हो जाओ। आज की चर्चा में यही साधना है।

तुम घर परिवार, दुकान, व्यापार, अमीर-गरीब, जहाँ कहीं जिस

स्थिति में हो, करने का अभिमान छोड़ दो।

**''नैवं किंचित करोमि युक्तो मन्यते तत्ववित्''** जो तत्व को जान लेते हैं वे अपने को कर्ता नहीं मानते हैं। प्रकतेः क्रियामा सब प्रकृति में हो रहा है। ऐसा देखो होने दो सब सांस चलेगी, धड़कन चलेगी, दुख आयोगा सुख आयेगा अपने को मत मानना मैं दुखी हूँ, सुखी हूँ, क्रोधी हूँ, कामी हूँ, लोभी हूँ, मोही हूँ, हो रहा है सब प्रकृति में। मैं परमात्मा में हूँ, सब प्रकृति में है। महीने थोड़ा अभ्यास करो दृढ़ता आ जायेगी और साल भर में तुम पाओगे मै। निरंतर परमात्मा में हूँ, संसार की किसी गति का तुम पर असर न होगा, द्वंद्वों का असर न होगा।

**'ते द्वंद्वमोहे निर्मुक्ता भजन्ते मां दृढ़व्रताः'**- कौन कह रहा है। जिसका नाम जपते हों। दृढ़वती हो करके वे ही मेरा भजन कर पाते हैं जिन पर द्वंद का प्रभाव नहीं पड़ता। द्वंद्व क्या हानि हुई प्रभाव नहीं, लाभ हुआ प्रभाव नहीं, संयोग हुआ प्रभाव नहीं, वियोग हुआ प्रभाव नहीं। द्वंद्वसे छूट करके जो मेरा जो स्मरण करते हैं। **'भजन्ते मां दृढ़व्रताः'** जिनके पाप पुण्य कर्मों के द्वारा न ट हो गये हैं उनकी इतनी बुद्धि ुद्ध हो जाती है कि उन पर इन द्वंद्वों का संयोग वियोग का, हानि लाभ का प्रभाव नहीं पड़ता। भाग्यानुसार होता सब है प्रभाव नहीं पड़ता। आप भी ऐसी तैयारी करो मंदिर में भगवान के सामने ऐसी भावना ले करके जाओ-सर्वत्र व्यापक परमात्मा इस समय मूर्ति के रूप में है लेकिन जहाँ मूर्ति है वहाँ भी परमात्मा व्यापक है। वहां तो व्यापक है जब लौटोगे तो यहाँ भी परमात्मा व्यापक है। अब कहीं न जाना हैं न आना है देखना है केवल परमात्मा की सत्ता से प्रकाशित समस्त विश्व को नाम रूपों को-तब तुम तुलसीदास जी की भांति तुम यह कह सकोगे-क्या कह सकोगे?

**जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।**

**सबके पद बंदन करउ सदा जोरि जुग पानि।।**

सब ओर प्रणाम करते रहो। अहंकार प्रणाम करता है किसको?

आत्मा को। जरा दूर न चले जाना। यह अहंकार, ये जो अहं है, जो आकारों को छोड़ करके अब समर्पित हो रहा है। जिधर देखते है आत्मा को अहंकार निरंतर समर्पित कर रहा है। यह अहं का प्रणाम है आत्मा के प्रति और आत्मा का योग है परमात्मा के प्रति। इतनी मंजिल और कल क्या बताया था। 5 कोष में परमात्मा और 5 लाख कोष में भी परमात्मा न मिलेगा और अगर तुम्हारा इधर की तरफ मुंह है। अगर इधर से मुँह लौट जायेगा। पांच ही कोष हैं अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष तब आत्मा आनंद स्वरूप। बस इतना काफी है।

आप मनन करें, नियम बनावें नहीं, देखें। दृष्टा बनने की याद रखें और मैं एक बात बीच में कहना छोड़ गया। नाम जपें परमात्मा का और क्रिया के चक्कर में न पड़े। दूजा फूल माला के चक्कर में न पड़े। नारियल इकट्ठा हैं ऊपर, अहंकार तृप्त हुआ,नारियल ले आये, बड़ा अकड़के, ये प्रथायें हैं? गलत प्रथायें तुमने पकड़ ली हैं, और यहाँ तक न छोड़ पायें तो घरों में क्या छोड़ पाओगे। जब तुम पूजा के नाम पर अपनी गलत आदतें नहीं छोड़ पाते हो तो जो तुम्हारे काम क्रोध लोभ की जो आदतें घरों में पड़ी हैं भला वह कैसे छूटेंगी? यहाँ पर सब फेल हो गये, जितने गोले लाये, नारियल लाये, फूलमाला लाये, पूजा के नाम पर लाये, उन्होंने अहंकार की पूजा की, गुरू की पूजा नहीं की। अगर याद हो किसी को तो अभी ऊपर नारियल पड़े हैं। जिसके नारियल हो ईमानदारी से उठा लाओ और घर ले जाओ। हम ईमानदार कहेंगे, नहीं तो बेईमान हो पक्के, अहंकार कहेगा- दे के क्या लें। जैसे कोई बड़े उदार हों। बड़े दानी बन गये। और ज्यादातर मातायें लायी होंगी, न कमाना, न धमाना, घरवालों की कमाई को अहंकार की तृप्ति के लिए खर्च करना। ऐ भाई-याद है किसी को, हाथ उठाओ कौन-कौन नारियल लाये थे? अहंकार के कारण हाथ उठायेंगे नहीं।

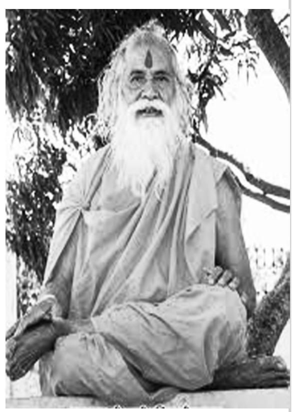

अच्छा नमस्कार।

।।ॐ ।।

## नमो परमात्मने

# ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम

गुरुदेव की कृपा का जब अनुभव होता है तब ऐसे ही उद्‍गार निकलते हैं-

**ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।**
**बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।**
**ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।**
**जिसे हम दूर नहीं कर पाते।।**
**दोष मेरा हटा देते हो तुम।**
**बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।**

**बिना तुमसे मिले जो बुझती नहीं।**
**बिना तुमसे मिले जो बुझती नहीं।।**
**प्यास ऐसी जगा देते हो तुम।**
**बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।**
**गरूर अपने आप झुक जाता।**
**चोट ऐसी लगा देते हो तुम।।**
**बात बिगड़ी बना देते हो तुम।**

**मेरी यह बंद आँखें खुल जातीं।**

**रोशनी जगमगा देते हो तुम।।**

**बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।**

**हम तो भूले स्वयं को तुमको भी।**

**याद अपनी दिला देते हो तुम।**

**बात बिगड़ी बना देते हो तुम।।**

**पथिक गिरते हुये संभल जाता।**

**मंत्र ऐसा सुना देते हो तुम।।**

**बात बिगड़ी बना देते हो तुम।**

**ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।।**

परमात्मा ज्ञान स्वरूप हैं ये जो आत्मा-आत्मा शब्द आप सुनते हो ना किताबों में, शास्त्रों में, ग्रंथों में, संतों से। ये आत्मा जो चेतन है, चेतन कहो तो, और ज्ञान कहो तो, और सत् कहो तो, एक ही बात है। उसी को सत् कहते हैं, उसी को चेतन कहते हैं, उसी को ज्ञान कहते हैं। इसी ज्ञान में शरीर इंद्रियां मन बुद्धि सब कुछ काम कर रहे हैं। ज्ञान चेतन है, चेतन ज्ञान है। यहाँ तक कि ये हमारी पलक उठती, गिरती है, उठती है ये चेतन के कारण। चेतन का संबंध टूट जायेगा तो ये कुछ न होगा। जड़ शरीर मिट्टी हो जायेगा लेकिन मिट्टी में भी परमात्मा है, पत्थर में भी परमात्मा है-ये थोड़ा समझने की चीज है। पत्थर में कोई परमात्मा को अगर खोजना चाहे-कोई कहे-परमात्मा सर्व व्यापक है तो ईंटा रखा हुआ है। इसमें परमात्मा कैसे व्यापक है। ये ईंटा इतना बड़ा वजन है। ये वजन को तुम घिसना शुरू करो, इतना घिसो इतना घिसो घिसते-घिसते ये पहले महीन होगा और महीन होते-होते इतना महीन हो सकता है कि पाउडर और सूक्ष्म हो करके पता ही न चलेगा हवा में सब उड़ जायेगा।

एक ऐसी चीज महीन होती है कि हवा में उड़ जाती है कि नहीं। वजन होती है तब तो ठहरती है और इतनी सूक्ष्म होती जाये कि वायु में पता भी न चले तो जो वायु में कण उड़ गये। इन कणों को जोड़ने वाला पत्थर के रूप में, काठ के रूप में, ईंटा के रूप में कौन है? वही सत्ता है दो अणुओं के बीच में जोड़ने वाली, दो अणुओं को जोड़ने वाली जो शक्ति है उसको सत्ता कहते हैं। परमात्मा प्रत्येक कण में, प्रत्येक कण के साथ सत्ता के रूप में विद्यमान है, वहीं दो कणों को इकट्ठा करता है फिर तीन कण, चार कण फिर आकार बना, फिर वजन बना और इतनी बड़ी जो पृथ्वी है, पृथ्वी की सारी चीजें आंखों से जो दीख रही हैं उसी की सत्ता में ये सब जुड़ी हुई हैं। तो अब आज से कोई पूछे-परमात्मा व्यापक है तो पत्थर में कैसे व्यापक है? तो मनुष्य में व्यापक है और रूप हैं, पत्थर में व्यापक है और रूप है, वृक्ष में व्यापक है तो और रूप में। तो खनिज पदार्थ उसको कहते हैं जितने यह जड़ पदार्थ है जो आँखों से दीखते हैं। इनमें परमात्मा सत्ता के रूप में इनको जोड़ रहा है तब वह आकार बना। फिर वह सत्ता वृक्ष के रूप में, पत्थर तो एक जगह पड़ा रहेगा, पचासों सैकड़ों, हजारों वर्ष लेकिन वृक्ष बीज से प्रगट होगा। बढ़ते-बढ़ते फिर रूकेगा और फिर जहाँ से उत्पन्न हुआ है, उसी मिट्टी में मिल जायेगा तो वृक्ष में, खनिज पदार्थ में, जड़ में सत्ता के रूप में है। वृक्ष में गति के रूप में दिखाई पड़ता है। ये गति देने वाला कौन है? ये गति ये, शक्ति वहाँ सत्ता यहाँ शक्ति। फिर वृक्ष के बाद ये जो पशु वर्ग है। पशु वर्ग में तो गति एक जगह नहीं है वहाँ तो बढ़ना-घटना नहीं बल्कि वहाँ तो चलना-फिरना है। यहाँ परमात्मा चेतना के रूप में है।

जितना पशु वर्ग हैं पशु-पक्षी, कीट-पतंग, यहाँ परमात्मा चेतना के रूप में अब यहाँ से ज्ञान शुरू हुआ। अहं ज्ञान **'ये मैं हूँ'** का जो ज्ञान होता है केवल मनुष्य में होता है। पशु पक्षी में **'मैं हूँ'** का ज्ञान नहीं होता। गति तो है वहाँ मन की गति है, इंद्रियों की गति है, लेकिन **'मैं हूँ'**, का जो ज्ञान बोध है, वह मनुष्य में होता है। यही मनुष्य फिर आगे चल करके जैसे-जैसे इसमें परमात्मा की कलायें प्रगट होती जाती हैं तो वैसे-वैसे उतना ही आकर्षण

उसमें बढ़ता जाता है। जैसे साधारण मनुष्य और राजा में फर्क है।

साधारण मनुष्य और नेता में फर्क है, और फिर ऊपर महात्मा में और मनुष्य में फर्क है।

महात्मा में परमात्मा की कई कलायें प्रकट हैं। महात्मा और भगवान में फर्क है। भगवान में पूरी कलायें 16 कला, 12 कला। जितनी कलायें बढ़ती जाती हैं, सत्ता प्रगट होती जाती है। परमात्मा प्रकट होता जाता है। फिर वह जीवात्मा और फिर महात्मा और परमात्मा। महात्मा वास्तविक महात्मा, पूर्ण महात्मा वहाँ पूर्णता होती है। जहाँ पूर्ण से एक हो जाता है। तो जीवात्मा, परमात्मा से मिल जाये इसको महात्मा कहते हैं और जीवात्मा जब शरीर से, धन से, परिवार से मिला है, इसको जीवात्मा कहते हैं। चेतन जब जड़त्व से लिपटी हुई। अहं जब जड़त्व को छोड़ करके परमात्मा में हो गया है उसको महात्मा इतना फर्क है। अभी यह तत्व विवेचन आपने सुना। परमात्मा सर्वव्यापक है और अभी हममें तुममें सभी रूप में है। यह जो बोल रहे हैं उसी की शक्ति से, सत्ता से बोल रहे हैं। क्रियायें हो रही हैं। कभी-कभी आप शिकायत करते हो भजन करते हैं तो मन बड़ा चंचल हो जाता हैं, आज से मन की चंचलता को देखना, तुरंत परमात्मा याद आ जाये। मन की चंचलता को मन नहीं देख रहा है, मन की चंचलता को जो देख रहा है वह अहंकार है। अहंकार मन से ऊपर है। पहले शरीर, शरीर से ज्यादा शक्तिशाली है इंद्रियाँ, इंद्रियों से अधिक शक्तिशाली है मन, मन से अधिक शक्तिशाली है बुद्धि, बुद्धि से भी अधिक शक्तिशाली कौन? अहंकार और अहंकार से भी पूर्ण चेतना जब आकार समाप्त हो जाते हैं केवल अहं ज्ञान, तो सबसे ऊपर ये ज्ञान है। ज्ञान और आत्मा में कोई फर्क नहीं है। ज्ञान ही आत्मा है, आत्मा ही ज्ञान है। और आगे चल करके जैसे-जैसे तुम्हारी बुद्धि सूक्ष्म होगी तब तुम्हें पता चलेगा अभी जो मैं काला, गोरा, मोटा-दुबला हूँ-देह से मिल करके, जाति से मिल करके मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह अहंकार है।

अहं ज्ञान में जब जाति भर गयी तो वैश्य, शूद्र, ब्राह्मण बन गये। अहं ज्ञान में धन भर गया तो हम धनी, गरीब बन गये। अहं ज्ञान में जब रूप

भर गया तो काले, गोरे, मोटे, दुबले बन गये। ज्ञान में जो भर जाता है ज्ञान उसी मय बन जाता है। इसीलिये ज्ञान का कोई आकार नहीं है और ज्ञान में सब आकार भर जाते हैं। जैसे अग्नि का कोई आकार नहीं है लेकिन टेढ़ी लकड़ी में टेढ़ी अग्नि, गोल में गोल अग्नि, लंबी लकड़ी में लंबी अग्नि जितना आकार जलने वाले पदार्थ का होगा उतनी ही बड़ी छोटी अग्नि दिखाई पड़ेगी और जब आकार जल जायेगा तब अग्नि जहाँ की थी वहीं लीन हो जायेगी। इसका मतलब क्या निकला? अग्नि का कोई आकार नहीं है। आकार से मिल करके अग्नि तदाकार हो जाती है। इसी को श्रुतियों में, हमारे वेदों में वचन आता है- **''अग्निर्पथै को भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रति रूपो बभुवः''** - एक अग्नि सारे भुवन में जैसे रूप-रूप में जिस रूप से मिलती है, अग्नि उसी मय बन जाती है तैसे ये चेतना जिस आकार से मिलती है वही आकार बन जाता है।

तो आप लोगों को कभी मुक्ति की जरूरत पड़ेगी। अभी तो है नहीं कभी पड़ेगी क्यों? जो तुम बने हो ये सब बिगड़ जायेगा। तुम न काले गोरे मोटे रहोगे। देह न रहेगी तब भी तुम रहोगे। जाति न रहेगी तब भी तुम रहोगे। संसार के भूमि भवन न रहेंगे तब भी तुम रहोगे। कुछ न रहेगा तब भी तुम रहोगे। तुम्हारे संबंधी एक एक करके सब मर जायेंगे, माता-पिता, पति-पत्नी पुत्र तब भी तुम रहोगे। तुम्हारा शरीर काला-गोरा-मोटा छूट जायेगा, तब भी तुम रहोगे। वह तुम किस रूप में रहोगे? ज्ञान रूप में। वह तुम्हारा असली स्वरूप है ज्ञान। उस ज्ञान में वासना के कारण-कामना के कारण तुमने अनेकों नाम रूप स्वीकार कर लिये हैं। ये बंधन हैं। अहंकार और अहं ये दो चीजें हैं। आकार वही बनता चला जाता है, जहाँ मेरा कहते हो। मेरा हटाते जाओ, थोड़ी देर के लिए मेरा हटा दो तो तुम तो रह गये लेकिन आकार कुछ नहीं रह जायेगा। अब परिचय नहीं दे सकते। मैं पुत्र हूँ, कि पिता हूँ, कि पत्नी हूँ, कि सास हूँ, कि बहू हूँ आकार से मिलकर के अहंकार कहलाता है। आकार छोड़ करके अहं मुक्त हो जाता है तो केवल ज्ञान रह जाता है। वह ज्ञान अनंत से मिल करके पूर्ण हो जाता है।

इतनी सरल मुक्ति, भक्ति। मुक्ति का अर्थ है संसार के नाम रूपों से तुम्हारे ज्ञान में संबंध न रह जाये। ज्ञान का नाम रूपों से मुक्त हो जाना, छूट जाना मुक्ति और ज्ञान अखंड, अनंत, परमात्म चेतना से, सच्चिदानंद तत्व से मिल जाना भक्ति है। ये परिभाषा तुम लोगों ने न सुनी हो तो आज सुन रहे हो। कभी जरूरत पड़े तो इसको याद कर लेना। भक्ति का मतलब मंदिर में जाना नहीं है, वह तो एक कर्म है। लोग कहते हैं-ये बड़े भक्त हैं। रोज मंदिर में जाते हैं, रोज माला जपते हैं, रोज कीर्तन करते हैं, ये तो क्रियायें हैं ये भक्ति अभी नहीं हैं।

वर्षों कीर्तन करते लोगों को हो गये और न क्रोध छूटे, न लोभ छूटे, न मोह छूटे। सब ऐसा ही बना हुआ है। है कि नहीं। इसका मतलब ये भक्ति हुई? भक्ति का मतलब परमात्मा से दूरी मिट जाये। अभी तुम्हारी निकटता किससे है? जड़ से है, विनाशी से, शरीर से, भूमि से, भवन से, जिसे तुम मेरा कहते हो उसी से संबंध तुम्हारा जुड़ा हुआ है। परमात्मा को खोज रहे हैं जिससे अलग हुये ही नहीं- ये है अज्ञान। जिस परमात्मा से हम कभी अलग हो ही नहीं सकते, जिसके बिना हम कुछ हो ही नहीं सकते, जिसमें ही हम अभी हैं, सदा से हैं, पापी हैं तो परमात्मा में, पुण्यवान हैं तो परमात्मा में, बंधे हैं तो परमात्मा में। तो जैसे भूमि से तुम्हारा शरीर जब उठेगा तब भूमि में ही गिरेगा। जैसे दीपक है। दीपक में ज्योति जल रही है। दीपक मिट्टी का है लेकिन ज्योति तो मिट्टी की नहीं है, ज्योति अग्नि की है। अग्नि जल क्यों रही है? दीपक में तेल है, बाती है। दीपक तेल और बाती तीनों के योग से आप कहते हो दीपक जल रहा है। दीपक जल रहा है किसमें? मिट्टी के दिये में। मिट्टी के दिये में तेल और तेल में फिर बाती है। बाती में अग्नि है। अब कुल मिला करके दीपक बन गया। यही है अहंकार। अहंकार मिट्टी रूपी दिये में मिट्टी रूपी देह में, चेतना जल रही है किसके संग से? मन के, बुद्धि के संग से। ये जो मैं प्रकाशित हो रहा है मानो यह ज्योति है। जब शरीर न रहेगा मन और बुद्धि ये भी सूक्ष्म हो जायेंगे तब वह चेतन, निराकार, अखंड अनंत तत्व परमात्मा ही शेष रहेगा। दीपक जिसमें देव ज्योति जल रही है, दीपक तुम

उठाओ हाथ में और उसको गिराओ तो ऊपर उड़ेगा कि नीचे गिरेगा? नीचे ही गिरेगा क्योंकि मिट्टी का है मिट्टी में गिरेगा। ज्योति मिट्टी की है नहीं, ज्योति मिट्टी में मिलेगी? क्योंकि ज्योति तो निराकार तत्व है, दीपक के साथ प्रकाशित हो रही है। तेल न रहेगा, बाती न रहेगी, दीपक न रहेगा तो क्या अग्नि नहीं रहेगी। बोलो अग्नि नहीं रहेगी?

एक महात्मा थे, बड़े उपदेशक थे जो कोई मिलता था, सबको ज्ञान का उपदेश देते रहते थे। उनका ये था कि सब ज्ञानी बन जायें। एक दिन एक बालक शाम का समय दीपक जलाये हुये घर जा रहा था तो महात्मा बोले-ऐ बेटा ठहरो, ठहरो, जब वह ठहर गया तो फूँक मारी, दिया बुझ गया। सयाना था बालक, उसको समझाना चाहते थे। कहा-बेटा ये तुम्हारा दीपक जो जल रहा था, कहाँ चला गया। बालक थोड़ा रूका और तुरंत अपनी जेब से माचिस निकाली और फिर जला दिया और कहा-महात्मा जी बताओ-कहां से आ गया?अब महात्मा तो बड़े हैरान हो गये। आज तक उनको ये पता न था ये तो पूछते हैं बालक से-कहां चला गया। और ये न बताये पाये कहाँ से आ गया। कहा ये तो हमारा भी गुरू निकला। उस दिन से सबको उपदेश समझाना बंद कर दिया तो एक से एक विचित्र पड़े हैं। कहने का मतलब ये दीपक जो जल रहा था तब तो दिख रहा था कि दीपक है। अब वह बुझ गया तो कहाँ चला गया तो कौन बतावे? बालक ने बता दिया जहाँ से आया था वहीं चला गया और जहाँ चला गया, था वहीं से फिर आ गया। ऐसा ही निराकार और साकार। साकार में ये चेतना ज्योति जल रही है। ये साकार आकार देह का न रहेगा। तब भी चेतना रहेगी। इसीलिये भक्त की सरल परिभाषा है जो साकार में निराकार को देखता है वही भक्त हो पाता है।

अभी तुम साकार मूर्ति में भगवान को देखते हो मूर्ति के बिना भगवान का पता नहीं है तो पत्थर की मूर्ति में तुम भगवान की कल्पना करते हो। ये तुम्हारी देह मूर्ति में जो परमात्मा है उसका होश ही नहीं। यही सत्संग से लाभ होता है कि तुमने अपने मनमानी मंदिर बना लिये वह ठीक है। कहीं तो भगवान को मानना शुरू किया तो भगवान जानता है मुझे अपने में तो ये

पहचानता नहीं, मेरे बिना तो ये कुछ हो सकता नहीं। इसके आकार में मैं ही निराकार विद्यमान हूँ, लेकिन मूढ़ है, जड़ बुद्धि है अब यह मुझे मंदिर में बैठाना चाहता है। मंदिर में प्रतिष्ठा करना चाहता है। भगवान कहते हैं- **''हृदयेषे अर्जुन तिष्ठति''** मैं प्रत्येक हृदय में प्रतिष्ठित हूँ और ये हृदय में प्रतिष्ठित परमात्मा को न जान करके अहंकार अपनी प्रतिष्ठा चाहता है। कितना अंधेर है। भगवान तो कहते हैं मैं प्रतिष्ठित हूँ। प्रतिष्ठित कौन है?- परमात्मा। हम रईस हैं, हम सेठ हैं, हम सास हैं, हम देवरानी हैं, हम जिठानी हैं, हम बड़े हैं-ये प्रतिष्ठा कौन चाहता है, आप लोग प्रतिष्ठा चाहते हो ना। सास बहू से चाहती है, बहू छोटी बहू से चाहती है, पिता पुत्र से चाहता है, -मैं बड़ा हूँ ये छोटा है वहाँ वह प्रतिष्ठित परमात्मा को भूल गया। कितनी छोटी सी बात, अभी तक आप लोग परमात्मा को भूले हो कि नहीं। ईमानदारी से सोच लेना। परमात्मा को भूले हो तो अपनी प्रतिष्ठा चाहते हो और अपनी प्रतिष्ठा चाहते हो तो प्रतिष्ठित परमात्मा को जो हृदय में बैठा है उसे भूलोगे, जैसे बड़ा आदमी कोई तुम्हारे घर में बैठा हो तो उसके सामने तुम कुर्सी में बैठोगे ? कहोगे ये हमसे बड़े हैं। सास बड़ी है, ये जिठानी बड़ी है, पिता बड़े हैं तो बड़े की इज्जत करते हो ना। लेकिन जब तुम अपना नाम चाहते हो, अपना मान चाहते हो, तो तुम्हारे हृदय में जो परमात्मा बैठा है उसकी याद आयी? तो रोज परमात्मा का अनादर हो रहा है कि नहीं? जप करने वाले, कीर्तन करने वाले, पाठ करने वाले, पूजा करने वाले, मंदिर में जाने वाले, रोज परमात्मा का अनादर करते हैं। मैं जरा सा कोई गलत शब्द कह गया बर्दाश्त नहीं होता प्रतिष्ठित परमात्मा का अनादर।

जैसे कोई बड़ा अफसर बैठा हो कोई नौकर चिल्लाने लगे तो क्या दशा होगी? सेवक चिल्लाने लगे, पिता बैठा हो और बहुयें लड़ने लगें तो पिता कहेगा-बड़ी बेइज्जती करते हैं। हम बैठे हैं सामने, जरा सा भी लिहाज नहीं है। जब लिहाज और शरम न रह जायेगी तो चिल्लाना शुरू हो जायेगा कि नहीं। लड़ाई शुरू हो जायेगी कि नहीं। चाहे बड़ा हो चाहे कुछ हो कोई परवाह नहीं। बक रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। हाय-हाय कर रहे हैं। परमात्मा अब कहाँ

गया, उसका पता नहीं। कितना अपमान कर दिया परमात्मा का।

पूजा पाठ करने वाले भगवान का रोज अपमान, कभी-कभी कर देते हैं कि नहीं और कहते हैं हम भगवान को मानते हैं। अगर भगवान को मानते होते तो उनके सामने इतनी बेअदबी करते? सर्वशक्तिमान परमात्मा, ज्ञानस्वरूप परमात्मा, प्रेमस्वरूप परमात्मा, आनंद स्वरूप परमात्मा हृदय में बैठा है और हम तुच्छ सुख के लिए लड़ रहे हैं। जिसने वस्तुयें दी हैं उन वस्तुओं को अपनी मान करके, उन वस्तुओं के पीछे सास-बहू, देवरानी-जेठानी, पिता-पुत्र, लड़ रहे हैं। बताओ ये ईश्वर का मानना है? घर-घर में, सारे संसार में अब यही चल रहा है। इसीलिये सारे संसार में अशांति है। सारा संसार दुःख से घिरा हुआ है। इसीलिये भगवान तो बड़ा निर्णय दे रहे हैं साफ-साफ '' **इच्छा द्वेष समुत्थेन द्वंद्वमोहे न भारत''** -वे दो के बीच में सारा संसार मोहित हो करके खप रहा है, मर रहा है, जल रहा है और ईश्वर को भी मान रहा है। ईश्वर को न मानने वालों को अलग छोड़ो, ईश्वर को मानने वालों की ये दशा है। इसका परिणाम क्या होगा? तुम न मानो ईश्वर का तो कुछ बिगड़ता नहीं, परमात्मा की हानि तो होती नहीं लेकिन अपनी बड़ी हानि है। काहे की हानि है? हमारी शांति खो गयी, आनंद खो गया, निर्भयता खो गयी, गुण खो गये। काहे के पीछे? सांसारिक संपदा के पीछे, छोटी-छोटी वस्तुओं के पीछे, घरेलू सामान के पीछे, क्या खो गया? भगवान से जो दैवी संपदा मिली थी। गीता में- **''दैवी संपदा मोक्षाय''** - जो दैवी संपदा का सहारा लेता है, वह संसार के बंधन से छूट जाता है। देखो एक बात गीता की न मानी, गीता पढ़ते-पढ़ते वर्षों बीत गये। रामायण को पढ़ते-पढ़ते वर्षों बीत गये- ईश्वर अंश जीव अविनाशी। इतना भी नहीं माना कि मैं न किसी का पिता हूँ, न किसी का बेटा हूँ, न किसी का पति हूँ, न किसी की पत्नी हूँ। ये सब देह हैं, देह पिता है, देह पुत्र है, देह पत्नी है, देह को तुम माना करो लेकिन चेतन स्वरूप में मैं किसी का कुछ नहीं। मैं परमात्मा का हूँ। एक मंत्र कोई याद रखे। देह का व्यवहार ऐसे ही चलेगा, संसार के काम ऐसे ही चलेंगे, पारिवारिक मर्यादायें ऐसे ही चलेंगी लेकिन मैं तो परमात्मा का हूँ।

कोई मर रहा है तो मैं मर रहा हूँ? देह विनाशी और मैं अविनाशी । चेतन अमल सहज सुखी राशी, ईश्वर अंश जीव अविनाशी रामायण की एक चौपाई किसी के भीतर नहीं बैठ रही है। आप लोग बैठे हो न जब आपको भय लगता है तब अविनाशी याद आया? जब आपको चिंता होती है तो अविनाशी याद आया? क्रोध आता है तो अविनाशी याद आया? इतना अनादर सत्य का रोज हो रहा है। अब बताइए कौन शांति दे पायेगा? कौन देवता दे पायेगा, कौन महात्मा दे पायेगा और किस कुंभ में जा करके आप शांति का, आनंद का अनुभव कर पाओगे? जब नित्य सबेरे से जगते-जगते पर ब्रह्म परमात्मा की, परमात्मा की शक्ति का, परमात्मा के ज्ञान का, परमात्मा के प्रेम का या परमात्मा से जो कुछ मिला है उसको भूल करके उसका अनादर कर रहे हैं। कर रहे हैं कि नहीं? आज से आदर कर सकते हो लेकिन याद ही न रहेगा। क्यों याद न रहेगी? आदत पड़ी है, क्या आदत पड़ी हुई है? जो आपने दुहराया है। दुहराया कहाँ से है? परमात्मा की शक्ति से ही दुहराया है। अगर शक्ति न हो तो आप शब्द नहीं दोहरा सकते। दुबारा बोल नहीं सकते। शक्ति न हो तो आप मेरा नहीं कह सकते। शक्ति न हो तो ये जो तुम्हें पदार्थ मिले हैं इनको अपना मान करके मोही नहीं बन सकते। परमात्मा के प्रेम को तुमने पदार्थों में लगा दिया। हमने क्या किया अज्ञान में? मिला था परमात्मा से और मान लिया मेरे-मेरे। अनादर हो गया कि नहीं, बेईमानी हो गयी परमात्मा के साथ कि नहीं? परमात्मा तो डंडा मारेगा नहीं। आदमी से घर में बेईमानी हम करेंगे तो हमें मार पड़ेगी लेकिन परमात्मा तो मारने आयेगा नहीं। लेकिन उसका विधान बड़ा कठोर है, वह हमें क्षमा करेगा नहीं। क्यों क्षमा न करेगा? मेरा मानते ही हम बंध गये, बेड़ी पड़ गयी, हथकड़ी पड़ गयी। मेरा घर तो घर से बंध गये, मेरे पति तो पति की देह से बंध गये, मेरी पत्नी तो पत्नी की देह से बंध गये। अब रोना पड़ेगा- हाय मेरी पत्नी न रही, मेरे पति न रहे, मेरा पुत्र न रहा, मेरा धन न रहा, मेरी भूमि न रही, मेरी चप्पल कोई उठा ले गया। चप्पल से बंध गये। कहां तो परमात्मा चप्पल, घड़ी, छाता में सब बंधे हैं। छोटी-छोटी चीजों से बंधे हैं और कहते हैं- हम भगवान का भजन कैसे करें?

हमारी सबकी यही दशा है- अभी तक ये आदत नहीं छूटती है। जो कुछ संसार में संसार के पदार्थ हैं, विनाशी हैं, मैं अविनाशी हूँ। इतना भी याद नहीं आता। मैं अविनाशी हूँ, यह सब विनाशी, अविनाशी में विनाशी को अपने भीतर रख लिया। अविनाशी प्रेम में विनाशी वस्तुओं को स्वीकार कर लिया। सदा रहने वाले अखंड अनंत ज्ञान में और न रहने वाले पदार्थों को भर कर मेरा-मेरा कह रहा है। कितनी जड़ता है? कितनी मूढ़ता है? कितनी मूर्खता है? अब हमें तुम्हें कोई शांति मुक्ति न दे पायेगा। चाहे पूजा करें, चाहे पाठ करें, चाहे भागवत सुनें और चाहे गीता पढ़ें, चाहे रामायण पढ़ें, अभी तक शांति नहीं मिली, जो सुख मिला वह रह न जायगा। जो मिला ही नहीं उसका नाम सुख, जो कहीं गया नहीं उसका नाम शांति है। बताओ इतना भी याद नहीं आता, जो मिला ही नहीं आज तक, जिसके पीछे बचपन से जन्म लेते ही हम भाग रहे हैं।

खिलौने में सुख ढूंढा, फिर पढ़ने में सुख ढूंढा, डिग्री में सुख ढूंढा और फिर पति पत्नी के संयोग में सुख ढूंढा, फिर पुत्र में सुख ढूंढा, फिर धन में सुख ढूँढा, खूब कमाये, कमाते-कमाते बुढ़ापा आ गया और बड़े सुखी लगता है बड़े सुखी हैं। ये बड़े सुखी हैं। इनके बड़ा ऊँचा घर है, बड़ा ऊँचा महल है, इनके पास बड़ी संपत्ति है। अरे! उससे पूछो- कि आज तक तुम्हें सुख प्राप्त हुआ, इतने लोग बैठे हो, बाजपेयी जी तुम्हें सुख प्राप्त हुआ? प्राप्त की परिभाषा यह है कि जो मिल जायेगा उसकी चाह न रहे जैसे आप धोती चाहते हो, धोती मिल गयी। धोती की चाह समाप्त हो जायेगी। लोटा चाहते हो लोटा तुम्हें किसी ने दे दिया, अब नहीं माँगोगे लोटा जब तक खोवे नहीं, जब तक छूटे नहीं। अच्छा अब बताओ सुख मिल गया होता तो सुख की चाह रहती? मिला नहीं बुढ़ापे तक जो भोगते थे, भोगने लायक न रहे, जो पकड़े थे पकड़ने लायक न रहे। जो मेरा कहते थे वह सब छूट गया और भीतर मेरा छूट गया। ये हाय-हाय कर रहे हैं। अब इस अज्ञान को कौन मिटायेगा। गीता कि रामायण? सब पढ़ते हैं सब चल रहा है, समाज में लेकिन न किसी का दुख मिटता है, न किसी का भय मिटता है, न किसी की चिंता मिटती है। खुद

ये शरीर मिटने चला पड़ा है। शरीर मिट रहा है और अहंकार अकड़ रहा है मेरा। पहले जो बचा है उसको मेरा कहता है जो चला गया हाय मेरा चला गया फिर क्या आशा करता है, यह मुझे मिल जाये, तीन बाते हैं, जो नहीं मिला है वह मिल जाये, जो मिला है बच जाये और जो चला गया है फिर आ जाये। इसी द्वंद में हम लोग पड़े हैं और गीता रामायण कहते हैं हम गीता पढ़ते हैं, रामायण पढ़ते हैं, सत्संग करते हैं- पीछे असत् संग चल रहा है। इसी समय, इसी क्षण आप समझ सकते हो इसी समयच। ये कोई कठिन बात नहीं है। आपकी बात कही जा रही है। हम लोग अपनी बात सुन रहे हैं। अपने अज्ञान का सब परिचय प्राप्त कर रहे हैं। अपनी मूढ़ता का पता चल रहा है लेकिन फिर क्या होगा? वही मूढ़ता हमें दुख देगी, वही मूर्खता हमें दुख देगी। वही मेरा-मेरा अभी चलता रहेगा क्यों? हम सावधान नहीं हैं। सुनने के बाद भी हम पहले अज्ञान को, पकड़े हुये को भूलते नहीं हैं। भूलता शब्द हम कह रहे हैं, छोड़ते नहीं हैं। अगर मूढ़तावश तुम घर को मेरा कहो तो क्या घर छोड़ देना है। मेरा छोड़ देना है।

मेरा छोड़ देना है, धन बना रहे। मेरा छोड़ देना है पति का शरीर, पत्नी का शरीर बना रहे। शरीर मेरा नहीं है लेकिन पत्नी, ये भाव जो है वह मेरा बनाया हुआ है। पति का मेरा, पति का शरीर किस का है? बुढ़ापा रोक लो, काले बाल सफेद न होने दो-शरीर मेरा नहीं है, न पति का, न पत्नी का, न पुत्र का, न पिता का। लेकिन मेरा यह भाव तुमने भर लिया है, मेरा-मेरा ये तुम्हारा बनाया हुआ है तो बाहर की चीज सब रहने दो। पति रहने दो, पत्नी रहने दो, पुत्र रहने दो, पिता रहने दो, धन रहने दो, भूमि रहने दो। ये जो मेरा तुमने बेईमानी से स्वीकार कर लिया है, इसको हटा दो। इसका नाम ज्ञान है। क्यों भई, हटाते समय कोई पसीना बहेगा? और जब मन से हटा दिया- मेरा नहीं तो क्या छूट जायेगा?

मेरा नहीं है, ये बात है, ये कुर्सी तो शरीर बैठा है कि नहीं। बस मेरा नहीं है तो हम निश्चिंत हैं और इसमें जो बैठा नहीं, इसको जो पकड़े नहीं, जो मेरा मानता है वह चिंता में बंधा है कि नहीं? इसमें शरीर बैठा है मेरा नहीं

मानता। मुक्त कौन है? ये शरीर और दूर बैठा है इसको अपनी मानता है। बंधा कौन है? ये मेरापन बांधे हुये है,

अब तुम दलील कर सकते हो मेरा न माने, तो पत्नी को मेरी न माने? पुत्र को अपना न माने, पिता को अपना न माने तो सेवा कैसे होगी? कौन किसकी परवाह करेगा? अब तुम तर्क कर सकते हो। अपना न मानोगे तो कौन किसी परवाह करेगा? और मूर्खता हो गयी। अपना मान करके तुम परवाह करते हो ना, तो इतनी सृष्टि की परवाह कौन करता है? अच्छा तुम करो परवाह, मेरा-मेरा तो तुम उस शरीर को सुरक्षित न रख पाये तो पिता-पुत्र और पिता और पति के शरीर को तुम सुरक्षित रख पाओगे? क्या कर पाओगे? तुम कहते हो अपना न मानोगे तो परवाह न रहेगी। हम कहते हैं- क्या परवाह करते हो? कह दो हम भोजन बनाते हैं, खिलाते हैं, पकड़े हैं, घर में तमाम सामान है। हम कहते हैं तुम रक्षा करते हो? ये सब पृथ्वी में सुरक्षित हैं। इतनी सुरक्षित हैं और इतनी असुरक्षित हैं कि तुम लाख कोशिश करोगे, तुम रक्षा न कर पाओगे। अपनी देह तक की तुम रक्षा न कर पाओगे तब तुम दूसरे की देहों की परवाह करते हो।

फिर तुम कहोगे- अच्छा आज से हम बेटे को भोजन न देंगे। हम कहते हैं न देके देखो, जानवर बेचारा नहीं अकड़ता। हम अपने बच्चे को दूध पिलाते हैं और यहां की मां अकड़ती है कि दूध न पिलायें तो बच्चा कैसे? हम कहते हैं तुम पिलाये बिना रहोगी ही नहीं। पहले तो तुमसे रहा ही न जायेगा क्यों? वो जो प्रीति है, वो जो दया है, वो करुणा है, जो ईश्वरीय गुण हैं ये तुमसे सब काम करा रहे हैं, ये सब गुण-दोष के अनुसार संसार में सारे कार्य हो रहे हैं। तुम न करोगे तब भी करना पड़ेगा? फिर हम कहते हैं, घर में तुम 2-4-10 आदमी की परवाह करते हो। तुम कहते हो- मेरा न मानेंगे तो बीमारी में कौन खड़ा होगा। अच्छा डाक्टर के अस्पताल में मरीज जाते हैं कि नहीं? जाते हैं ना। डाक्टर किसी मरीज को अपना मानता है? और सेवा? नर्स और डाक्टर सेवा करते हैं कि नहीं करते? करते हैं ना अपना मानते हैं? कोई मर जाये तो रोते हैं और अच्छा हो जाय तो साल भर बाद उसके घर

जाते हैं? हमीं हैं जो तुमको अच्छा किया। जाता है कोई? हम कहते हैं देखो अपना न मान करके काम चल रहा है कि नहीं।

बैंक का खजांची लाखों रूपये का हिसाब रखता है। अपना मानता है? और हिसाब में कोई गलती करता है? तुम सौं? पाँच 2-4-5 हजार का हिसाब रखते हो। वह तो रोज लाख का हिसाब रखता है लेकिन अपनी मानता है? ये दलील तुम नहीं कर सकते कि अपना न मानोगे तो काम कैसे चलेगा? हम कहते हैं अपना न मानने से सही काम चलेगा। अपना मानने से दरिद्र अहंकार बेचारा बंधा पड़ा है। बन रहा है कि सब काम बिगड़ रहा है। लोभ बढ़ रहा है, मोह बढ़ रहा है कि सब काम बिगड़ रहा है। लोभ बढ़ रहा है, मोह बढ़ रहा है, ये काम बना? तो हमारे भगवान कहते हैं-**" दैवी संपत्ति मोक्षाय"** दैवी संपदा को अपने भीतर बढ़ाओ तो मुक्ति मिल जायेगी। हम सांसारिक संपदा की चिंता करते हैं कि ईश्वरीय संपदा की? इतने लोग बैठे हो, धन की ज्यादा परवाह है, धन बना रहे-ये सांसारिक संपदा है। अच्छा और धन का दान कौन करवाता है, धन करवाता है कि उदारता? उदारता न हो तो कंजूस आदमी दान कर पायेगा? कंजूस आदमी जोड़-जोड़ के रखेगा ओर लोभ ले जायेगा, मरने के बाद, दूसरे जन्म में इसी लोभ को ले करके पैदा होगा। होगा कि नहीं? तो ये सांसारिक संपदा तो हमें लोभी बनाती है और उदारता हमसे दान करवाती है। दो संपदा हुईं। सांसारिक लोभ हुई सांसारिक संपदा। उदारता दैवी संपदा है लोभ सांसारिक संपदा है। ये मोह सांसारिक शरीरों से बढ़ा है और प्रेम ईश्वरीय संपदा है। क्षमा ये ईश्वरीय संपदा है और क्रोध तुम्हारी करतूत है। जितने ईश्वरीय गुण हैं- दया, करुणा, क्षमा, उदारता, नम्रता, सरलता, घृति, विवेक-निष्काम,-ये जितने भी दैवी गुण हैं ये तुम्हें बंधन से छुड़ाते हैं कि बाँधते हैं और ये जितने संसार के गुण हैं- धन, परिवार, शरीर, संपत्ति, बर्तन, कपड़े, घर के तमाम सामान- ये चूल्हा, ये लकड़ी, ये तुम्हें बांधती है कि मुक्त करती है, यह मेरी लकड़ी, यह मेरा चूल्हा अरे तुम हमारी लकड़ी उठाये लिये जा रहे हो। ये मेरा पेड़ तुमने तोड़ डाला। ये पेड़ तुम्हारे हैं? ये बीज तुम्हारे हैं? जिस मिट्टी में पेड़ उगे हैं ये मिट्टी

तुम्हारी है? जिस पानी से पेड़ उगे हैं वह पानी तुम्हारा है? जिस बीज को बोया गया है-वे बीज तुम्हारे हैं ? और जिन हाथों से बीज बोते हैं ये हाथ तुम्हारे हैं? इतने लोग बैठे हो बता दो क्या तुम्हारा है? कुछ नहीं है। मेरा मानलिया है उसके पीछे सारे झगड़े, सारी लड़ाई, सारे ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, कलह, निंदा, घृणा यह सब मेरे के पीछे हैं। मेरे के पीछे और तुम चाहे गीता पढ़ो, चाहे रामायण पढ़ो, चाहे गुरूमंत्र सुनो, चाहे गुरू बन जायें, चाहे चेला बन जायें-ये मेरा न छूटेगा तो हमारा भय, हमारी चिंता, हमारा दुखः कोई नहीं मिटा सकता कि मिटा सकता है? ये चल रहा है? आज की बात आपनेसुनी। हम कहते हैं मिटा के दिखा दो। अच्छा इस मिटाने में क्या मेहनत, कौन सी मेहनत पड़ेगी? मिटाने में, घर बनाने में और घर तोड़ने में मेहनत पड़ेगी। ये मेरा मिटाने में कौन सी ताकत लगेगी। धड़कन बंद हो जायेगी कि दम फूलेगा कि भागना पड़ेगा? मेरा मेरा है मेरा सिर्फ मेरा है। इतना कह दिया कौन सी ताकत लगी और मेरा नहीं है- यह कह दिया-कौन सी ताकत लगी? कितना सरल है बंध जाना और कितनी सरल है मुक्ति। मेरा कहा कि बंध गये और मेरा माना कि बंध गये और-मेरा नहीं है। परमात्मा का है-ऐसा माना कि मुक्त हो गये।क्यों भाई मुक्ति सरल है कि कठिन? जितना बंधन सरल है बंध जाना बहुत सरल है।ताकत भी न लगानी पड़ेगी। मेरा कहा कि बंध गये, प्रभु तुम्हारा कि मुक्त हो गये। हो गये कि नहीं। अब नहाओ? 12 बरस गंगा देखें कैसे मुक्त होते हो? जाओ मंदिरों में रोज फूलमाला चढ़ाओ देखें- कैसे भक्त होते हो? हम प्रभु के हैं इतनी पूरी स्वीकृति कि बंधन मुक्त हो गये।

जैसे अभी सात भाँवरे फिरी हैं ज्यादा मेहनत नहीं की वह तो भाँवरे फिरी। सात भाँवरे सात फेरा, फिरने के पहले मन क्या कहता है कि ये हमारे पति हैं। मन ने मान लिया ना। अब तो पूजा और भाँवरे तो बाद में फेरे जायेंगे। लगन लग गयी पहिले से अमुक जगह लड़का पसंद है लड़की पसंद है दोनों ने देख लिया एक दूसरे को। एक दूसरे के देखने से एक दूसरे के मन में दोनों भर गये कि नहीं। भर गये कि नहीं? कौन सी मेहनत पड़ी भाई? केवल हृदय ने स्वीकार कर लिया ये मेरी पत्नी, ये मेरे पति। स्वीकार कर लिया ना।

कोई मेहनत तो नहीं पड़ी और लड़ाई हुई। बेमना हुआ यानि कुछ न पटी तो पहले के जमाने में तो नहीं आज के जमाने में जरा देर में तलाक दे दिया। कौन सी मेहनत पड़ी। मेरे नहीं, इसमें कौन सी मेहनत पड़ी और मेरे हैं-इसमें कौन सी मेहनत पड़ी? मेरे हैं बंध गये और मेरे नहीं छूट गये। छूट गये ना। इतनी सरल है मुक्ति और इतना सरल है बंधन। सरल है कि कठिन? लेकिन बंधन सरल तो कर लिया और मुक्ति इतनी सरल है वह हम लोग नहीं कर रहे हैं तो हमें कौन छुटायेगा। सब बना रहे और हम ईमानदार धर्मात्मा बन जायें। धर्मात्मा बनने का मतलब संसार में जो मिला है-मैंने बनाया नहीं है-प्रभु की दया से प्रभु की चीजें हैं प्रभु से मिला है बस इतना ही। छोड़े कुछ नहीं, सब प्रभु का है-सब प्रभु का है। हानि हो जाय तो मेरी गांठ का क्या गया? अच्छा हम समझते हैं- मेरा चला गया। जो ले गया लोभी हो गया कि नहीं। अभी तक तुम्हारा था मेरा मानते थे- तुम लोभी थे कि नहीं? अभी तक तुम लोभी थे और दूसरा जो ले गया वह लोभ से छूट जायेगा? छूट पायेगा? अब ये कोई नहीं देखता आप लोग भी नहीं देखते। ये हाय-हाय हमसे कौन करवाता है? लोभ। और जो ले गया वह अभी तक तो लोभी न था अब लोभ से बंध गया कि नहीं? देखो! अब उस पर क्रोध करना चाहिये कि दया? बेचारा वह तो लोभी बना तो पकड़ा गया कि नहीं? अब तुम पुलिस में दे दो तो पुलिस तो बाद में पकड़ेगी और जिसे वह ले गया-आज मुझे डाका में इतना पैसा मिला, डाका में पैसा मिला उसके लोभ ने उसे बांध लिया कि नहीं? कोई नहीं देखता इस ज्ञान में। सारा संसार द्वंद से मोहित है। ऐसी विचित्र लीला है ज्ञान की बड़ा विचित्र दर्शन जिसे देखना कहते हैं। आप कहो- भाई यह बड़ी ऊँची बात है। ऊँची बात है कि आपकी बात है? आसमान की बात है कि तुम्हारे मन की बात है? इसको ऊँची कहकर टालते हैं और कठिन कहकर टालते हैं। ये कठिन है? इतनी सरल बात हमारी समझ में नही आती क्यों? गलत बात समझ ली है और सही बात समझने को तैयार नहीं हैं। है ऐसा कि नहीं। आपने जो समझा है कोई साबित कर दो कि आपकी कौन सी सही बात है? हमारे सामने साबित करना तुम तो वकील हो साबित करो। कौन सी सही

बात है आपकी? जहाँ तुम मेरा कहते हो बताओ ये बेईमानी है कि नहीं? अधर्म है कि नहीं? ये अधर्म-बेईमानी है। तुम साबित कर लो कि ये कोई धर्म है। धर्म तो परमात्मा है और अधर्म सबको धोखा दे धोखा कर रहा है- इसमें आप क्या कर रहे हैं? ये हम लोगों की आदत पड़ गयी है उसको नहीं छोड़ पाते। अच्छा न छोड़ पायें तो कह दो नहीं छोड़ पाते तो इसमें क्या है? आप कहोगे- संसार का काम कैसे चलेगा? संसार तुम चला रहे हो कि अपने आप चल रहा है। संसार का काम तो चलता ही रहेगा। भगवान राम आये, कृष्ण आये, बुद्ध आये और चले गये, बड़े-बड़े संत आये और महात्मा आये और चले गये। कृष्ण चले गये मथुरा वृंदावन वैसी ही बनी है। राम चले गये अयोध्या वैसी ही बनी है और उसमें मुसलमानों ने मस्जिद बना ली फिर हिन्दुओं ने मस्जिद तोड़ दी। अब मुकदमें चल रहे हैं। क्या तमाशा है? मस्जिद, मंदिर के पीछे मुकदमें चल रहे हैं, पहरे लगे हुये हैं-राम मिलें? मस्जिद बन गयी तो खुदा न मिलेगा। मंदिर बना लिया तो राम न मिलेगा। अहंकार अकड़ रहा है कि हमने मस्जिद तोड़ डाली और मंदिर बना लिया। मुसलमान अकड़ता है- हमने मंदिर तोड़ डाले मस्जिद बना ली। ये अहंकार की लीला है।

परमात्मा का जो बनाया हुआ है, दिखाई नहीं देता है। अपने बनाये हुये में सब पागल हैं। ऐसी हमारी लीला है, तो इस अज्ञान को आज ही समाप्त कर सकते हो। लेकिन इतना मोह है- **''द्वंद्वमोहे न भारत''**- भगवान कहते हैं- ये सारा भारत द्वंद्व से मोहित हो रहा है। कौन छुटायेगा? खुद छूटो तो छूटो नहीं कोई छुटायेगा नहीं। भगवान मिलेंगे- दर्शन दे रहे हैं। धृतराष्ट्र भी गीता सुन रहे हैं, अर्जुन भी गीता सुन रहे हैं और संजय भी गीता सुन रहे हैं लेकिन गीता का ज्ञान किसे पचेगा। अर्जुन को या और किसी को? आज भी गीता पढ़ी जा रही है। बरसों से पढ़ी जा रही है लाखों गीता की पुस्तकें हो गयी तो गीता की पुस्तक पढ़ करके कोई ज्ञानी हो पाया? हो सकता है-बहुत सरलता से हो सकता है। कब? भगवान की बात मान लें। पढ़ते तो हैं भगवान की बात पढ़ते हैं, संत की बात मानते किसकी हैं?अपनी-अपने मन

की मन की मानेंगे तो मन क्या है? एक परिभाषा बड़ी छोटी सी है। मन उसे कहते हैं- मन और बुद्धि में फर्क है। मन का संबंध काम से है और बुद्धि का संबंध धर्म से है। बुद्धि में धर्म का ज्ञान उतर सकता है। मन में धर्म नहीं उतरेगा मन तो काम में रहेगा। बुद्धि का शासन होगा तो कामना से हम मुक्त हो जायेंगे, नहीं तो मुक्त भी न हो पायें। मन का संबंध काम से है। मन का स्थान नाभि की ओर नीचे शक्ति का प्रवाह-जैसे पानी डाले पानी ऊपर की ओर चढ़ेगा कि नीचे की ओर बहेगा? नीचे की ओर बहेगा। शक्ति जो परमात्मा की नीचे की ओर बह रही है? नीचे बहते-बहते वही शक्ति काम बन गयी है। और ऊपर उठाओ बांध लगा दो तो शक्ति ऊपर उठना शुरू हो जायेगी और वही शक्ति अधोमुखी नीचे की ओर बह रही है। उसको ऊपर की ओर ले चलो। इसी का नाम संयम है। जप के द्वारा, कीर्तन के द्वारा, संसार का कीर्तन चल रहा है भगवान का कीर्तन करो ताकि थोड़ा भगवान की ओर मन लगे। ये संसार का नाम लेते हो लोटा, थाली, जूता, चप्पल, छड़ी तो, अब भगवान का नाम लो ताकि भगवान से संबंध जुड़े, ये कीर्तन जप- ये सब भगवान से संबंध जोड़ने के लिये हैं, लेकिन केवल कीर्तन से, जप से, मंदिर में पूजा करने से कोई भक्त हो गया हो सो नहीं हुआ। प्रेम से भक्त हुआ है। अगर नाम के प्रति प्रेम न हो तो जपा करो। सरसइया घाट में राम-राम रटने वाले बैठे रहते हैं और कितने आशीर्वाद देते हैं। लड़का हो जाये, नाती हो जाय सब तुम्हारा भला हो जाय, सब अच्छे रहो और अपना-अपना भोग रहे हैं और हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। अच्छे हो जाओ। ये सब क्या है? ये सब खिलवाड़ है, अज्ञान है। ये परमात्मा का नाम जपना, परमात्मा का कीर्तन करना, परमात्मा की मूर्तियों की पूजा करना ये सब ठीक है, गलत नहीं है, क्यों किसी प्रकार परमात्मा से, भगवान से हमारा संबंध जुड़ जाये याद आती रहे। इसलिये नाम जपो। भगवान का नाम लो, भगवान का कीर्तन करो। वकील मुकदमे का कीर्तन करता है कि नहीं? बजाज कपड़े का कीर्तन करता है, कि नहीं, सर्राफ सोने चांदी का कीर्तन करता है कि नहीं? और मोही परिवार का कीर्तन करता है कि नहीं। विनाशी का कीर्तन दिन रात चलता

रहता है। अरे भाई अविनाशी की महिमा गाओ थोड़ी देर शायद उस ओर तुम्हारा कुछ प्रेम मुड़ जाये। इसलिये हमारे संतों ने ये छोटे-छोटे साधन बना दिये हैं। भगवान से संबंध जोड़ने के लिये लेकिन ज्ञान बिना मुक्ति न मिलेगी- मुक्ति न मिलेगी। प्रेम परमात्मा में लौटे बिना भक्ति न मिलेगी, निश्चित है। आज वही हमारी तुम्हारी दशा है। हम लोग पढ़ते भी हैं। कीर्तन जप भी करते हैं। हमारा प्रेम कहाँ फँसा है? पदार्थों में, तो प्रेम फँसा है पदार्थों में, जो संसार से मिले हैं और अब कहते हैं हाय हे भगवान भक्ति दो। भगवान कहाँ से भक्ति देंगे वह तो कहेंगे- बड़ा बेईमान आदमी है हमने जो अभी तक प्रेम दिया वह तो पदार्थों में सब, झटपट, खपा दिया और अब प्रेम माँग रहा है। अभी जो ज्ञान दिया उसमें संसार के विनाशी पदार्थ भर लिये अब ज्ञान माँग रहा है? जो शक्ति दी वह भोग में खर्च कर दी अब प्रार्थना कर रहा है। **''वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्तव्य मार्ग पर डट जायें।''** और जो शक्ति मिली तो काहे के लिये? ऐसे अब सब झूठी प्रार्थनायें भी चलती रहती हैं पूजायें भी झूठी चलती रहती हैं। भगवान को एक इंसान से भी गया बीता समझ करके हम फुसलाते रहते हैं इसलिये-

**गुरू बिन भवनिधि तरै न कोई।**
**जो विरंचि संकर सम होई।।**

बिना गुरू ज्ञान के कोई संसार के बंधनों से मुक्त हो नहीं सकता।

आप लोग तुम्हारा अहंकार अकड़ रहा है। हम मुक्ति प्राप्त करेंगे, भक्ति प्राप्त करेंगे, मंदिर में जा करके, मंदिर बना करके, माला जप करके, अरे बुढ़ाये गये जपते-जपते और ज्ञान बिन मुक्ति मिली, प्रेम को परमात्मा के प्रति लौटाये बिना भक्ति मिली? इतना सरल है। अरे बाबा अपनी गांठ का न कुछ दो। परमात्मा से जो तुमको प्रेम मिला है वह परमात्मा के लिये बचा लो और कहीं न फँसाओ। मेरा न कहो तो देह के संबंधी मेरे होंगे? ये बात आप लोगों को नहीं पचेगी। तुम कहोगे-व्यवहार कैसे चलेगा। जैसे तुम चलाते हो। अरे शरीर को नहीं चला सकते, व्यवहार चलाओगे। शरीर की रक्षा नहीं कर सकते तुम परिवार की रक्षा करोगे? धन की रक्षा करोगे? एक गीत में लिखा

है-

**धन की रक्षा करते -करते, धन के लोभी मर जाते हैं।**
**किन्तु परम प्रभु के प्रेमी, उदार दानी बन तर जाते हैं।।**

तो जैसे-जैसे बुद्धि हमारी तुम्हारी साफ होगी तैसे-तैसे ज्ञानी की बात समझ में आयेगी और नहीं तो दुख हमें चैन न लेने देगा। जहाँ हम सुख के पीछे दौड़ रहे हैं दुख से बच ही नहीं सकते। हम जिस संयोग में सुख मानते हैं वियोग के दुख से बचेंगे? हम जिस लाभ में सुख मानते हैं वह लाभ हमारा रहेगा? जिस जवानी में सुख मानते हैं जवानी ऐसे ही चलती रहेगी? कोई बता दो इतने लोग बैठे हो चलती रहेगी? जिसमें सुख मानते हो कुछ रहेगा? आज हम जिसके पीछे लड़ते हैं।

**"स्वर्ण लाभ लखि परत नहीं, लखत लौह की हानि"**-जो महान लाभ है वह हमें नहीं दिखाई पड़ता। महान लाभ क्या है? दैवी संपदा- हमारे भीतर दया बनी रहे, करुणा बनी रहे, उदारता बनी रहे, सरलता बनी रहे, नम्रता बनी रहे- इसकी तो चिन्ता नहीं है। धन बना रहे, लोटा थाली बनी रहे, चप्पल, जूता, घड़ी, साड़ी बने रहें- इसके पीछे लड़ाई-झगड़े कलह में समय बिता रहे हैं। बताओ क्या होगा? सब उल्टा हो रहा है। हो रहा है कि नहीं? तुम सीधे हो जाओ, हम तुम्हें सीधा कर पायेंगे? हम तुम्हें मुक्ति दे पायेंगे? हम तुम्हें भक्ति दे पायेंगे? संसार का कोई महात्मा भक्ति मुक्ति दे पाया? समझाया- भगवान कृष्ण आये, समझा के चले गये। मानो तो मानो, अभी मानों। कृष्ण सामने नहीं हैं। कृष्ण की बात मान लो। भगवान राम तुम्हारे सामने दर्शन नहीं दे रहे हैं। राम की बात मान लो। तुलसीदास जी तुम्हारे सामने नहीं हैं। तुलसीदास जी की रामायण की बात मान लो। मानो तो तुलसीदास जी तो कह रहे हैं-

**मोह निसा जग सोबनहारा। रामहिं केवल प्रेम पियारा।**
**परहित सरिस धर्म नहिं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।**

कहाँ रामायण का ख्याल आता है। लड़ाई लड़ रहे हैं। दूसरों को

कष्ट पहुँचा रहे हैं। कटु शब्द कह रहे हैं। और कहते हैं- हम भजन करते रहे हैं। क्या भजन है। तमाशा है। अहंकार का खिलवाड़ है। फिर भी ये भगवान की कृपा है कि ये सुन रहे हो। जानते हैं ये इतना गलत है मेरा नाम लेते हुये, मंदिरों में जाते हुये कीर्तन पूजा पाठ करते हुये अहंकार को तृप्त कर रहा है। तो भगवान-

**राम कृपा बिनु सुलभ न सोई। बिनु सत्संग विवेक न होई।।**

आपको कृपा से मिल रहा है। चाहे आज चेतो और चाहे साल भर बाद चेतो और चाहे 20 बरस बाद चेतो चाहे 20 जन्म बाद जागो। परमात्मा का ये संदेश तुम्हारे बीच में बीच-बीच में उतरता रहा है, उतरता रहेगा। तो ये हम अपनी बात नहीं कह रहे हैं। परमात्मा के ज्ञान की बात कह रहे हैं। अब बहुत हो चुका।

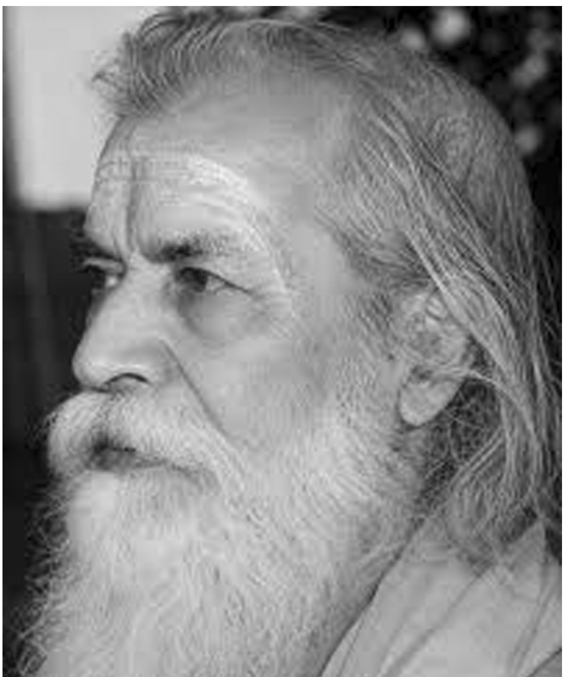

।।ॐ।।

## नमो परमात्मने

# मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से

बड़ा कठिन है परिवार में रह करके ऐसा करना बड़ा कठिन है। संसार में रह करके बड़ा कठिन है। हम कहते है।- हमने परिवार में रहना अभी तक नहीं सीखा है। परिवार में तुम नहीं रहते हो, परिवार को भीतर भरे हुये हो। संसार में तुम ही नहीं रहते हो। संसार को भीतर भरे हुये हो। गृहस्थी में तुम नहीं रहते हो, गृहस्थी तुम्हारे भीतर भरी है। जैसे-नाव में नदी आ जाये तो नाव तैरेगी ? और नदी में नाव रहे तो-तो तुम संसार में हो या संसार तुम्हारे भीतर है। अब कैसे तैरोगे? अब तो डूबोगे। तैरना है तो ऊपर आओ। मरना है तो भीतर भरो। तैरना है तो भीतर न आने दो। भीतर परमात्मा, बाहर ये संसार।

मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से
दुनियावी ज्ञान के गरूर में सब भूले हैं- अहंकार मैं मैं, मेरा मेरा
दुनियावी ज्ञान के गरूर में सब भूले हैं।
कोई होता है निरभिमान बड़ी मुश्किल से।।
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुकिश्ल से।।
जहाँ इंसान में हैवानियत छिपी रहती-मनुष्य की आकृति में पशुता।
जहाँ इंसान में हैवानियत छिपी रहती।
देख पाते कोई विद्वान बड़ी मुश्किल से।।

कभी ईश्वरीय विधान गलत करता नहीं। विधान की बड़ी सरल परिभाषा है- जो हम नहीं चाहते वह आ गया ईश्वरीय विधान से-विरोध मत

करो तो तुम ईश्वर को मानते हो, विरोध करते हो तो चोट खानी पड़ेगी। कुछ कर न पाओगे, बेकार दुख भोगना पड़ेगा।

**कभी ईश्वरीय विधान गलत करता नहीं।**
**मगर होता है इत्मीनान बड़ी मुश्किल में।।**
**मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से।**
**जो कि बलवान रूपवान झूठावान बना।**

वान, कोचवान, गाड़ीवान, मोटरवान तैसे हम धनवान, बलवान, रूपवान, कुलवान, – ऐसा कौन यहाँ है जो रूपवान न बना हो। गाड़ीवान को तो वान कहते हो अपने के वान बने कि नहीं?

**जो कि बलवान रूपवान झूठवान बना।**

**उसे होना है आत्मवान बड़ी मुश्किल से** – देहवान हो तो आत्मवान हो जाओ। आत्मा सत्य है देह झूठी है।

**उसे होना है आत्मवान बड़ी मुश्किल से।।**

**किसी की आत्मा परमात्मा से भिन्न नहीं।** बताओ! इतना सरल शब्द है। आप लोग जाने, हम लोग कितने बहरे हैं। भगवान की बात नहीं सुनते हैं। आत्मा परमात्मा एक है, देह अलग है–देह से कभी एकता न होगी, आत्मा से कभी भिन्नता न होगी।

**किसी की आत्मा परमात्मा से भिन्न नहीं।**
**ज्ञानी कर पाते हैं पहिचान बड़ी मुश्किल से।।**

**किसी भी साधना से चित्त शुद्ध होने पर–** साधना का मतलब परमात्मा की प्राप्ति नहीं–चित्त की शुद्धि है।

**चित्त शुद्ध होने पर** सहज **सुलभ हो जाते हैं भगवान** लेकिन
**बड़ी मुश्किल से।।**

**सुलभ हो जाते हैं भगवान बड़ी मुश्किल से।।**

**सारे बंधन अशांति दुख अहंकार में हैं** और परमात्मा में नहीं हैं।

**सारे बंधन अशांति दुख अहंकार में हैं।**
**मुक्त होता कोई महान बड़ी मुश्किल से।।**
**गलत कर्मों से ही**–मुश्किलें आती कहाँ से हैं ?
**गलत कर्मों से ही हम मुश्किलों में पड़ते हैं।**
**सही कर्मों का होता ज्ञान बड़ी मुश्किल से।।**

**सत्य सर्वत्र है–** यह यहाँ वहाँ कहीं नहीं है। इधर, इसी क्षण हम सत्य में ही हैं, लेकिन देह में डटे पड़े हैं, रूके पड़े हैं, अकड़े पड़े हैं और सत्य को भूले हुये हैं। सत्य को कहीं से आना नहीं है, कहीं गया नहीं है, खोया नहीं है। खोये हैं हम तन में, खो गये धन में, खो गये जाति में, परिवार में खो गये, सास- बहू में खो गये।

**सत्य सर्वत्र सर्वमय उसी में है संसार।**
**पथिक में रहता यही ध्यान बड़ी मुश्किल से।।**
**समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से।।**
**मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से।**

आसान बड़ी मुश्किल से होती है लेकिन शक्ति तो है जो शक्ति हम गलत दिशा में फंसा रहे हैं। सही दिशा में लगा दें सब मुश्किलें आसान हो जायेंगी। अब आज से ऐसे ही करो नहीं तो मर जाओगे क्या फायदा? और तुम न जाओगे ये तुम्हारी देह मरेगी। तुम तो रहोगे ये देखने के लिये हाय जो मैं था नहीं रहा, जो मेरा था वह नहीं रहों यही अफसोस होगा। और जो तुम परमात्मा के हो, सदा रहोगे, बस ये ध्यान में बना रहे, हो गया, न कुछ कहना न कहीं आना न जाना न छोड़ना है न पकड़ना, होश में रहना है। अब आप जा सकते हो। ये पुस्तक जो ले गये हो। बड़े ध्यान से पुस्तक साल भर पढ़ो पांच मिनट रोज। पांच मिनट पढ़ो फिर सोचो क्या पढ़ा, घर में समझाओ–तुम्हारे काबू में बेटा हो, पत्नी हो, पति हो सबको। चाय पीते हो मिल करके झगड़ा करते हो, लड़ाई करते हो सब घर भर इकट्ठा हो जाता है कि नहीं? हैं सास बहू लड़े-बिना बुलाये बच्चे भी इकट्ठा हो जायेंगे

सुनेंगे-कैसे लड़ रही हैं। तो लड़ाई मिल करके करो और सत्संग? अलग-अलग, हे भगवान क्या लीला है? कैसा विचित्र मामला है? कैसी मूढ़ता है? कैसी जड़ता है?

ये संगठन है? ये गृहस्थी है? जानवरों की गृहस्थी अच्छी, लेकिन मानव की गृहस्थी अहंकार के कारण सब तितर-बितर, क्या दुर्दशा हो रही है?लेकिन बड़ी कृपा है जो आप सुन रहे हो। अब अपने ऊपर कृपा करो। ये समझो और समझ करके करो। अगर समझकर करोगे नहीं, तो नासमझों के अनुसार उन्हीं की मान-मान करके हम सब लोग जो मिला है छोड़ते हुये हाय-हाय कहेंगे, वाह-वाह करेंगे, बड़े ध्यान से पांच से दस मिनट रोज पति-पत्नी, पुत्र माता-पिता, सब बिठा लो। एक-दो परिवार, हमें हजारों परिवारों में मिले-रोज सत्संग में बैठते हैं, करते हैं। बड़ा अच्छा है उनके जीवन में संस्कार पड़ रहे हैं। छोटे-छोटे बालकों में। जबरदस्ती मत्था रगड़ाते हो-बाबा को प्रणाम कर लो। अरे बाबा मत्था जबरदस्ती रगड़ाते हो- घर में लड़ते हो तो बुलाते हो- बेटा देखो- हम कैसे लड़ते हैं? बिटिया को बुलाती हो? माँ बुलाती हो देखो- हम पति से और सास से और बहू से कैसे लड़ रहे हैं। बुलाती हो कभी? बिना बुलाये वह सब सीख रहे हैं- कैसे लड़ रहे हैं, कैसे झगड़ रहे हैं, कैसे कटु शब्द कह रहे हैं और मत्था टेकते हो महात्माओं के जबरदस्ती जबकि होश नहीं है और यहाँ बेहोशी में तुम्हारी लड़ाई झगड़ा पकड़ते चले जा रहे हैं।

तुमने लड़ना न सीखा होता हो सुनती हो कि नहीं? लड़ना नसीखा होता तो अब लड़ती? सास अगर मैके से लड़ना सीख न आयी होती बहू अगर अपने माता-पिता से लड़ना-झगड़ना, गाली देना, बकना, चिल्लाना न सीखी होती तो ससुरे में जाकरके कुछ करती? बड़े बढ़िया गुरु हैं तुम्हारे पहले के उनकी बात अभी तक नहीं भूलती। यहाँ गुरु चिल्लाये परेशान हो रहे हैं। तुम ऐसे मजबूत हो, कह दो-बाबा चिल्लाये जाओ हम तुम्हारी मानेंगे नहीं। हम इतना मान चुके हैं। बड़ी लीला विचित्र है। अपने को बदलो, बड़ा

सौभाग्य है। न बदलोगे तो संसार तो तुम्हें बदल ही डालेगा, बदल चुका। संसार ने तुम्हें बदल दिया परमात्मा से अलग कर दिया। अब तुम चाहो तो संसार से बदल जाओ। परमात्मा के हो करके रहो, अविनाशी के होकर रहो कितना सुन्दर जीवन हो सकता है। बस ये तुम्हारी ऊपरी क्रियायें सब चलती रहेंगी।

बाजपेयी जी, इससे अधिक कुछ सुनोगे और हमें वहाँ तमाशा बनाओगे, भागवत में आ जाओ ताकि लोग जाने पथिक जी आ रहे हैं और दो-चार-बीस आदमी इकट्ठा हो जायें। अहंकार तृप्त होगा कि और कुछ? (भगवन, इसके लिये हमने आपसे प्रार्थना नहीं की थी) और काहे के लिये की थी? (उनका भी उपकार होगा) किसका? वह तुम्हारी तरह मूर्ख नहीं है जिन्दा में उपकार उनका कर न पाये शरीर नहीं रहा तो उपकार होगा? कितनी मूढ़ता की बात है? गलत ज्ञान है तुम्हारा, अब तो गलत ज्ञान छोड़ो। तुम्हारा उपकार तो हम कर नहीं पा रहे हैं। जो आत्मा चली गयी स्वर्ग में होगी उसका उपकार हम करेंगे? वह आत्मा स्वर्ग में होगी, वह पापी आत्मा नहीं थी और जहाँ तक जड़ता थी वहाँ तक उनको बंधन है वरना तुम किसी माता-पिता का उपकार कर पाओगे? तुम अपना उपकार कर लो, बड़ी गलत बात है। उनका उपकार तुम न कर पाओगे। तुम अपना हित कर लो, बस बहुत बड़ा काम कर डाला। तुम सचेतन जिन्दा हमारे सामने बैठे हो तो तुम्हारी बुद्धि तो हम बदल नहीं पा रहे हैं। जो एक आत्मा स्वर्ग में बैठी होगी यहाँ सुनने आयेगी वह आशीर्वाद देगी-बेटा हमारे नाम से कुछ कर रहा है चलो अच्छा है और नर्क में होगी तब भी कुछ असर होगा, शायद कुछ उस पर असर हो जाये, लेकिन तुम्हारा सुधार नहीं है तो उसका सुधार क्या होगा। कल्पना है ये। ये तो शुभ कर्म हमारे महात्माओं ने बता दिये हैं इसी बहाने तुम कुछ करो-तुम पर कुछ असर हो जाये। अपना तो कल्याण कर न पाये तुम्हारे द्वारा माता का कल्याण होगा? गलत बात है हमारी बात फिर सोचो। अहंकार तृप्त होता है। हम भागवत सुनते हैं। सुनना जरूर चाहिये ये शुभ कर्म हैं लेकिन शुभ कर्म से अगर ज्ञान न हुआ तो अहंकार ही तृप्त होगा। शुभ कर्म से मुक्ति भक्ति नहीं

मिलेगी। आज जो सुन रहे हो उसी का फल है कि तुम्हारी भावना पवित्र है तो भावना पवित्र होने के कारण भगवान कृपा कर रहे हैं। घर बैठे तुम्हें सत्संग मिल रहा है। वह सात दिन की भागवत तो कहीं होगी आज भागवत का सार हम तुम्हें बता रहे हैं। बता रहे हैं कि नहीं? अगर इसका अनादर कर रहे हो तो भागवत सुना करो उससे तुम्हारा अहंकार ही तृप्त होगा। ये भागवत का सार है पहिले ही मिल रहा है। यह भगवद् कृपा है-इस कृपा का अनुभव करो। तुम्हारा सात दिन में शरीर छूटना नहीं है कि तुम्हारे ऊपर भागवत का असर हो जाय। क्यों किसी का सात दिन में शरीर छूटना है? तो भागवत का असर भी नहीं होना है। परीक्षित तो जानते थे कि सात ही दिन हर गये हैं। एक-एक दिन घट रहा है। पूर्ण वैराग्य था, संसार से कोई संबंध न था तब वह मुक्त हो सके। तुम्हें तो मुक्ति मिलेगी नहीं। भागवत से कि मिलेगी? तुम्हें तो अभी बहुत जीना है। अभी तो बहुत कुछ करना है। अभी तो बहुत भोग बाकी है। ये सब गलत कल्पनायें हैं जो तुम अपनी बुद्धि से धोखा खाते हो। यथार्थ बात जो हमने कही, वह हमने गुरू ज्ञान की बात कही।

आ जायें तो अच्छा हैं, न आवें तो इस चक्कर में पड़े नहीं। आने-जाने से अहंकार तृप्त होगा स्वामीजी आ गये और दस-बीस भक्त आ गये। क्या होगा? इसलिये हम कहते हैं कि अहंकार की तृप्ति करने के सब साधन बन रहे हैं। भगवद् प्राप्ति के नहीं हैं। ये बड़ी कृपा है जो तुम सुन रहे हो।

''**अहंकार विमूढ़ात्मा कर्ताऽहमिति मन्यते**''- भगवान तो कहते हैं जो अपने को कर्ता मानता है वह विमूढ़ है। तुम कहते हो हम भागवत सप्ताह सुनेंगे और सुनायेंगे। इनको बुलायेंगे महात्माओं को बुलायेंगे, यज्ञ करेंगे। बड़े-बड़े यज्ञ हो रहे हैं। पचासों हजारों रूपया खर्च हो जाता है न कोई मुक्ति पा सका, न कोई भक्त हो सका और न ज्ञान प्राप्त कर सका। अहंकार तृप्त हुआ-मैंने यज्ञ कर लिया। ये सब चल रहा है लेकिन ये सुन रहे हो बड़ी यथार्थ बात है। इसका विरोध करो हमारे सामने। हम तो उसका विरोध कर रहे हैं तुम्हारी क्रियाओं का, तुम्हारी कल्पनाओं का लेकिन हमारे कथन का

विरोध करो कोई। करना तो चाहो तो- हमारा उत्तर क्या है। तुम सचेतन जीते जी तुम्हारा कल्याण तो हो नहीं रहा और एक जो शरीर छोड़कर चला गया है आत्मा स्वर्ग में होगी उसका कल्याण तुम करोगे? पहले अपना कल्याण कर लो। हमारे शब्दों से। उसका कल्याण क्या करोगे। कल्पना है हम मान लेते हैं। ऐसी कल्पना में मत पड़ो। मान करके शुभ कर्म करते हो अच्छा है ये, मानो नहीं तो शुभ कर्म भी न करोगे। भागवत का कोई श्लोक, भागवत महात्म्य में सात श्लोक हैं अगर वही समझ में आ जायें तो भक्ति मुक्ति का मार्ग सुलभ हो सकता है।

**देहेऽस्थि मांसरूधिरेऽभिमतिं त्यज त्वं** (भागवत्-महात्मय अध्याय 5/79) देह हाड़मांस की बनी है। इसका अभिमान छोड़ो- प्रथम शब्द हैं भागवत में महात्म्य का। अभी देह का अभिमान कहाँ छूटा तो हमारा तुम्हारा अभिमान तो छूट नहीं रहा है। दूसरों का अभिमान छुटायेंगे, कल्पना है, ऐसी कल्पना में मत पड़ो। शुभ कर्म हैं करो, अपने लिये करो और कोई दूसरा आता है वह भी सुने शायद उस पर असर हो जाय लेकिन तुम किसी को मुक्त न कर पाओगे। तुम किसी को भक्त न बना पाओगे। कोई बन जाये तो बन जाये। हो गया चलो।

**नमो परमात्मने**

दैनिक जागरण 25 सितम्बर 1985

## नमो परमात्मने

## ।।ॐ।।

# श्रद्धा से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है

सहस्त्रों बलवान, धनवान, विद्वान, ऐश्वर्यवान, पदाधिकारी, दानी, गुणों के अभिमानी मनुष्य मिलते हैं परन्तु श्रद्धावान कोई बिरले ही मिलते हैं।

दैवी संपदा के अन्तर्गत श्रद्धा की जाग्रति प्रभु कृपा से ही हुआ करती है। विद्या का संबंध मस्तिष्क से है और श्रद्धा का संबंध हृदय से है।

प्रेम ओर विनय के साथ हृदय पूज्य भावपूर्वक, जब किसी को श्रेष्ठ मानकर झुकता है तब उसकी बुद्धि वृत्ति को श्रद्धा कहते हैं। जिनके प्रति श्रद्धा होती है उन्हें गुरुजन कहते हैं। अहंकार श्रद्धा को लेकर ही गुरुजनों के आगे झुकता है। जो ज्ञान की ही प्राप्ति के लिये निरंतर सावधान हैं, वही गुरू कृपा से ज्ञान लोक में पहुंच पाते हैं।

धनवान पुरुष से धन मिलता है। बलवान व्यक्ति बल द्वारा सहायक होता है। विद्वान के संग से विद्या प्राप्त होती है। उसी प्रकार श्रद्धावान मनुष्य गुरु की उपासना से ज्ञान को प्राप्त होता है।

हमें सावधान किया गया है- कि प्रभु की कृपा से श्रद्धा जाग्रत होने पर तुम ज्ञान की ही पूर्णता प्राप्त करो।

तमोगुणी श्रद्धा, शक्ति प्राप्ति के लिये होती है, रजोगुणी श्रद्धा में भूमि भवन संपत्ति की चाह रहती है। सतोगुणी श्रद्धा में मुक्ति देने वाले ज्ञान की अभिलाषा रहती है।

लोभी मोही अभिमानी सुखासक्त मनुष्य कामना पूर्ति के लिये अनेकों देवी देवताओं में श्रद्धापूर्वक पूजा पाठ करते हैं।

जो अपना उद्धार चाहते हैं जिन्हें कुछ वैराग्य हो रहा है तथा जो संत महात्माओं के निकट श्रद्धा के कारण पहुँच गये हैं, उन्हें सावधान रहकर

विचारपूर्वक श्रद्धा का संबंध मुक्ति, भक्ति, शांति दिखाने वाले ज्ञान से ही जोड़ना चाहिये। श्रद्धा होने पर भी मन श्रद्धास्पद गुरू के रूप से ही अटक जाता है। मन ज्ञान स्वरूप तक नहीं पहुँच पाता।

जिसकी बुद्धि में विचार की शक्ति रहती है वही सदुपदेश द्वारा ज्ञान में जागृत होता है। बुद्धि सूक्ष्मग्राही न होने तक गुरू उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ता। बौद्धिक जड़ता के कारण हजारों श्रद्धालु नर-नारी गुरू ज्ञान में जागृत नहीं हो पाते।

हमें समझाया गया है कि तुम पढ़कर या सुनकर ज्ञानी बनकर अहंकार को संतुष्ट न करते रहो। प्रत्युत तुम उस ज्ञान रूपी दिव्य प्रकाश में प्रज्ञा को जगाओ, जिस प्रज्ञा द्वारा ज्ञान में अहंकार देखा जाता है।

तुम श्रद्धा के द्वारा ही उस ज्ञान में जागृत हो सकते हो जिस ज्ञान से बंधनों का तथा दुःखों का अंत हो जाता है।

यह स्मरण रखना कि सांसारिक ज्ञान के द्वारा धन तथा भोग एवं सम्मान और नश्वर ऐश्वर्य की प्राप्ति हो सकती है, लेकिन दुख की निवृत्ति नहीं हो सकती है।

सत्य की साक्षात् परमात्मा की अनुभूति अथवा परम शांति एवं परमानंद के लिये कहीं बाहर नहीं जाना है स्वयं में ही लौटकर प्रतीक्षा करनी होती है।

प्रतीक्षा के साथ श्रद्धा की दृढ़ता आवश्यक है। जब तक श्रद्धा जागृत नहीं होती तब तक बड़े-बड़े विद्वानों का अहंकार वाद-विवाद शास्त्रार्थ में ही संतुष्ट रहता है। जब कभी ज्ञान प्रकाश में बुद्धि आश्चर्य से चौंधिया जाती है, मौन हो जाती है और अहंकार का मस्तक ज्ञानालोक के आगे झुक जाता है तब श्रद्धा जागृत होती है।

मोह प्रधान व्यक्ति की श्रद्धा श्रद्धास्पद के रूप में अटक जाती है। लोभी व्यक्ति की श्रद्धा शक्ति संपत्ति वैभव ऐश्वर्य में आकर्षित होती है।

धर्मपरायण परमार्थ प्रेमी की श्रद्धा परम प्रभु के ज्ञानस्वरूप, गुण स्वरूप, प्रेम स्वरूप से संबधित करती है।

सर्वोपरि सौन्दर्य, माधुर्य, ऐश्यर्व, निधान भगवान राम या योगेश्वर

कृष्ण के दर्शन करने वाले पुण्यवानों के हृदय में जब तक श्रद्धा जागृत नहीं हुई तब तक भगवान का ज्ञान सुलभ नहीं हो सका।

प्रायः शिक्षित विद्वान भी अपने को देहमय मानकर किसी को सुखद या दुखद मानकर अपने को माता पिता पति पुत्रमय मानकर एवं जातिमय, ऊँच नीच, ज्ञानी, भक्त, धर्मात्मा मानकर नाम रूप में अटके रहते हैं।

तुम रामायण पढ़ते हुये गीता, भागवत पढ़ते हुए, गुरू के साथ रहते हुए भगवान का नाम जपते हुए भी जब तक भगवान के, गुरु के, भागवत के, गीता के रामायण के वचनों के अनुसार नहीं चलते हो अपितु इसके विरुद्ध अखबार की मानते हो तथा मोही, लोभी, अभिमानी, परिवार की मानते हो अर्थात् पत्नी की, पुत्र की मानते हो और सबसे अधिक अपने मन की ही मानते हो, तब तो तुम इन्हीं सबके आधीन रहकर व्यर्थ अनर्थ के पीछे जीवन बिता रहे हो। तुम्हारा विश्वास नित्य प्राप्त सत परमात्मा में नहीं है। विनाशी संसार की देहादिक वस्तुओं में ही है।

यह सद्गुरू सम्मति है कि जब तक तुम जगत में उत्पन्न और विनाश होने वाली वस्तुओं को अपनी मानते रहोगे अथवा प्रारब्धानुसार मिलने वाली वस्तुओं, व्यक्तियों के प्रति आसक्ति ममता करोगे तब तक मोही लोभी अभिमानी कामी बने रहोगे।

यदि तुम विवेक (गुरू विवेक) द्वारा यह जानकर लो कि जगत में देह जन्म के साथ जो कुछ भी मिला है तथा जो कुछ भी अपना प्रतीत होता है यह क्षण-क्षण परिवर्तनशील है, किसी भी वस्तु पर अपना स्वतंत्र अधिकार नहीं है- ऐसा समझ लेने पर तुम विनाश के भय से तथा रक्षा की चिन्ता से मुक्त रहोगे।

अपने को श्रद्धालु शिष्य मानने वालों, सावधान होकर समझो ? यह प्रश्न सभी साधकों से है कि तुम पर संत का प्रभाव अधिक है या असंत का है। प्रपंची भोगीजनों की अनुकूलता का पक्ष लेते हो या परमार्थी, योगी, विरक्त सज्जन के अनुकूलता रहने के लिये सावधान रहना चाहते हो। गुरुजनों की ओर से होने वाली आलोचना की चिन्ता रहती है या अज्ञानी मूढ़ समाज की ओर से निन्दित न होने का प्रयत्न करते हो? लोग क्या कहेंगे यही मय घेरे रहता है। या संत गुरुजन क्या कहेंगे इसकी चिंता होती है।

# कुटी बांदा - 1984

जैसे शरीर अनेक है ना, लेकिन यह ज्ञान देह मय बन गया है अनंत है। कोई कहता है-काला, गोरा, मोटा, दुबला, ब्राह्मण, क्षत्रिय सब तुम्हीं बन गये। ये सर्वमय जो तुम बने हो, किसी मय न हो करके अपने को फिर सोचा जाता है- मैं ब्रह्ममय हूँ मैं परमात्मामय हूँ। परमात्मा अखंड अनंत है, उससे मिल जाओ, उसी मय हो जाओ। देह से मिल जाओगे तो देही बन जाओगे यही अज्ञान है। देह से मिल करके देह को अपने भीतर रख लिया तो देही बन गये। माता-पिता को रख लिया तो तुम पुत्री हो गयीं। पति को रख लिया तो तुम पत्नी हो गये। तुम्हारे ज्ञान में यह सब नाम-रूप मिथ्या भर जाते हैं। उसी का असर पड़ता है। ज्ञान कहता है अपने भीतर कुछ न भरो। अपने को कहीं न रखो, न अपने में कुछ रखो। अपने में कुछ रख लोगे तो लगेगा-मेरा और अपने को कहीं रख दोगे तो लगेगा मैं। देह में अपने को रख लिया, तो मैं बेटा हूँ, अब देखो देह बैठी है लगता है मैं बैठा हूं। देही बन गये। मैं चल रहा हूँ, मैं उठ रहा हूँ, मैं बैठ रहा हूँ और अपने में परिवार रख लिया तो ये मेरे पिता हैं, ये मेरी माता है, मेरा धन है, मेरी भूमि है, ये जो कुछ अपने में रख लोगे, वह तुम्हें अपना मालूम होगा क्योंकि ज्ञान में तुमने रख लिया है। ज्ञान सत्य है, ज्ञान में रखा है, वह सब मिथ्या है। यह है थोड़ी सी बात।

बार-बार यही सोचो-किसकी याद आती है? जिसको ज्ञान में रख लिया है और मैं किससे मिल जाता हूँ। जिसमें मैंने अपने को रख दिया है यह है अज्ञान।

कभी-कभी ध्यान का मतलब सबसे अलग रहकर जिसको अपने में रख लिया है, उसे हटा दें और जिसमें अपने को रख दिया है, उससे हट जाये फिर तुम क्या बचे? तुम शुद्ध ज्ञान स्वरूप चेतन तत्व बचे। बुद्धि में जो यह बैठ जाये तो इससे सब भ्रम का अंत हो जाये, इससे ऊँची साधना

फिर नहीं है। तो पहले श्वांस को देखो, फिर जितना मन शांत होगा, भीतर ध्वनि हो रही है, अनहद। यह ध्वनि हो कान से सुननी चाहिये। कई तरह के नाद होते हैं, वह होते ही रहते हैं। हम बात करें, चलें, हंसें, रोयें, चलते ही रहते हैं। उसके पीछे फिर चेतना है- नाद बिन्दु कलातीत तस्मै श्री गुरवै नमः। गुरुतत्व उसके भी पीछे है। जैसे-जैसे एकाग्रता आयेगी तैसे-तैसे तुम्हारा भीतर प्रवेश होगा। बाहर की साधना में दौड़ भाग होती है। भीतर की साधना में न कहीं आना न जाना, खाली देखते चले जाना। जितना मौन और शांति बढ़ेगी, उतना भीतर तुम घुसोगे। फिर जब बाहर आओगे तब बाहर मालूम पड़ेगा- वासना है, कामना है, इच्छायें हैं-यह सब बाहर हैं-ऐसा देखो। यह सब बाहर प्रकृति में हैं, भीतर जाओ तो वहाँ कुछ नहीं। जैसे समुद्र के भीतर कोई गोता लगाये, जल के भीतर कुछ नहीं, ऊपर-ऊपर लहरें उठ रही हैं, दिखायी पड़ रही हैं। लेकिन भीतर चले जाओ तो कुछ नहीं। ऐसे ही चेतना गहरे उतर जाओ तो अखंड परमात्मा की अनुभूति होती है। बाहर जा जाओ तो संसार की प्रतीति होती है। बस इतना ही फर्क है, बाहर-भीतर का।

ये ध्यान से देखना चाहिये बाहर क्या है? भीतर क्या है? संग में सब चीजें उत्पन्न होती हैं। प्रकृति में सब कुछ छिपा है, चेतना में कुछ नहीं है। चेतना निर्विकार है, आत्मा निर्विकार है, असंग है, कोई विकार नहीं है, कोई वहाँ न कोई सुख है, न दुख है, न जन्म है, न मृत्यु है-ये सब अहंकार में हैं।

अहंकार रूपी घड़े के भीतर सारे प्रभाव हैं। यह भी ध्यान से देखना चाहिये कि क्रोध है, अहंकार के भीतर है, चेतना में क्रोध नहीं है। चेतना के कारण क्रोध की प्रतीति हो रही है। लोभ की प्रतीति हो रही है, चेतना तो निर्विकार है, निरंतर निर्विकार है-ऐसा अनुभव करो। उसके लिये अपना जप का मन हो तो जप किया करो। जप भी अलग-अलग हैं। जो पसंद आवे लेकिन जिसका जप करो, नारायण कहो तो ये नहीं कहो कि कहीं हैं। राम कहो तो यह नहीं कि अयोध्या में हैं। कृष्ण कहो तो यह न

कहो कि मथुरा वृन्दावन में हैं। सबसे पहले चेतन रूप में परमात्मा हमारे साथ है। राम हमारे साथ हैं, राम हमीमय हैं हमीमय।

ये जो हम-हम निकल रहा है राम ही हममय बन गया। राम हममय है। हमारे ही रूप में राम प्रकट हो रहा है। हमारे रूप में कृष्ण प्रकट हो रहा है।

नारायण सच्चिदानंद है- सत-चित-आनंद, सतचित आनंद वही हमारा स्वरूप है।

देह से मिल गये हैं। देहमय बने हुये हैं-यह अज्ञान है। संबंधीमय बने हुये हैं। ये हमारा बनाया हुआ सुख दुख है। इससे अगर सावधान हो सके तो जो होता है वह होने दो। अपने को किसी से न मिलाओ। पीछे अपने को अलग रखो। देह का अभिमान छोड़ो कि मैं देह हूँ। यह हाड़मांस की बनी है। क्योंकि इसमें चेतन है इसलिए सुन्दर मालूम देती है। यह सुन्दरतम उस प्रभु की है। किसी बालक को गोद में खिलाओ तो सुन्दरता जो बाहर चमक रही है ये हाड़मांस की सुन्दरता नहीं है। चेतना का संबंध टूट जायेगा। तो तुम उस बालक को, उस पति को, उस पत्नी को, उस माता को, उस पिता को मिट्टी में दबा दोगे कि नहीं? जला दोगे कि नहीं? अगर ये सुन्दर होता तो क्यों जला दिया जाता? जो कितने साल शरीर सुन्दर मालूम होता है, तुम्हारे शरीर का अगर चेतना से संबंध टूट जाये तो फिर उसको कोई घर में रखेगा? 24 घंटे में दुर्गन्ध आने लगेगी कि नहीं, कि कोई तुम्हें प्यार करेगा? कोई प्यार करेगा देह को? कोई नहीं। प्यार किसको किया जाता है? हाड़मांस को नहीं किया जाता लेकिन लगता है देह बड़ी सुन्दर है। जैसे हाड़मांस बड़े सुन्दर हों। चेतना सौन्दर्यमय है उसी का सौन्दर्य सबमें चमक रहा है। प्यार करो, किसी से मिलो तो ये चेतना का सब चमत्कार है। ये हाड़मांस की सुन्दरता थोड़े ही है।

कितने-कितने बीस बरस, 40 बरस, 50 बरस जो देह सुन्दर मालूम होती है वही थोड़े दिन में 24 घंटे में दुर्गन्ध पैदा हो जायेगी, सड़न

पैदा हो जायेगी। हो जायेगी कि नहीं?

इस देही का गर्व क्या, क्या देह से प्रीति।

बात करत ढह जात है बालू की सी भीति।।

तो देह का गर्व न करना चाहिये। हम बड़े बलवान है।, हम बड़े अच्छे हैं, हम बड़े सुन्दर है।, ये हमारे हाथ है, हमारा मुँह है। ऐं क्यों हमारा-हमारा क्यों जी मेरी देह है, मेरे हाथ हैं।, मेरे मुँह हैं - ऐसा मानती हो कि नहीं? ये तो हमसे बोलती ही नहीं।

ये मेरा कुछ नहीं है, सब प्रकृति का है, मैं तो परमात्मा का चेतन स्वरूप हूँ, निर्विकार हूँ, नित्य मुक्त हूँ, कोई बंधन नहीं है। अहंकार बीच में आ करके सब बन रहा है। यही सुख-दुःख का माँग कर रहा है। ऐसा ज्ञान रखो।

सतर्क रहो बस ज्यादा कुछ करना धरना नहीं है। इस ज्ञान को पकड़ लो तो बस मुक्त ही हो। इस ज्ञान को भूल जाओ तो भगवान भी मिल जायें तब भी तुम्हारे बंधन न छूटेंगे। है ना।

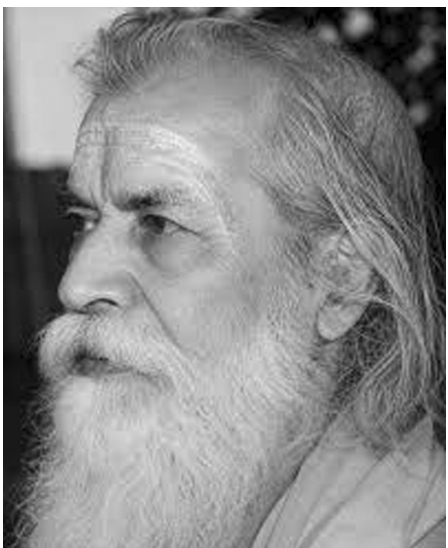

# बहराइच

**निराकार साकार तुम्हीं 'हो', सब कुछ के भंडार तुम्हीं 'हो'**

**जग के मूलाधार तुम्हीं हो, आनंदमय परमात्मन् परमानंदमयं**

**जो खोज से कहीं भी पाये नहीं जाते हैं 2 दूर नहीं**

**वह आप प्रभो भक्तों के भाव में आते हैं, वह आप प्रभो**

**तुम निकट से निकट हो प्राणेश रमें हममें 2 दूर नहीं**

**यह भूल है कि बाहर हम खोज लगाते हैं।**

**जो खोज से कहीं भी पाये नहीं जाते हैं**

कभी जरूरत पड़े परमात्मा की अनुभूति की तो आप लोग आ गये हो, इतना याद रखना कि परमात्मा खोजनेसे नहीं मिलेगा। खोजने से वह मिलेगा जो कोई संसार का पदार्थ होगा। संसार की वस्तु बिना कर्म के नहीं मिलेगी। इसलिये संसार में कुछ चाहना है तो कर्म करो, पुण्य करो, शुभ कर्म करो, दान करो, तप करो, यज्ञ करो, अगर संसार में कुछ चाहते हो तो।

सेवा में जितनी सहनशक्ति आयेगी, जो कामना होगी वह पूरी होगी।

कामनायें जो लाखों की पूरी नहीं होती तुम्हारी हो रही है। जो लाखों को नहीं मिला, आप सब लोगों को सुलभ है। आप लोगों को सब ऐसे ही नहीं मिला है। पुण्य किये हैं तप किया है और दान भी किया है तब कहीं जाकर के मिला है। 6 प्रकार के दान होते हैं।

सही आदमी कभी माँगता नहीं है बिना माँगे मिल जाता है। देने वाला इतना जानकार है, वह जानता है-कब कहाँ किसको, क्या जरूरत है। जो कुछ तुम्हें मिलेगा, कर्म के फल से मिलेगा-यह निश्चित है। घर-परिवार माँगने से नहीं मिले, पुण्य कर्म से मिले। पाप के परिणाम में दुख

नहीं होता, पाप के परिणाम में वह मिलता है जो आप नहीं चाहते। भाग्य से सुख नहीं मिलता, भाग्य से दुख नहीं मिलता। संयोग वियोग सब भाग्य से मिलता है। कभी-कभी वियोग में सुख होता है, बूढ़ा बाप रकम दबाये है। मर जाये तो दुख होगा कि सुख? अच्छा मर गया, अब मनमाना खर्च करेंगे। कभी-कभी वियोग में भी सुख होता है। भयवश संयोग में दुख होता है।

उसको जान लो जिससे तुम सुख-दुःख में सम रह सको।

जन्म मृत्यु, लाभ हानि ये कर्म से मिलते हैं।

मान्यता के मोह में, धर्म के पीछे हमारे देश में, जग में जितनी लड़ाइयाँ हुयी हैं उतनी धन के पीछे नहीं हुयी। नास्तिक कभी लड़ता नहीं पाया जायेगा और आस्तिक मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर गुरुद्वारा में लड़ता है।

**जहाँ काम तहँ राम नहीं, जहाँ राम नहिं काम।**

**तुलसी कैसे रहि सके, रवि रजनी इक ठाम।।**

परमात्मा का जो कुछ है अपने लिए है कि जीवात्मा के लिए। सोचो

**संत सभा झांकी नहीं, किया न हरि गुन गान।**

**नारायण तू कौन विधि, फिर चाहत कल्यान।।**

**निष्फल है मतिमंद को यूँ उपदेश पवित्र।**

**ज्यों अंधे के सामने महामनोहर चित्र।।**

आँखों से दीख रहा है पर विचार करो, विनाशी को विनाशी में देखा कि अविनाशी को विनाशी में देखा। उदाहरण-दर्पण में मुँह देखते हो आँखों से। आँखें जिसके द्वारा देखती हैं, वह है अविनाशी। और जो दर्पण में ही अटके हैं, उन लोगों ने सत्संग में जाकर भगवान की वाणी नहीं सुनी। ज्ञानी संसार में रहते हैं, शरीर में रहते हैं। शरीर संसार में रहते हुये

ये नहीं कहते- मेरा-मेरा, देखते हैं यह देह।

मेरा क्या है जो मैंने नहीं बनाया। परमात्मा ने क्या बनाया है, जो मिला है कोई छीन न पाये वह तुम्हारा, तुम्हारे साथ रह न पाये वह संसार।

**जो खोज से कहीं भी पाये नहीं जाते।**

**वह आप प्रभो भक्तों के भाव में आते हैं।**

**तुम निकट से निकट ही प्राणेश रमें हममें, दूर नहीं।**

**तुम निकट से निकट हो प्राणेश रमें हममें**

**यह मूल है कि बाहर हम खोज लगाते हैं**

**जो खोज से कहीं भी पाये नहीं जाते हैं**

**मेरे लिए सरल हो तुम किस प्रकार कितने।**

सबसे अधिक परमात्मा की प्राप्ति सरल है। सरल इसलिए है कि कहीं जाना नहीं है। सरल इसलिए है कि कुछ करना नहीं है। सरल इसलिए है कि कहीं पकड़ना नहीं है और सरल इसलिए है कि कुछ छोड़ना नहीं है। इतनी सरल प्राप्ति है। केवल परमात्मा की प्राप्ति इतनी सरल है। संसार की प्राप्ति आरंभ से ही बहुत कठिन है, बहुत कठिन है। उसके लिए हम दौड़ रहे हैं और जो सरल है केवल स्मरण से ही प्राप्त दीखता है उसको हम चाहते नहीं।

**मेरे लिए सरल हो तुम किस प्रकार कितने।**

**जैसा कि चाहते हम वैसा तुम्हें पाते हैं।**

**जैसा कि चाहते हम वैसा तुम्हें पाते है।।**

**जो खोज से कहीं भी पाये नहीं जाते हैं।**

**सबके तुम्हीं सुहृद हो जगत आत्मन सभी को**

**ये निराकार तुम हो साकार बनाते हो।**

**सर्वेश मिल गये हो तुम परम सुहृद हमको**

**वह पथिक तो तुम्हीं में आनंद मनाते हैं।**

**जो खोज से कहीं भी पाये नहीं जाते हैं**

**वो आप प्रभो भक्तों के भाव में आते हैं**

**जो खोज से**

**नमो परमात्मन**

'मोक्ष' के चार द्वार हैं, संतोष और सत्संग, बाकी दो की चर्चा फिर करेंगे।

श्रद्धा जागृत हो गयी और अच्छा संग मिला तो श्रद्धा का संबंध ज्ञान से हो जायेगा। श्रद्धा का संबंध ज्ञान से, प्रेम का संबंध परमात्मा से और शक्ति का संबंध सेवा से है।

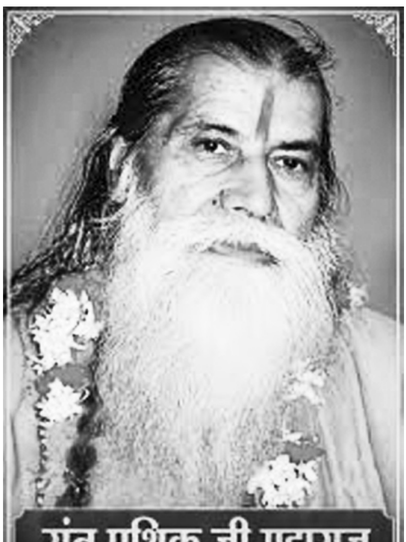

# गुरू सन्देश

(1) सभी कार्य सेवा भाव से करो, सेवा के बदले में कुछ न चाहो।

(2) परमात्मा और जीवात्मा के बीच में मोह का सागर लहरा रहा है। इस सागर को पार कर जाना ही मानव का परम पुरुषार्थ है।

(3) जितना सुख भोगोगे, उतने ही पुण्य कम हो जायेंगे, जितना दुःख प्रसन्नता पूर्वक सह लोगे उतने ही दोष कम हो जायेंगे।

(4) सुख भोग से नवीन संकल्पों की उत्पत्ति होती है।

(5) सुख भोग की रुचि का अन्त हो जाना ही योग है।

(6) जब वैराग्य ढीला पड़ जाता है तब जीवन भोग की ओर गतिशील होने लगता है।

(7) संसार के सुख के पीछे दौड़ना व्यर्थ है, वह न मिला है न मिलेगा।

(8) सद्‌गुरू के समान कोई वैद्य नहीं, अज्ञान के समान कोई रोग नहीं, श्रद्धा के समान कोई अनुपान नहीं, सेवा, त्याग और प्रेम के समान कोई औषधि नहीं ।

(9) गरीबों की मदद करने का यह एक अच्छा विचार है, कि उनकी बनाई हुई वस्तुएं, उचित कीमत देकर खरीद लें। प्रयोग में आने वाली वस्तुएं छोटे

दुकानदारों से खरीदनें से उनकी सहायता होगी, पर यह ध्यान रहे कि उन्हें पैसा कम न दें।

(10) पुण्य की पूंजी बढ़ाने के लिए, दुखियों की, असहाय, वृद्ध, विधवा, विद्यार्थियों, रोगियों, विरक्त महापुरूषों की, मिले हुए शरीर, धन, वस्तु आदि से यथाशक्ति सहायता करते रहो।

(11) अपराधों से बचने के लिए सदा सावधान रहो कि तुम्हारी किसी क्रिया से किसी प्राणी को दुःख न हो।

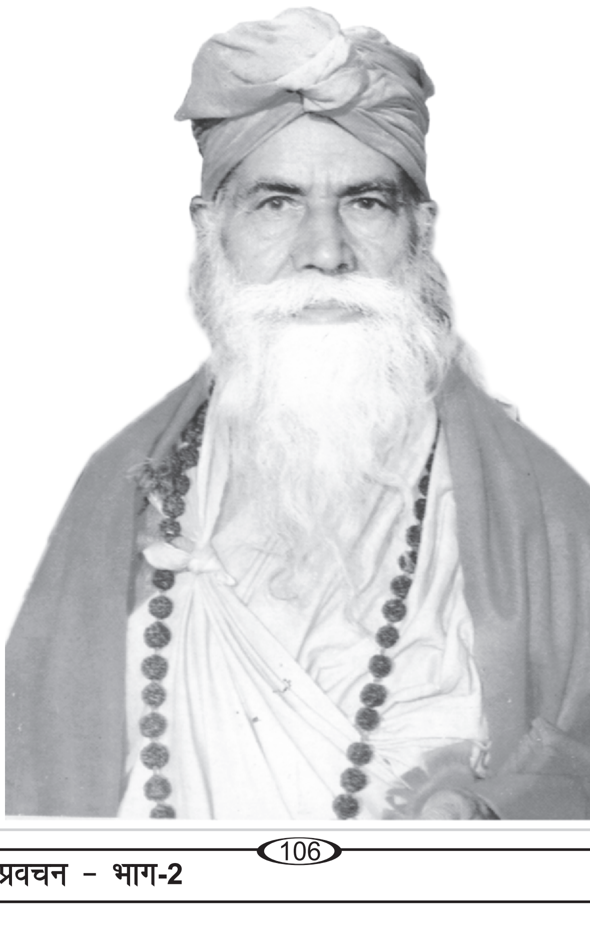

# निष्काम जीवन

चित में यदि चाह न रह जाये। फिर कुछ दुख दाह न रह जाये।।
हम ऐसे हो जायें ज्ञानी फिर रहे न किंचित अभिमानी।
बन जायें सब कुछ के दानी। भव सिन्धु अथाह न रह जाये।।

सब भाँति सदा सन्तोष रहे। मन बुद्धि सदा निर्दोष रहे।
सोहं सत्योहं घोष रहे। कुछ भी परवाह न रह जाये।।
जग के वैभव धन पाने का। शासन अधिकार बढ़ाने का।

फिर किसी ओर भी जाने का। कुछ भी उत्साह न रह जाये।
अपने उर का छलमल धोकर। सब भेदभावना को खोकर।
हम ''पथिक'' रहें तुम मय होकर। दुगर्ति की राह न रह जाये।।

*****

# भगवान तुम्हारे चरणों में

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों मे।
यह विनती है पल-पल छिनछिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझपर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे कष्टों ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

चाहे काँटों में मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में मुझको जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

तुमहीं सब मय यह ज्ञान रहे, मुझमें न कहीं अभिमान रहे।
प्रभु मेरे तुम यह गान रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों मे।
यह विनती है पल-पल छिनछिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

*****

# अपने मन को उन्ही में लगाते चलो।।

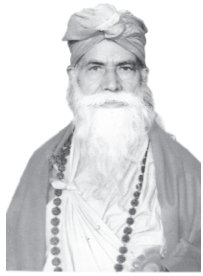

एक ईश्वर के गुणगान गाते चलो।
अपने मन को उन्ही में लगाते चलो।।

जो समय है उसे व्यर्थ खोना नहीं,
मोह निद्रा में जग बीच सोना नहीं।
भाग्यवश कष्ट आये तो रोना नहीं,
भूलसे अब सुखासक्त होना नहीं।
अपने कर्तव्य सारे निभाते चलो।। एक ईश्वर.....

कभी कुविचार अन्तर में लाओ नहीं,
भूलकर भी कुसंगित में जाओ नहीं।।
किसी की वस्तु में मन लुभाओ नहीं,
किसी के चित को तुम दुखाओं नहीं।
मान माया के बन्धन छुड़ाते चलो।। एक ईश्वर.....

पुण्य के लिऐ तुम पूर्ण दानी बनो,
गुरू कृपा के लिऐ निरभिमानी बनो।
भक्ति चाहो तो प्रभु के ही ध्यानी बनो,
मुक्ति के लिऐ सत् तत्वज्ञानी बनो।
त्याग अनुराग उर में बढ़ाते चलो।। एक ईश्वर.....

व्यर्थ चिन्तन से निज चिन्त को मोड़कर
लोभ को सदा के लिऐ छोड़कर।
कामना की कठिन बेड़ियाँ तोड़कर,
परम प्रभु से अहंकार को जोड़ कर।
'पथिक' अपने को प्रभुमय बनाते चलो।। एक ईश्वर....